पूज्य सद्गुरुदेव के आशीर्वाद तले प्रकाशित

नारायण मंत्र साधना विज्ञान

कृपया ध्यान दें

1. यदि आप साधना सामग्री शीघ्र प्राप्त करना चाहते हैं।
2. यदि आप अपना पता या फोन नम्बर बदलवाना चाहते हैं।
3. यदि आप पत्रिका की वार्षिक सदस्यता लेना चाहते हैं।

तो आप निम्न वाट्सअप नम्बर पर मैसेज भेजें।

450 रुपये तक की साधना सामग्री वी.पी.पी से भेज दी जाती है।
परन्तु यदि आप साधना सामग्री स्पीड पोस्ट से शीघ्र प्राप्त करना चाहते हैं तो सामग्री की न्यौछावर राशि में डाकखर्च 100 रुपये जोड़कर निम्न बैंक खाते में जमा करवा दें एवं जमा राशि की रसीद, साधना सामग्री का विवरण एवं अपना पूरा पता, फोन नम्बर के साथ हमें वाट्सअप कर दें तो हम आपको साधना सामग्री स्पीड पोस्ट से भेज देंगे जिससे आपको साधना सामग्री अधिकतम 5 दिनों में प्राप्त हो जायेगी।

बैंक खाते का विवरण

खाते का नाम	: नारायण मंत्र साधना विज्ञान
बैंक का नाम	: स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया
ब्रांच कोड	: SBIN0000659
खाता नम्बर	: 31469672061

मासिक पत्रिका का वार्षिक मेम्बरशिप ऑफर

1 वर्ष सदस्यता 405/-
शिव यंत्र+महाकाल माला
405 + 45 (डाक खर्च) = 450

गणपति यंत्र+मूंगा माला
405 + 45 (डाक खर्च) = 450
1 वर्ष सदस्यता 405/-

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

नारायण मंत्र साधना विज्ञान
गुरुधाम, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज.)
फोन नं. : 0291-2433623, 2432010, 2432209, 7960039

आनो भ्रदा: क्रतवो यन्तु विश्वत:

मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक पत्रिका

|| ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः||

पाप निवृत्ति और ब्रह्मवर्चस्व प्राप्ति हेतु : गायत्री साधना

कष्ट, तनाव, रोग एवं शत्रु से मुक्ति के लिए : महाकाली साधना

स्वयं में सम्मोहन शक्ति जाग्रत करने हेतु : सम्मोहन साधना

प्रेरक संस्थापक
डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली
(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंदजी)

आशीर्वाद
पूजनीया माताजी
(पू. भगवती देवी श्रीमाली)

सम्पादक
श्री अरविन्द श्रीमाली

सह-सम्पादक
राजेश कुमार गुप्ता

सद्गुरुदेव

स्तम्भ

साधनाएँ

ENGLISH

विशेष

महाकाली जयंती

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी

आयुर्वेद

योग
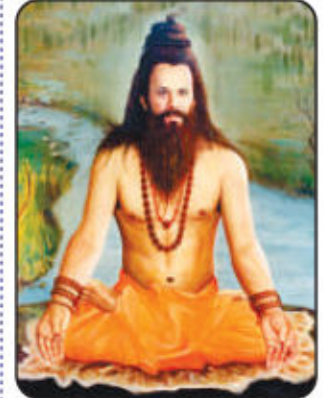
प्रकाशक, स्वामित्व एवं मुद्रक
श्री अरविन्द श्रीमाली
द्वारा
प्रगति प्रिंटर्स
A-15, नारायणा, फेज-1
नई दिल्ली: 110028
से मुद्रित तथा
'नारायण मंत्र साधना विज्ञान'
कार्यालय :
हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर से
प्रकाशित

मूल्य (भारत में)
एक प्रति 40/-
वार्षिक 405/-

सम्पर्क

सिद्धाश्रम, 306 कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली- 011-79675768, 011-79675769, 011-27354368

नारायण मंत्र साधना विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज.), फोन नं. : 0291-2433623, 2432010, 7960039

WWW address : **http:/www.narayanmantrasadhanavigyan.org** E-mail : **nmsv@siddhashram.me**

नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस *'नारायण मंत्र साधना विज्ञान'* पत्रिका में प्रकाशित लेखों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क-कुतर्क करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गल्प समझें। किसी नाम, स्थान या घटना का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई घटना, नाम या तथ्य मिल जायें, तो उसे मात्र संयोग समझें। पत्रिका के लेखक घुमक्कड़ साधु-संत होते हैं, अतः उनके पते आदि के बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना सम्भव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद-विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या सम्पादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी सम्पादक को किसी भी प्रकार का पारिश्रमिक नहीं दिया जाता। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद में जोधपुर न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय से मंगवाने पर हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते हैं, पर फिर भी उसके बाद में, असली या नकली के बारे में अथवा प्रभाव होने या न होने के बारे में हमारी जिम्मेवारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका कार्यालय से मंगवायें। सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद-विवाद मान्य नहीं होगा। पत्रिका का वार्षिक शुल्क वर्तमान में 405/- है, पर यदि किसी विशेष एवं अपरिहार्य कारणों से पत्रिका को त्रैमासिक या बंद करना पड़े, तो जितने भी अंक आपको प्राप्त हो चुके हैं, उसी में वार्षिक सदस्यता अथवा दो वर्ष, तीन वर्ष या पंचवर्षीय सदस्यता को पूर्ण समझें, इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति या आलोचना किसी भी रूप में स्वीकार नहीं होगी। पत्रिका के प्रकाशन अवधि तक ही आजीवन सदस्यता मान्य है। यदि किसी कारणवश पत्रिका का प्रकाशन बन्द करना पड़े तो आजीवन सदस्यता भी उसी दिन पूर्ण मानी जायेगी। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता-असफलता, हानि-लाभ की जिम्मेवारी साधक की स्वयं की होगी तथा साधक कोई भी ऐसी उपासना, जप या मंत्र प्रयोग न करें जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हों। पत्रिका में प्रकाशित लेख योगी या संन्यासियों के विचार मात्र होते हैं, उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है। पाठकों की मांग पर इस अंक में पत्रिका के पिछले लेखों का भी ज्यों का त्यों समावेश किया गया है, जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सकें। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुभवों के आधार पर जो मंत्र, तंत्र या यंत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के इतर हों) बताते हैं, वे ही दे देते हैं, अतः इस सम्बन्ध में आलोचना करना व्यर्थ है। आवरण पृष्ठ पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस सम्बन्ध में सारी जिम्मेवारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर अथवा आर्टिस्ट की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है, कि साधक उससे सम्बन्धित लाभ तुरन्त प्राप्त कर सकें, यह तो धीमी और सतत् प्रक्रिया है, अतः पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में किसी प्रकार की कोई भी आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी। गुरुदेव या पत्रिका परिवार इस सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की जिम्मेवारी वहन नहीं करेंगे।

प्रार्थना

त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव,
त्वमेव सर्वं मम देव देव।।

हे गुरुदेव! आप ही हमारे पिता, माता, बन्धु, सखा, विद्या और धन हैं। सही कहूँ तो आप ही मेरे सर्वस्व हैं।

अभिन्नता

महाकवि कालीदास जब तक भावना विहीन थे तब उन्हें यह भी सुधि नहीं थी कि जिस डाल पर वे बैठे हैं उसे ही काट रहे हैं। किन्तु जब विद्योत्तमा के पवित्र प्रेम ने उन्हें झकझोरा तो कालीदास का सम्पूर्ण अंत:करण अंगड़ाई लेकर जाग उठा और महाकवि के गीतों में भगवती सरस्वती को उतरना पड़ा।

ऐसा कहते हैं कि एक बार विवाद उठ खड़ा हुआ कि कवि दंडी श्रेष्ठ हैं अथवा कालीदास। जब इसका निर्णय न हो सका तब दोनों सरस्वती के पास गये और पूछा—अंबे! अब तुम्हीं निर्णय कर दो कि हम दोनों में से श्रेष्ठ कौन है? भगवती ने मुस्कुराते हुए कहा—'कवि दंडी! कवि तो दंडी ही हैं।'

महाकवि कालीदास ने भगवती के चरणों में अपना सर्वस्व समर्पण किया हुआ था। यह सुनकर वह उदास हो गये और पूछ बैठे—'अंबे! यदि दंडी ही कवि हैं तो फिर मैं क्या हुआ?'

भगवती ने उसी स्नेह से कहा—'तात! त्वं साक्षात सरस्वती। तुम तो साक्षात सरस्वती ही हो। हम दोनों अभिन्न हैं, यह सुनकर कालीदास का मन पश्चात्ताप से भर गया। वह भगवती के चरणों में झुक गये तब उन्होंने जाना कि नि:स्वार्थ प्रेम की गरिमा कितनी महान है। निश्छल प्रेम अंत:करण को जाग्रत कर देता है, तभी अभिन्नता आती है।

गुरु और शिष्य का सम्बन्ध और किस प्रकार शिष्य गुरुत्व में लीन होकर आनन्दपूर्वक जीवन व्यतीत कर सकता है, इसके साथ ही अपने जीवन के प्रत्येक क्षण को आत्मश्चेतना जाग्रत करने में व्यतीत कर पूर्णता प्राप्त कर सकता है, इन्हीं सब विषयों के सम्बन्ध में सद्गुरुदेव की ओजस्वी वाणी में यह महान प्रवचन–

गुरु कुम्हार शिष्य कुंभ है

हमारे इतिहास में शंकरचार्य जैसा संन्यासी व्यक्तित्व नहीं हुआ, केवल 32 साल की अवस्था में उन्होंने चार स्थानों पर मठ स्थापित कर दिए और शंकरभाष्य जैसा ग्रंथ लिखा। गीता को तो फिर भी लोग समझ सके, शंकरभाष्य को आज भी लोग समझ नहीं पाए कि उसमें कितनी गूढ़ विवेचना है, मेरे मन में भी वही छटपटाहट है कि उस शंकरभाष्य को उन्हीं शब्दों में वापस लिखूं सरल भाषा में जो कि शंकराचार्य के मन में कहने की इच्छा थी। जो बात श्रीकृष्ण गीता में कहना चाहते थे, उसका आने वाली पीढ़ी ने अर्थ तो किया, मगर वे मन की बात नहीं समझ पाए। अर्थ एक अलग चीज है, व्यक्ति क्या कहना चाहता है वह एक अलग चीज है।

मन के भावों को शब्द कभी–कभी व्यक्त नहीं कर सकते। जब राम–सीता स्वयंवर में गए, विश्वामित्र और लक्ष्मण के साथ और वाटिका में घूम रहे थे तो सीता तुलसी की पूजा करने आ रही थी और राम ने एक क्षण के लिए सीता को देखा। देखा और तुलसी ने चौपाई में लिखा जिव्हा नैन, नैन बिनु वानी कि जीभ बहुत कुछ कहना चाहती है पर उसके पास आँखें नहीं हैं, वह देख नहीं पा रही बेचारी वह बोल सकती है, पर आँखें नहीं हैं।

और नैन बिन वाणी आँखें बहुत कुछ देख लेती हैं पर उनके पास वाणी नहीं है वह कुछ बता नहीं सकती। ठीक उसी प्रकार से शंकर क्या कहना चाहते थे वह हम समझ नहीं पाए, समझा भी नहीं पाए। शायद कोई क्षण मिले कि शंकरभाष्य का सही चिंतन दे सकूं, गीता का सही चिंतन दे सकूं। मगर वह तो जैसा गुरुदेव चाहेंगे, प्रभु चाहेंगे वैसा ही हो पाएगा।

मगर यह सब ज्ञान राख में बदल नहीं जाए, यह ज्ञान अपने आप में जीवित जाग्रत बन सके। शंकराचार्य केवल 32 साल में मृत्यु को प्राप्त हो गए। 32 साल तो कोई उम्र ही नहीं होती और 32 साल में उन्होंने कितने तनाव, तकलीफें झेलीं और उनकी मृत्यु हुई उनके शिष्य के द्वारा। शिष्य ने ही उन्हें कांच घोट कर पिला दिया और केदारनाथ के पास उनकी मृत्यु हो गई।

और अपने अंतिम समय में शंकर ने कहा–

शिष्य शब्द अपने आप में सबसे तुच्छ और घटिया शब्द बन गया है। अगर शिष्य ही गुरु को मारे तो वह शिष्य है ही नहीं। गुरु को गाली बोलना तो बहुत बड़ी बात है, गाली सोचना भी बहुत बड़ा पाप है और अपने स्वार्थ के लिए पादपद्म जैसे घटिया शिष्य ने शंकर को समाप्त कर दिया। ऐसा अधम शिष्य इस पृथ्वी पर पैदा नहीं हो सकता।

और शंकराचार्य को यह पीड़ा थी कि उन्होंने कहा शिष्य शब्द अपने आप में गाली बन गया है।

मैं शंकराचार्य के शब्दों को सुधारना चाहता हूँ, मैं बताना चाहता हूँ कि शिष्य अपने आप में बड़प्पन का शब्द है,

उच्चता का शब्द है। शिष्य घटिया नहीं है कोई जरूरी नहीं, कि सभी पादपद्म बनेंगे। हो सकता है कि कुछ स्वार्थी तत्व हैं परंतु शंकर के शब्दों से पीड़ा झलक रही है।

जो पीड़ा शंकर लेकर चले गए, जो वेदना लेकर चले गए शायद और दस साल जीवित रहते तो और दो, चार शंकरभाष्य जैसे ग्रंथ लिख देते और उनके होठों पर ये शब्द भी न आते कि शिष्य शब्द घटिया है। मगर इन हजारों सालों तक शिष्य शब्द अधम और घटिया रहा और मैं अपने जीवन में उस शब्द को सुधारना चाहता हूँ कि शिष्य शब्द से उच्च कोटि का कोई शब्द नहीं है। वह आपमें हृदय का बीज है, हृदय का रक्त है। ऐसा ही प्यार आपसे मुझे चाहिए।

आप सोचिए कि अगर आपके शरीर का स्पर्श मेरे शरीर से हो जाता है तो इसलिए नहीं कि मैं बहुत महान व्यक्ति हूँ। मैं तो बहुत सामान्य व्यक्ति हूँ मगर गोविंदपादाचार्य ने शंकराचार्य की मृत्यु के बाद कहा कि वे लोग धन्य हैं जिन्होंने अपने जीवन में शंकराचार्य के चरणों को स्पर्श किया, केवल स्पर्श किया।

गुरु जीवित रहे, पर शंकर की मृत्यु हो गई। गोविन्द पादाचार्य उनके गुरु थे और वे तो वास्तव में ही हजारों हजारों देवताओं से भी अद्वितीय हैं जिनका शरीर शंकराचार्य के शरीर से स्पर्श हुआ होगा, जुड़ा होगा, हृदय की धड़कनें जुड़ी होंगी, प्राणों के स्पंदन जुड़े होंगे, वास्तव में ही उनके जैसा तो व्यक्ति हो ही नहीं सकता। क्योंकि एक लोहा भी पारस से स्पर्श करेगा तो कुंदन बन जाएगा, सोना बन जाएगा। एक लकड़ी का टुकड़ा बबूल भी अगर चंदन से रगड़ खाएगा तो अपने आप में सुगंधयुक्त बन जाएगा।

कभी-कभी यह वेदना होती है कि गुरु बनकर ठीक किया या नहीं किया, क्या मैंने वापस गृहस्थ में आकर उचित किया या नहीं किया, कभी-कभी मानसिक पीड़ा होती है। मगर फिर एक बार मन में सोचता हूँ कि जीवन का यही धर्म है।

मैंने पहले भी कहा था कि ऋषि, मुनि, योगी, यति बेकार हैं जो कंदराओं में जाकर बैठ गए, उनको यहाँ आना चाहिए, आग में जलना चाहिए, तपना चाहिए, खून जलाना चाहिए, मगर इन लोगों को यहाँ ज्ञान देना चाहिए। एकांत में जंगली पशु बैठे ही हैं, आप भी बैठे हैं। उनकी भी जटाएँ बढ़ी हैं, बाल बढ़े हुए हैं, तुम्हारे भी बाल बढ़े हुए हैं। तुमने उच्च कोटि की साधनाएँ कर लीं उनका जीवन में क्या अर्थ है? मैं आवाज दूं तो मुझे इतना विश्वास है कि हजारों, हजारों उठ करके मेरे साथ खड़े हो जाएंगे, हजारों शिष्य खड़े हो जाएंगे, क्योंकि मेरे जीवन में मैंने कोशिश यह की है कि प्यार दूं आपको और मैं कह

रहा हूँ मुझे कोई दक्षिणा नहीं चाहिए। आपसे धन नहीं चाहिए, न धोती चाहिए, न कपड़े चाहिए, न आभूषण चाहिए। केवल प्यार दीजिए मुझे।

क्योंकि उससे अमूल्य कोई चीज नहीं है और मैं आपको साधनाएँ देना चाहता हूँ, उच्च कोटि का व्यक्तित्व बनाना चाहता हूँ और उसके लिए आपका साहचर्य चाहिए, सामीप्यता चाहिए। आपके मेरे बीच में स्वार्थ की और न्यूनता की रेखा खिंच जाएगी तो न मेरा आपसे मिलन हो सकेगा, न मैं आपसे मिल सकूंगा।

होठों पर एक मुस्कान रहेगी, हृदय में एक धड़कन रहेगी कि ये शिष्य मेरे हैं, मेरी आवाज पर ये दौड़े चले आते हैं, बलिदान करने को तैयार हो जाते हैं, अपने आपको समाप्त करने को तैयार हो जाते हैं और सब कुछ देने को तैयार हो जाते हैं। कई बार मैंने अनुभव किया है।

शंकर का स्मरण आया तो ये शब्द निकले मेरे मुंह से, उनसे मिलना होता है सिद्धाश्रम में, उनकी मन की पीड़ा को मैं देखता हूँ, मैं कहता हूँ, यहाँ वापस ग्रंथ लिखिए आपके पास श्रेष्ठ श्लोक हैं।

मगर जो कांटा चुभ गया उनके हृदय में, वह निकल नहीं पा रहा है। हर बार चलते हैं और फिर वह कांटा खटक जाता है–जैसे आपने कोई गाली बोली, आप चले गए मैं चला गया मगर दो महीने बाद भी आपका नाम याद आते ही फिर मन में कसक आती है कि उसने मुझे गाली क्यों दी, क्या हो गया? प्यार क्यों नहीं दिया? और देने वाले प्यार भी देते हैं। नहीं मिलते दो-दो, तीन, तीन महीने मना करने पर नहीं मिलते मगर उनकी आँख में हृदय में, कुछ भी अंतर नहीं आता। यह आपकी मजबूरी है कि आप नहीं मिल पाते। कभी मेरी आज्ञा होती है, आप नहीं मिल पाते, कभी आपकी समस्या होती है आप नहीं मिल पाते। ऐसा होता है जीवन में मैं समझता हूँ। इसका मतलब यह नहीं, हमारे पांव ठिठक जाएं, हमारे हाथ रुक जाएं।

आपका जन्म एक गुरु के लिए हुआ है और मेरा जन्म आपको उस गुरु रूप से भी ऊँचा उठाने के लिए हुआ है। यह मेरे जीवन का कर्तव्य है ऐसा ही होगा, ऐसी ही इच्छा है। आपके और मेरे बीच में समय का अंतराल नहीं आना चाहिए, समय बीच में खड़ा नहीं होता।

अगर समय बीच में खड़ा हो, काल बीच में खड़ा हो जाए तो उसको भी धक्का मारकर हम एक दूसरे से मिल सकते हैं–काल हमारा कुछ बिगाड़ नहीं सकता, समय हमारा कुछ बिगाड़ नहीं सकता।

एक मन में कर्तव्यनिष्ठा, दृढ़निष्ठा हो, संकल्पमस्तु हो, तो ऐसा होगा ही। आगे तो समय आने पर, मगर ऐसा करेंगे हम।

कल रात भी सिद्धाश्रम गया तो शंकराचार्य की व्यथा को देख रहा था। इतने वर्षों के बाद भी उनके मन में एक व्यथा थी।

मैंने उनसे कहा कि आपने जो शब्द शिष्य के लिए कहे मैं उनको पलट करके दिखा देना चाहता हूँ कि शिष्य अपने आप में सब कुछ न्यौछावर कर देने के लिए ही बना है। ऐसा करके मैं दिखा दूंगा।

मैंने उनको आश्वस्त किया है। मैंने आपसे कहा आपके जमाने में अधम शिष्य थे आज भी होंगे। मैं यह नहीं कहता आज जहर नहीं है। इस जमाने में जहर है मगर इस जमाने में अमृत भी है, हो सकता है, 15-20-25 घटिया हों, मगर सैकड़ों शिष्य हैं, जो मेरे पीछे पागल हैं दिवाने हैं, दिवानगी की हद तक हैं। अपने आपको फना करने करने के लिए तैयार हैं, आग में जलने के लिए तैयार हैं, मैंने देखा है, अनुभव किया है, परखा है।

यह मेरा सौभाग्य है, यह आपका सौभाग्य है कि मैं आपके बीच खड़ा हूँ और उन लोगों (देवताओं) और आपके बीच में कड़ी हूँ, आपकी बात उन तक पहुँचाने की क्षमता रखता हूँ और उनकी बात भी आप तक पहुँचाने की क्षमता रखता हूँ। मैं आपको उस जगह पहुँचाना चाहता हूँ कि आप सिद्धाश्रम जा सकें, सूक्ष्म शरीर से वहाँ पहुँच सकें, और देख सकें।

साफल्य रूपं भवतं श्रियंवै, ज्ञातं सदाम पूर्णमदैव तुल्यं
दीर्घो वतां स्थूल तनैव रूपं शिथिर, मदाम व गुरुवै च शब्दं

शंकराचार्य ने इस श्लोक में एक बहुत उच्च कोटि की बात कही है, जिसे समझने की जरूरत है। उसने कहा कि गुरु और सिद्धि या साफल्य सिद्धि-यानि सफलता युक्त सिद्धि दो अलग-अलग चीजें नहीं हैं। जहाँ गुरु हैं वहाँ सिद्धियों में सफलता है, जहाँ सिद्धियों में सफलता है वहाँ गुरु है, इन दोनों में अंतर नहीं किया जा सकता। अंतर तब होता है जब गुरु-शिष्य के बीच में अंतर होता है। और अगर यह अंतर है तो शंकराचार्य कहते हैं कि यह गुरु का कर्तव्य है कि इस अंतर को मिटाए क्योंकि शिष्य को ज्ञात नहीं कि अंतर है कि नहीं और अंतर कैसे मिट सकता है। उसने गुरु पर ही कर्तव्य डाला। उसने गुरु को भी एक लकीर में बांधने की कोशिश की है। केवल शिष्यों पर ही भार नहीं डाला है। यह कहा कि गुरु का धर्म है और अगर वह न्यूनता बरतता है तो... और आज के युग में आपकी साधना में न्यूनता संभव है, मैंने आपसे अभी कहा कि केवल ऐड़ी के बल पर खड़े हों, पंजे के बल पर खड़े हों और अगर आप की ऐड़ी टिकी एक बार या दो बार तो स्वाभाविक है कि यह आपकी न्यूनता है। क्योंकि इस साधना में जरूरी है कि पंजे के बल ही खड़े हों। ऐड़ी ही ऊपर उठ सकेगी, पूरा पैर उठने में तो टाइम लगेगा। मगर ऐड़ी टिकी रही तो आपकी ही यह न्यूनता रही। इस न्यूनता को मैं समझता हूँ, आप मुझसे कहें या नहीं कहें।

शिष्य की गलती नहीं है क्योंकि वह तो एक हाड़-मांस का व्यक्ति है, प्राणतत्व अभी तक नहीं आ पाया है। आ भी नहीं पाएगा एकदम से। उसे सफलता देना गुरु का धर्म और कर्तव्य है कि अंतिम क्षण तक उसको गुरु सफलता प्रदान करे। वह नहीं कहे तो भी करे। थप्पड़ मारकर भी सफलता दिलाए, प्यार करके भी सफलता दिलाए, मगर उसे सफलता दिलाए यह गुरु का धर्म है, यह गुरु का कर्तव्य है।

उसके थप्पड़ मारने में भी एक प्यार होता है, गाली देने में भी एक प्यार होता है, एक मधुरता होती है। उसकी गाली क्रोधयुक्त नहीं होती।

कबीर ने कहा है–

गुरु कुम्हार शिष्य कुंभ है। गढ़ी गढ़ी काढ़े खोट।
भीतर भीतर सहज के बाहर बाहर चोट।

एक छोटी सी सुराही भी होती है उसे बाहर से चोट देता है कुम्हार, मगर अंदर हाथ लगाए रखता है और धीरे-धीरे फिर उसे बना देता है। अंदर से उसे सहेजता है। मैं भी अंदर से सहेजता हूँ, ऊपर से डांटता हूँ, फटकारता हूँ। मगर उसमें भी प्यार है, एक अपनापन है। आपको डांटने-फटकारने में मुझे कोई आनन्द नहीं है। मगर मैं चाहता हूँ आपको सफलता मिले।

कल ही एक प्रसंग में शंकराचार्य कह रहे थे कि शिष्य को मंत्र दें मगर मंत्र देने के बाद भी उनको सफलता नहीं मिलती और नहीं मिलती है, तो वे हताश-निराश हो जाते हैं। गुरु से नहीं कहते हैं कि क्या कही हुई बात गलत है, या मैं गलत हूँ।

वह भ्रमित हो जाता है और गुरु को कह नहीं पाता। कहीं न कहीं कोई मजबूरी होती है कि गुरु को कैसे कहूँ।

मगर गुरु को आगे बढ़कर कहना चाहिए कि तुम्हारे अंदर न्यूनता आ रही है तो उस न्यूनता को सुधारना भी मेरा धर्म है, कर्तव्य है–गुरु के रूप में कर्तव्य है।

किस प्रकार से वह सफलता मिले और मैं लोगों को दिखा सकूँ।

शंकराचार्य कल मुझे बोल रहे थे, उन साधकों को, उन शिष्यों को ऐसा ज्ञान, ऐसी चेतना दें कि उनकी साधना में न्यूनता हो भी तब भी उनको सफलता मिल जाए।

रहे न्यूनता, वह तो रहेगी ही। मगर फिर भी सफलता मिले दोनों में विरोधाभास है। आप मंत्र बोले ठीक से न बोलें

और फिर भी सफलता मिल जाए।

अब विरोधाभास को मिटाने के लिए क्या किया जाएं?

यह एक कठिन क्रिया है। मैं कहूँ कि तुम्हें इस प्रकार से खड़ा होना पड़ेगा और आप 8 माला के बीच ही घुटने टेक कर बैठ जाएं कि छोड़ो 6 माला ही बहुत हैं, आकाश में तो उड़ने से रहे, ये फालतू की बातें हैं। छोड़िए इसे। ऐसे कोई हवा में उड़ सकते हैं, दिमाग खराब है तुम्हारा, फिर हवाई जहाज किस लिए बने। तुम सोचो ऐसा कैसे हो सकता है और तुम हताश निराश होकर रह जाते हो।

हनुमान जी के पास कोई हवाई जहाज तो था नहीं। जब लंका गए तो हवाई जहाज में तो बैठकर गए नहीं। वे तो उड़ कर गए थे। तो वे कैसे चले गए?

या तो पुराण गलत हैं या फिर हम गलत हैं। वायु वेग के माध्यम से भी व्यक्ति गमनशील हो सकता है और होता है। आज से पचास साल पहले ही विशुद्धानन्दजी ने ये क्रियाएं करके दिखाई थीं। परंतु क्रिया करके दिखाई उसके बाद वे बहुत तकलीफ ही पाए। एक मिनट भी चैन से नहीं बैठ सके। घर में जो शिष्य आता वह बार-बार यही कहता कि करके दिखाओ। उन्हें भी लगा कि मैंने यह बहुत गलत कर दिया कि यह प्रेक्टिकल क्रिया करके दिखा दी।

सबसे ज्यादा जरूरी है साधनाएँ प्राप्त करना, परंतु उनसे भी ज्यादा जरूरी है साधना में सफलता प्राप्त करना। आपको सफलता एक नहीं, दो साधनाओं में प्राप्त करनी है। मेरे साथ रहकर आपने कम से कम, पचास, साठ साधनाओं में भाग लिया होगा। आपमें से कुछ साधकों को सफलता मिली, कुछ को नहीं मिल पाई।

तो कल शंकराचार्य के साथ प्रश्न यही उठा था कि क्या कोई ऐसी युक्ति नहीं है कि एक बार के प्रयास में ही उन्हें सफलता दिला दें। उनको एहसास हो जाए, जीवन का एक कर्तव्य, एक धर्म पूरा हो जाए। शंकराचार्य ने कहा ऐसी तो कोई युक्ति है ही नहीं, ऐसी कोई सिद्धि ही नहीं है। ऐसा कोई मंत्र नहीं है।

मैंने कहा आप कुछ हजार वर्ष पहले पैदा हुए, मगर पृथ्वी लोक तो इससे बहुत पहले उत्पन्न हुआ, पच्चीस हजार वर्ष पहले आर्य पैदा हुए। यह मंत्र जरूर है। मैं आपकी बात को काट नहीं रहा हूँ। मगर साधना में सफलता मिले ऐसा मंत्र भी है कि अगर शिष्य में न्यूनता रहे तो न्यूनता रहते हुए भी, पूर्ण बन पाए। ऐसी साधना भी है कि सफलता मिल सके पूर्ण उनको।

मैंने आपको बहुत सी उच्चकोटि की साधनाएँ दीं और आपने बहुत गहराई के साथ प्राप्त की और मुझे विश्वास है कि आप अवश्य उन्हें करेंगे। हो सकता है कक्षा में 50 लड़के बैठे हों, तीस पास हो जाएं और बीस फेल हो जाएं। मगर फेल होने में

उस अध्यापक की भी गलती है, शिष्य की तो गलती है ही।

यही प्रश्न विश्वामित्र के भी सामने उठा था और विश्वामित्र ने कहा कि मेरा एक भी शिष्य साधना में असफल नहीं हो सकता, क्योंकि मैं ब्रह्माण्ड की रश्मियों से उस मंत्र को खींच कर प्रस्तुत कर दूंगा कि सफलता मिले ही।

मंत्र किसी ऋषि ने नहीं बनाए अगर ऋषि ने बनाए होते तो वशिष्ठ उपनिषद होता, विश्वामित्र उपनिषद होता। उपनिषद तो लिखे गए पर उनका ज्ञान, उनके मंत्र ब्रह्माण्ड की रश्मियों से अपने-आप निर्मित हुए और आज भी ब्रह्माण्ड की रश्मियों के माध्यम से निर्मित होते हैं।

तो विश्वामित्र ने उस मंत्र को प्राप्त किया जिस मंत्र के माध्यम से न्यूनता, कमी, अशुद्धता, अशुचिता-अशुचिता का मतलब पवित्रता की न्यूनता होते हुए भी व्यक्ति को साधना में सफलता मिल जाए और विश्वामित्र ने पहली बार उस मंत्र को उजागर किया। उसने शिष्यों को कहा तुम जान-बूझ कर गलती करो मंत्र में और मैं तुम्हें सफलता देता हूँ।

शिष्यों ने कहा ऐसा कैसे हो सकता है? आपने मंत्र दिया हमें तो वह, मंत्र जप करना है। उसने कहा मैं तुम्हें यह एक्सपेरिमेंट करके दिखा देना चाहता हूँ कि मैं वैज्ञानिक भी हूँ। ऋषि हूँ, योगी हूँ, संन्यासी हूँ मगर वैज्ञानिक भी हूँ और यह करके दिखा देना चाहता हूँ। और उन्होंने उन शिष्यों को उस मंत्र के माध्यम से पूर्ण सफलता प्राप्त करके दिखा दी, कि यह मंत्र अपने आप में शिष्यों के लिए वरदान है और इससे उसे साधना में सफलता मिलती ही है। यह मंत्र अपने आप में अद्वितीय है, उच्च कोटि का है, पूरे जीवन को स्वर्णिम बनाने के योग्य है।

मैं आपकी मजबूरी समझता हूँ, समझ रहा हूँ कि साधना करते हैं तो सफलता नहीं मिल पाती मगर नहीं मिलती तो तुम्हारी गलती है ही क्योंकि जहाँ श्रद्धा नहीं है, समर्पण नहीं है, जहाँ आत्मनिवेदन नहीं है वहाँ न्यूनता है।

मगर श्रद्धा-समर्पण होते हुए भी कभी-कभी साधना में सफलता नहीं मिल पाती तो गुरु फिर उस रास्ते को दिखा दे और आपने देखा होगा कि मैं तेजी के साथ उन साधनाओं को देता जा रहा हूँ जो साधनाएँ पहले नहीं दे रहा था क्योंकि बाद में कई प्रकार की और कठिनाइयां पैदा हो सकती है, जैसे शंकराचार्य के सामने पैदा हुई, विशुद्धानन्दजी के सामने पैदा हुई।

विश्वामित्र ने इस प्रकार के मंत्र की रचना की, ब्रह्माण्ड की रश्मियों के माध्यम से कि पिछली जितनी भी साधनाएँ शिष्यों ने की उन साधनाओं में भी शिष्यों को पूर्ण सफलता प्राप्त हो ही जाए। इसमें असंभव या असंदेह कुछ हो ही नहीं सकता। असंभव जैसा शब्द फिर जीवन में नहीं जुड़ सकता, ऐसा मैंने शंकराचार्य से कहा तब शंकराचार्य ने कहा, यह सही है, उन्होंने

ध्यान लगाने के बाद ऐसा अनुभव किया।

और यदि वह मंत्र गुरु ने नहीं दिया तो क्या बाकी सारी साधनाएँ अपने आप में न्यून रह जाएंगी, ये साधनाएँ गलत नहीं हैं, मगर शायद आप इतनी तीव्रता से उन्हें कर नहीं पाए। यदि मैंने कभी आपको कुछ मिनट पंजों के बल खड़ा किया तो उसमें पांच बार आपकी ऐड़ी टिकी, घर में भी टिकेगी और फिर साधना में सफलता नहीं मिलेगी तो क्या मेरा दिया हुआ मंत्र झूठा हो जाएगा। आप कहेंगे कि मंत्र से हुआ ही कुछ नहीं।

इसलिए साधना में पूर्ण सफलता प्राप्त हो उस प्रयोग को सम्पन्न कराना भी गुरु का कर्तव्य है और आपका भी कर्तव्य है कि गुरु के कहे अनुसार आप अपने में पवित्रता लायें विकारों से दूर हों और आज्ञा का पालन करें। सारी साधनाओं का निचोड़ वही है कि गुरु शिष्य को सफलता के लिए वह प्रयोग दे जो विश्वामित्र ने ही पहली और अंतिम बार कराया। उसके बाद ऋषियों को दिया ही नहीं गया। वह साधना गुरु अवश्य संपन्न कराए। सारे प्रयोगों से बढ़कर भी यह प्रयोग है कि इससे पहले आपने जितने भी प्रयोग किए उनमें भी आपको सफलता मिले।

आप मुझे फिर मिलें तो बता सकें कि गुरुदेव इसमें मुझे यह सफलता मिली। ऐसा मैं चाहता हूँ। शिष्य को मैं दिव्य पुरुष बनाना चाहता हूँ, शिष्य नहीं रखना चाहता हूँ। परन्तु इसके लिए आपका भी सफलता के लिए दृढ़ निश्चियी होना आवश्यक है।

मैं शंकराचार्य के समान यह नहीं कहना चाहता हूँ कि शिष्य शब्द निकृष्ट है, मैं कहता हूँ कि शिष्य जैसा उच्च कोटि का कोई शब्द ही नहीं है। अद्वितीय शब्द है और उसे सिद्धि पुरुष बनाना मेरा धर्म, मेरा कर्तव्य, मेरे जीवन का उद्देश्य और लक्ष्य है और विश्वामित्र के इस गोपनीय प्रयोग को मैं देना चाहता हूँ।

मैं नहीं चाहता कोई शिष्य खाली हाथ रहे, दस-पांच साल जुड़ने के बाद फिर इनके मन में संशय जैसा शब्द होने ही नहीं चाहिए। मैं इनको कहता हूँ दिव्य पुरुष बनो। कैसे बनेंगे ये क्योंकि इनकी न्यूनता तो रहेगी, घर में समस्याएँ तो रहेंगी।

उन समस्याओं को मिटाते हुए मैं इनको सिद्धि प्रदान करूँ चाहे महालक्ष्मी साधना हो, चाहे ऐश्वर्य लक्ष्मी साधना हो, चाहे महाकाल साधना, चाहे गुरु हृदयस्थ धारण साधना हो।

यह एक अद्वितीय प्रयोग है या समझिए पूरे जीवन का निचोड़ है जो आपके लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

मैं आपको हृदय से आशीर्वाद देता हूँ कि यह प्रयोग आप गुरु से अवश्य प्राप्त करें और उसमें पूर्णता प्राप्त करें।

आपके शरीर में एक दिव्यता है, एक चेतना है, बस यह है कि उसे जगाया नहीं गया। आपके अंदर साधकत्व है,

प्राणश्चेतना है मगर उसे उत्तेजित नहीं किया गया है और यदि गुरु अपने प्रयास से उसे जगाता है तो आप उसमें निरंतरता नहीं रखते और वह चेतना फिर से सुप्त अवस्था में चली जाती है। फिर भी अनुभव करें कि जब आप गुरु से नहीं जुड़े थे तब और आज के आपके चेहरे में जमीन आसमान का अंतर है, एक प्रसन्नता, एक मुस्कुराहट है, एक छलछलाहट है।

शंकराचार्य का व्यथा से व्यथित होना स्वाभाविक था, मगर मेरे जीवन में ऐसी घटना, कि कोई शिष्य कमजोर निकले या घटिया निकले, मेरे सामने तो पूरे जीवन में ऐसा हुआ नहीं, संन्यास जीवन में तो, हुआ ही नहीं और जो आज से 50-60 साल पहले जुड़े थे, वे आज भी जुड़े हैं।

और गृहस्थ शिष्य भी जुड़े हैं। एक-एक शिष्य ने एक-एक प्रांत को संभाल रखा है, साधना शिविरों के लिए।

ऐसा लगता है उनमें ऐसा जोश है, ऐसी उमंग है, ऐसी चेतना है कि वे कहते हैं कि बस आप हमें आज्ञा दें क्या करना है?

दीक्षाओं और साधनाओं के माध्यम से ही चेतना प्राप्त हो सकती है। विवेकानन्द ने राजयोग दीक्षा के बारे में वर्णन किया है। मगर मैं लकीर पीटने वाला व्यक्ति नहीं हूँ, मैं विवेकानन्द के प्रति विनीत भाव रखता हूँ मगर उनको सही ढंग से राजयोग दीक्षा प्राप्त नहीं हुई थी। रामकृष्ण परमहंस अत्यंत उच्चकोटि के विद्वान थे मगर पूर्ण रूप से कुण्डलिनी जाग्रत हुई नहीं थी उनकी। उनकी तो स्थिति यह थी कि वे कहीं गए और किसी ने बोल दिया काली, तो वे काली बोलते ही बेहोश हो जाते थे, मूर्छा आ जाती थी, मुंह से झाग निकलने लग जाते थे और काली-काली चिल्लाने लग जाते थे।

ये नहीं है कि वे संत नहीं थे, उन जैसा संत नहीं मिल सकता, अगले 200 साल में भी ऐसा संत पैदा नहीं होगा। मगर कुण्डलिनी जागरण अपने आप में एक अलग क्रिया है, सातों चक्र जागृत हो जाना जीवन का उच्च कोटि का पर्याय है। एक जीवन की श्रेष्ठता है।

मैं पूरे ब्रह्माण्ड में घूमने वाला व्यक्ति एक 8 फुट की कार में कैद हो कर रह गया। यह मेरी कोई उन्नति नहीं हुई। संन्यासी कहते हैं यह उन्नति कहाँ से है। एक पर्वत से दूसरे पर्वत पर आप एक सैकण्ड में चले जाते थे, अब आप कार में घूमते हैं, यह कौन सी आपकी विशेषता है?

वह कार क्या काम आएगी, वह कार न तो मेरे साथ जाएगी, न यह मकान जाएगा, न यह घर जाएगा। यह जीवन है ही

नहीं, ठीक है मुझे इस जीवन में इसलिए रहना पड़ रहा है क्योंकि इसके साथ मेरे गृहस्थ शिष्य जुड़े हैं और तुम शिष्यों से, साधकों से और साधिकाओं से कुछ ऐसा जुड़ाव, कुछ ऐसा एटैचमेंट सा बन गया है—या तो मैं बहुत ज्यादा भावुक हूँ, या आपने मुझ पर कुछ कर दिया है कि मंत्रों से, उसे अलग नहीं कर सकता। कोई वशीकरण कर दिया है। कोई तोड़ ही नहीं है मेरे पास। कई बार उस वशीकरण को तोड़ने की कोशिश की कि छोड़ो जब घरबार की चिंता नहीं है तो इनकी चिंता छोड़ो।

मगर आपका वशीकरण प्रयोग बहुत स्ट्रांग है, आप मुझे भी सिखा दें। बहुत कमाल का वशीकरण किया है।

उन संन्यासियों से कहा मैंने कि मेरे शिष्यों की आँखों में आँसू होते हैं, उनका गला रुंध जाता है, वे भाव विह्वल हो जाते हैं और बिना देखे रह नहीं पाते हैं, अपने जीवन को होम कर देते हैं, ठीक है उनकी विवशताएँ हैं, मजबूरियाँ हैं, मैं इस बात को समझता हूँ। गृहस्थ की मजबूरियाँ होती हैं, संन्यास की भी मजबूरियाँ होती हैं मगर संन्यासी मजबूरियों से बंधे नहीं हैं। आप गृहस्थ मजबूरियों से बंधे हैं-यह आपकी कमजोरी है। क्या हो जाएगा अगर आप मजबूरियों को तोड़ दें, क्या हो जाएगा अगर आपके पास कैडिलेक गाड़ी हो, गाड़ी तो गाड़ी है चाहे सीयेलो हो, फोर्ड हो या कैडिलैक गाड़ी हो, मैं तो बैलगाड़ी में भी बैठा था और उसमें भी मुझे एक आनन्द आ रहा था, और आज सीयेलो में बैठता हूँ तो भी आनन्द आता है। यह मेरे जीवन का पर्याय या हेतु है ही नहीं। मुझे कोई होटल में जाने में आनन्द होता ही नहीं, मगर जब साधकों के बीच होता हूँ तो मैं चाहता हूँ कि तीसरा कोई व्यक्ति क्या हवा भी बीच में नहीं आए।

शंकराचार्य की मृत्यु नहीं हुई एक युग की मृत्यु हो गई, यह गोविंदपादाचार्य ने कहा अपने शिष्य के लिए। एक व्यक्ति को नहीं मारा, पूरा एक युग अंधकार से ग्रस्त हो गया, और वास्तव में अंधकार में ग्रस्त हो गया क्योंकि शंकराचार्य के बाद में कोई ज्ञान और चेतना देने वाला नहीं रहा। राजपूत युग आ गया और राग, रंग, भोग, विलास और ऐशो-आराम में लोग डूब गए, मुगलकाल आ गया उसके बाद रक्तपात हुआ और अनेकों हमारे ग्रंथ खत्म हो गए। अंग्रेज आए और सब कुछ अंधकार में ग्रस्त हो गया।

शंकराचार्य के बाद ज्योति बंद हो गई, गोविंदपादाचार्य ने बिल्कुल सही कहा था। उन्होंने कहा यह व्यक्ति की मृत्यु नहीं एक युग की मृत्यु है। और उन्होंने कहा कि जिसने भी शंकराचार्य का चरण स्पर्श किया है, वह अपने आप में उच्च कोटि का व्यक्तित्व बन गया है। हाथ मिलाना, भुजाओं में भर लेना, यह तो शायद कई-कई जन्मों का पुण्य होगा, कि किसी ने

शंकराचार्य को अपने सीने से लगाया होगा, अपनी बांहों में समेटा होगा वह तो जीवन का एक स्वर्णिम प्रभात होगा। और वास्तव में ही मैं गोविंदपादाचार्य के शब्दों को एहसास करता हूँ कि उसकी वाणी में कितनी कातरता होगी, कितना दुःख होगा, कितनी वेदना होगी, कितनी कठिनाई से उस शिष्य को जूझारू बनाया होगा।

मैं तो चाहता हूँ कि आप सब भी उच्च कोटि की सफलता प्राप्त करें, सबके सब सफलता प्राप्त करें क्योंकि कोई बेटा न कपूत होता है न सपूत होता है, उसकी प्रवृत्तियाँ कपूत और सपूत होती हैं। वह अपने-अपने भोग भोगता है, वे शिष्य या तो मुझे सुख देंगे या दुःख देंगे—बीच में कुछ नहीं रह पाएगा।

और दुःख देंगे तो भी मैं मांग लूंगा, क्योंकि दुख तो कई बार भोगा है। मैं जब पैदा हुआ तो दुःख और वेदना मेरे साथ पैदा हुई, अब जो जुड़वे भाई हैं या बहन हैं उन्हें मैं छोड़कर भी कहाँ जाऊंगा। जहाँ भी जाऊंगा कोई न कोई वेदना आएगी, कोई न कोई दुख आएगा, समस्या आएगी। भाई-बहन हैं तो पास में बिठाता हूँ उनको, जहाँ भी जाता हूँ घंटे के बाद कोई नई समस्या आती है।

इस बात की मैं चिंता नहीं करता हूँ और अगर समस्या-बाधा आएगी ही नहीं तो मेरे मनुष्य जीवन की सार्थकता ही क्या है। फिर मनुष्य बना ही क्यों? जीवन में बाधाएं अड़चनें आएं और उनको हम पार करें, समुद्र की लहरें आएं, पचास फुट की और हम उन्हें पार कर सकें यह हमारे जीवन की श्रेष्ठता है, उच्चता है, हमारा साधकत्व है।

मिलने में इतना आनन्द है ही नहीं, विरह में जो आनन्द है वह अलग आनन्द है। एक इंतजार रहता है कि फिर मिलेगा जितने ग्रंथ लिखे गए हैं वे सब विरह में लिखे गए हैं, मिलन का तो कोई ग्रंथ है ही नहीं। मिलन हुआ, आया मिल लिए बस आगे कुछ नहीं। विरह में होता है कि वह आएगा, इधर से आएगा, ऐसा करेंगे, खाना बना देते हैं। विरह में तो सुख ही सुख है, मगर विरह के बाद मिलन भी होना चाहिए। ऐसा नहीं कि जीवन में विरह ही करते रहें आप। वह तुम्हारे लिए नहीं मेरे लिए तकलीफ हो जाएगी। या तो मुझसे प्रेम करना ही नहीं था, मुझसे दूर रहना था, किया तो और नई समस्या मत पैदा कर देना मेरे लिए।

हर एक चेहरा मुझे याद है, मेरी आँखों में प्रत्येक का बिंब है, मेरी आँखों में अगर आप देखें तो प्रत्येक का फोटो उनमें दिखाई देगा आपको।

मैंने राजयोग दीक्षा के बारे में बताया और उससे भी उच्च कोटि की दीक्षा आज तक पिछले 5000 वर्षों में कोई गुरु दे ही नहीं पाया। शंकराचार्य जिंदगीभर तरसते रहे कि मुझे राज्याभिषेक दीक्षा मिले। पर गोविंदपादाचार्य ने कहा यह दीक्षा मैं नहीं दे सकता, क्योंकि मैं अधिकृत नहीं हूँ। आप शंकरभाष्य पढ़ें।

गांधीजी जिंदगीभर भटकते रहें, उन्होंने चाहा कि मेरा सहस्रार जाग्रत हो। उन्होंने अपनी जीवनी में लिखा है कि मैं क्रिया योग दीक्षा लूँ और उसके लिए कई संन्यासियों से गाँधीजी मिले मगर उन्होंने कहा क्रिया योग हम आपको सिखा ही नहीं सकते, हमें आता ही नहीं।

क्रियायोग जैसा ज्ञान और क्रिया योग से भी कई गुना ऊँचा राजयोग यह प्रत्येक के बस की बात नहीं कि राजयोग दीक्षा दे सके। बहुत एकदम से धधकता हुआ शोला होना चाहिए एक साधना की ऊर्जा, एक तपस्या होनी चाहिए तब पूर्ण राजयोग दीक्षा दी जा सकती है।

शंकरभाष्य में लिखा है–

किनियंवदेयं भवतां वदेयं
भाग्यहीनं सहितं सदैव
अज्ञान त्माम गुरुत्माम एव शिष्यं
हत भाग्य मेवं शंकर शंकरं

हे शंकर तुम हत भाग्य हो, तुम्हारा भाग्य ही नहीं, तुम राज्याभिषेक दीक्षा लेना चाहते हो और गुरु ने ही मना कर दिया, गुरु को खुद नहीं प्राप्त है तो वह मुझको कहाँ से देगा? मैं और किस गुरु के पास जाऊं क्योंकि मुझे और कोई गुरु दिखाई नहीं दे रहा है। राजयोग तो मैं समझ लूंगा पर राज्याभिषेक के बिना तो जीवन अधूरा है, अपूर्ण है उस जीवन का फिर मतलब नहीं है।

और उस समय ऐसा गुरु था नहीं जो कह सके कि राज्याभिषेक क्या सम्राटाभिषेक दे सकता हूँ। आज के गुरु तो सम्राटाभिषेक क्या, आकाशाभिषेक दीक्षा भी दे देंगे। मगर वहाँ सत्यता थी। गोविंदपादाचार्य ने कहा–शंकर मैं राज्याभिषेक दीक्षा इसलिए नहीं दे सकता हूँ क्योंकि मुझे खुद को ही नहीं आती। मैं अपनी तपस्या की धधकती आग तुम्हें सौंपूंगा तभी तो हो पाएगा। पूरी ज्वाला सौंपनी पड़ेगी तुम्हें। मैंने तुम्हें राजयोग दीक्षा दी है उससे भी तुम पूरे भारतवर्ष में विजित हो जाओगे।

आप इन दीक्षाओं से, प्रयोगों से वंचित न रह जाएं, गुरु से अवश्य प्राप्त करें।

और इतने सामान्य, सहज रूप में प्रयोगों को प्राप्त कर लेना आपका सौभाग्य है। आप तो केवल भारतवर्ष से परिचित हैं। मैं पूरी पृथ्वी से भी परिचित हूँ, पूरी दुनिया से भी परिचित हूँ, पर पूरी दुनिया से भी ऊपर एक ब्रह्माण्ड है उस ब्रह्माण्ड से भी परिचित हूँ और सारे ब्रह्माण्ड के ऋषि-मुनि, योगी यति कह रहे हैं कि आप जैसा अज्ञानी व्यक्ति पृथ्वी पर पैदा हुआ ही नहीं। अरे आप ये दीक्षाएँ ऐसे कैसे दे रहे हैं?

मैंने कहा-फिर कैसे देनी चाहिए? मैं दे रहा हूँ और सही तरीके से दे रहा हूँ। मैं शिविर लगाता हूँ। मंच लगाता हूँ, खाना खिलाता हूँ, हलवा खिलाता हूँ और दीक्षा देता हूँ।

वे कहते हैं आप जैसा व्यक्ति, सब गड़बड़ है! गड़बड़ हो रही है। हो रही है तो होने दीजिए, वे कुढते रहेंगे, क्योंकि गुफाओं में बैठे हैं, हम मुस्कुराते रहेंगे, क्योंकि हम दीक्षा देते रहेंगे, लेते रहेंगे, वे अपना काम कर रहे हैं, हम अपना काम कर रहे हैं।

और वास्तव में वे धन्य हैं जिन्होंने साधकत्व में अपना नाम लिखाया है क्योंकि मैं उनको बिल्कुल अमूल्य वस्तुएँ देता ही रहूँगा। ये साधनाएँ आपके जीवन की धरोहर होंगी, यह तुम्हें आज अहसास नहीं हो रहा है यह तो आने वाले समय में तुम समझ सकोगे, अहसास कर सकोगे। आने वाले वर्षों में तुम उच्चता एवं दिव्यता प्राप्त कर सको। ऐसा ही आपको आशीर्वाद देता हूँ।

-पूज्यपाद सद्गुरुदेव डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली जी
(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी)

'नारायण मंत्र साधना विज्ञान'

पत्रिका आपके परिवार का अभिन्न अंग है। इसके साधनात्मक सत्य को समाज के सभी स्तरों में समान रूप से स्वीकार किया गया है, क्योंकि इसमें प्रत्येक वर्ग की समस्याओं का हल सरल और सहज रूप में संग्रहित है।

नारायण मंत्र साधना विज्ञान

मासिक पत्रिका का वार्षिक मेम्बरशिप ऑफर

405/-

जब राहु को अपने अनुकूल बना लिया है तो फिर क्यों घबराते हैं जीवन की उन विपरीत स्थितियों में, क्योंकि राहु प्रदान करता है हिम्मत, साहस, शौर्य, वाहन सुख, शक्ति और राहु समाप्त करता है दुःख, चिंता, दुर्भाग्य और संकट तब आप कीजिये विधिवत मंत्र जप और साधना

साधना विधान

किसी भी मंगलवार अथवा शनिवार की रात्रि से शुरु किया जा सकता है। रात्रि में स्नान आदि करके शुद्ध वस्त्र पहन लें। पश्चिम की ओर मुख करके लाल आसन पर बैठें। सामने चौकी पर लाल आसन बिछा दें। आसन पर गुरु चित्र स्थापित कर, गुरु से साधना की पूर्णता के लिये आशीर्वाद प्राप्त कर लें। अब साधक अगरबत्ती और तेल का दीपक जला लें, दीपक को अपनी बायें ओर रखें। सामने चौकी पर बिछे हुए वस्त्र पर साबुत काली उड़द से राहू ग्रह का **चिन्ह U** (अंग्रेजी वर्णमाला के यू अक्षर के समान) बनाकर, उस पर **राहु यंत्र** स्थापित करें। यंत्र के ऊपर ही **'शत्रुमर्दिनी गुटिका'** स्थापित करें। इसके पश्चात् साधक दाहिने हाथ में पवित्र जल लेकर विनियोग करे -

विनियोग

ॐ अस्य श्री राहु मंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः पंक्ति छन्दः राहु देवता, रां बीजं, भ्रां शक्तिः श्री राहु प्रीत्यर्थे जपे विनियोग :।

विनियोग के पश्चात् राहु देवता का ध्यान करें -

ध्यान

वन्दे राहुं धूम्र वर्णं अर्धकायं कृतांजलिं, विकृतास्यं रक्त नेत्रं धूम्रालंकार मन्वहम्।

इसके बाद यंत्र का कुंकुम, अक्षत, धूप, दीप और पुष्प से पंचोपचार पूजन करें, फिर साधक 30 मिनट तक राहु मंत्र का जप करें -

ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौ सः राहवे नमः।।

यह साधना सात दिन तक सम्पन्न करनी है। सात दिन के बाद 'शत्रु मर्दिनी गुटिका' को धारण कर लें और यंत्र को किसी निर्जल स्थान पर रात्रि में डाल दें।

यह दुर्लभ उपहार तो आप पत्रिका का वार्षिक सदस्य अपने किसी मित्र, रिश्तेदार या स्वजन को भी बनाकर प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप पत्रिका-सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं भी सदस्य बनकर यह उपहार प्राप्त कर सकते हैं।

वार्षिक सदस्यता शुल्क - 405/- + 45/- डाक खर्च = 450/- Annual Subscription 405/- + 45/- postage = 450/-

भुवनेश्वरी जयंती-17.9.21 卐

आप इक्कीस दिनों में सफलता के सर्वोच्च शिखर पर पहुंच सकते हैं

भुवनेश्वरी साधना

देवी भागवत में वर्णित देवी का शक्ति स्वरूप तथा महालक्ष्मी स्वरूप का समन्वित रूप है 'ह्रीं' ब्रीज।

भुवनेश्वरी साधना का अर्थ है–
साधक समस्त प्रकार की भौतिक सम्पदाओं को प्राप्त करता हुआ साधना के उस उच्चतम सोपान को प्राप्त करे, जहां साधक कालपुरुष बन जाता है।

भगवती भुवनेश्वरी को अनेक स्वरूपों में सम्बोधित किया गया है, प्रत्येक स्वरूप साधक के लिए नवीन चिन्तन युक्त है। विश्वोत्पत्ति के पश्चात् जब वह शक्ति त्रिभुवन का सञ्चालन करती है, तो उसे 'भुवनेश्वरी' के रूप में सम्बोधित किया गया।

गुरु और शिष्य का सम्बन्ध विश्वास युक्त है, प्रेमयुक्त है, समर्पण युक्त है। शिष्य जिस लक्ष्य को प्राप्त करना चाहता है, गुरु अपनी कृपा से हर क्षण उसे उस लक्ष्य की ओर अग्रसर करते रहते हैं।

पर इन सबके अतिरिक्त शिष्य की सामर्थ्य के अनुसार ही उसकी पात्रता व श्रेष्ठता से साक्षात्कार करवाते हैं और शिष्य जब गुरु की कसौटी पर खरा उतरने लगता है तथा गुरु को विश्वास हो जाता है, कि यह दुर्लभ, दुर्बोध विधियों व साधनाओं को सहेज कर रख सकेगा, उसका दुरुपयोग नहीं करेगा, तो गुरु उसे अन्य छोटी-छोटी साधनाओं को क्षणमात्र में दे देते हैं, फिर उसे दस महाविद्या साधना की ओर अग्रसर करते हैं।

आगम शास्त्र में व्यक्त रूप से तंत्र विद्या दस महाविद्या के रूप में प्रत्यक्ष होती है, जो भगवती पराम्बा के ही अभिन्न स्वरूप हैं। दस महाविद्या की साधना सम्पन्न करने की योग्यता से युक्त होता साधक जब अपने गुरु से क्रमशः इन साधनाओं के गूढ़ रहस्यों को प्राप्त करता है, तो यह क्रिया साधना के क्षेत्र में उच्चता के विभिन्न सोपानों पर अग्रसर होने की क्रिया होती है। गुरु इन साधनाओं द्वारा उसे अध्यात्म के क्षेत्र में ही उच्चता की ओर अग्रसर नहीं करते अपितु भौतिक जगत के भी समस्त पदार्थों का अधिकारी बना देते हैं।

दस महाविद्या साधना क्रम में 'भुवनेश्वरी साधना' भी एक ऐसी ही अद्वितीय साधना है, जो शिष्य को गुरु की कृपावश प्राप्त होती है तथा जिसे सम्पन्न कर वह विश्व का सर्वश्रेष्ठ व्यक्तित्व बनने की योग्यता प्राप्त करने की क्रिया में संलग्न हो जाता है।

सांदीपन ऋषि ने भी कृष्ण को जब विश्व का अद्वितीय और श्रेष्ठतम व्यक्तित्व बनाने की क्रिया आरम्भ की तो उन्हें भुवनेश्वरी साधना भी सम्पन्न करवाई थी। भुवनेश्वरी साधना सम्पन्न करने के बाद साधक में समस्त चर-अचर को सम्मोहित करने की क्षमता आ जाती है, उसके समक्ष समस्त प्राणियों की वाणी स्तम्भित हो जाती है तथा इस प्रकार निर्बल शक्तिहीन व्यक्ति भी शक्ति सम्पन्न बन जाता है, क्योंकि भगवती भुवनेश्वरी साधना को सिद्ध करने के पश्चात् साधक के लिए वशीकरण, सम्मोहन, सौभाग्य लाभ तथा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करना कोई कठिन कार्य नहीं होता।

'भुवनेश्वरी' महाविद्याओं में चतुर्थ शक्ति के रूप में स्थित हैं। भुवनेश्वरी के बीज मंत्र 'ह्रीं' में भगवती का स्वरूप निरन्तर विद्यमान कहा गया है।

'दक्षिणामूर्ति संहिता' के अनुसार भगवती भुवनेश्वरी के बीज मंत्र में आकाश बीज 'हकार' में कैलाशादि समाहित हैं, वहीं बीज 'रेफ्' में पृथ्वी सम्माहित है तथा 'ईकार' अनन्त रूप में पाताल में स्थिति हो समस्त भू-मण्डल को समाहित किये हुए है। अतः तीनों लोकों (स्वर्ग, मृत्यु और पाताल) के समाहित होने के कारण ही इन्हें त्रिभुवनों की नायिका मानकर भुवनेश्वरी कहा गया है।

देवी भागवत में वर्णित देवी का शक्ति स्वरूप तथा महालक्ष्मी स्वरूप का समन्वित रूप है 'ह्रीं' बीज। भुवनेश्वरी साधना का अर्थ है–साधक समस्त प्रकार की भौतिक सम्पदाओं को प्राप्त करता हुआ साधना के उस उच्चतम सोपानों को प्राप्त करे, जहां साधक कालपुरुष बन जाता है।

संसार की त्रिगुणात्मक शक्तियां महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती हैं। महालक्ष्मी का श्रेष्ठतम स्वरूप वरदायक स्वरूप भुवनेश्वरी माना गया है, यह दस महाविद्यायों में से एक है।

भुवनेश्वरी साधना अत्यन्त सरल, सौम्य, अद्वितीय एवं शीघ्र फलदायक है, इसका मंत्र छोटा प्रतीत होते हुए भी पूरे शरीर को झनझना कर रख देता है और पूरी दरिद्रता करोड़ों-करोड़ों मील दूर फेंक देता है तथा भुवनेश्वरी पूर्ण लक्ष्मी युक्त बन कर, सोलह श्रृंगार युक्त हो करके घर में स्थापित हो जाती है, जो जीवन में सब कुछ प्रदान करने में सफल होती है।

वास्तव में भुवनेश्वरी साधना जीवन का एक वरदान है, जो शिव के द्वारा दिया गया है। हम सब इस भुवनेश्वरी साधना के माध्यम से वह सब कुछ प्राप्त कर सकते हैं जो हमारे जीवन के आयाम हैं, धन, यश, मान, प्रतिष्ठा, ऐश्वर्य, भोग, विलास, पूर्णता, सफलता, अनुकूलता, व्यापारवृद्धि और वह सब कुछ जो जीवन में चाहते हैं...

महालक्ष्मी जहां व्यापार वृद्धि, आर्थिक उन्नति और भौतिक समृद्धि देने में समर्थ है, महासरस्वती जहां विद्या, मान, प्रतिष्ठा, सम्मान, वाक्सिद्धि और कला, संगीत आदि क्षेत्रों में समर्थता देने में सहायक है वहीं पर महाकाली शत्रु-संहार तथा विरोधियों पर विजय प्राप्त करने और जीवन की समस्त विपरीत स्थितियों को दूर कर अनुकूल बनाने में समर्थ है। अतः जीवन में इन तीनों महाशक्तियों की साधना से ही पूर्णता आ पाती है, परन्तु शास्त्रों और प्रामाणिक ग्रंथों के अनुसार भुवनेश्वरी इन तीनों महाशक्तियों का समन्वित रूप है, अतः केवल मात्र भुवनेश्वरी की साधना करने से ही इन तीनों महाशक्तियों की साधना सम्पन्न हो जाती है तथा उसके जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव या बाधा नहीं रह पाती।

भगवती भुवनेश्वरी को अनेक स्वरूपों में सम्बोधित किया गया है, प्रत्येक स्वरूप साधक के लिए नवीन चिन्तन युक्त है। विश्वोत्पत्ति के पश्चात् जब वह शक्ति त्रिभुवन का सञ्चालन करती है, तो उसे 'भुवनेश्वरी' के रूप में सम्बोधित किया गया।

अमृत से विश्व का पोषण करने के लिए भगवती ने अपने किरीट पर चन्द्रमा धारण किया। भगवती के इस स्वरूप का 'इन्दु किरीटी' के रूप में चिन्तन किया गया है। भगवती त्रिनेत्र स्वरूप हैं, अतः उन्हें नेत्रों द्वारा सम्पूर्ण लोकों को प्रकाशित करने का हेतु कहा गया। समस्त योनियों के पोषण करने के फलस्वरूप उन्हें 'वरदा' कहा गया। अत्यन्त कृपायुक्त, स्नेहयुक्त, दयामयी भगवती को 'स्मेरमुखी' (मन्द हास्य युक्त मुख वाली) माना गया है तथा उनके हाथ में शोभित अंकुश शासन शक्ति का प्रतीक है।

किसी भी साधना की सिद्धि के लिए गुरु और मंत्र पर विश्वास होना आवश्यक है।

साधना विधान

इस साधना की आवश्यक सामग्री है 'भुवनेश्वरी यंत्र', 'सर्व सिद्धि प्रदायिनी गुटिका' तथा 'भुवनेश्वरी माला'।

- यह साधना 21 दिन की है।
- इस साधना को 17.9.21से या किसी भी माह में शुक्ल पक्ष की चतुर्थी को प्रारम्भ करें।
- साधक शुद्ध श्वेत वस्त्र धारण करें।
- लकड़ी के बाजोट पर लाल वस्त्र बिछाएं तथा उस पर चावल से 'ह्रीं' लिख कर भुवनेश्वरी यंत्र को स्थापित करें। यंत्र की बायी ओर सर्व सिद्धि प्रदायिनी गुटिका रखें।
- यंत्र का पूजन कुंकुम, अक्षत तथा पुष्प से करें। फिर गुटिका का भी इसी प्रकार पूजन करें।
- तेल का दीपक लगायें।

भगवती भुवनेश्वरी का ध्यान करें-

सिन्दूरारुण विग्रहां त्रिनयनां माणिक्य।
मौलिस्फरत्तारानायक शेखरां।।
स्मितमुखीमापीन वक्षोरूहाम्।
पाणिभ्यां मणिपूर्णरत्नचषकं रक्तोत्पलं।।
विभ्रर्ती सौम्या रत्नघटस्थ।
सत्यचरणां ध्यायेत्पराम्बिकाम्।।

ध्यान के पश्चात् भुवनेश्वरी माला से निम्न मंत्र का नित्य 101 माला मंत्र जप करें।

मंत्र - ।। ऐं ह्रीं श्रीं।।

साधना समाप्ति के पश्चात् यंत्र, माला तथा गुटिका को नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री- 510/-

22.08.21

गायत्री जयन्ती

वर्तमान युग में नियमपूर्वक
संध्या की जानकारी बहुत
कम लोगों को रह गई है,
जब नित्य प्रति पूजा
करनी है तो क्यों
नहीं विधिपूर्वक ही की जाए,
संध्या, गायत्री उपासना
और शक्ति उपासना
का श्रेष्ठतम रूप है,
जिस घर में नित्य गायत्री
साधना संध्या
विधि से सम्पन्न होती है
वहां आदि शक्ति अपनी समस्त
शक्तियों सहित
उस घर को आलोकित
करती है।

त्रिकाल संध्या विधान

गायत्री साधना

त्रिपदा की तीन रूपों में त्रिकाल संध्या का विधान है, प्रातः काल की ब्राह्मी, मध्याह्न की वैष्णवी और सायंकाल की शांभवी कही जाती है, इनमें जो निर्देश प्रेरणाएं एक समता भरी पड़ी हैं, उन्हें आस्तिकता, आध्यात्मिकता एवं धार्मिकता कहा गया है।

संध्या का तात्पर्य समीपता से है, गर्मी-सर्दी की ऋतुओं के मिलन की तरह, दिन और रात के मिलन को संध्याकाल कहा जाता है, यह समय पूजा, उपासना और आत्म साधना के लिए बहुत ही उपयोगी माना गया है। इस समय का किया गया थोड़ा श्रम भी अधिक लाभदायक होता है। इस तरह दिन और रात्रि के संधिकाल में पाप निवृत्ति और ब्रह्मवर्चस्व के लिए जो कर्मकांडात्मक द्विजों के लिए अत्यन्त आवश्यक नित्य कर्म माना गया है, उसे शास्त्रों का इतना उच्च मूल्यांकन प्राप्त है, कि इसकी अवहेलना उचित नहीं है।

संध्या की व्युत्पत्ति इस प्रकार है - **सम-ध्यै-जन आप, 'ध्यै'** धातु का अर्थ होता है - ध्यान करना, अतः संध्या का अभिप्राय हुआ - तन, मन और वाणी से अपने आराध्य के समीप बैठना, उनसे एक रूपता प्राप्त करना, त्रिपदा की तीन रूपों में त्रिकाल संध्या का विधान है, प्रातः काल की ब्राह्मी, मध्याह्न की वैष्णवी और सायंकाल की शांभवी कही जाती है, इनमें जो निर्देश प्रेरणाएं एक समता भरी पड़ी हैं, उन्हें आस्तिकता, आध्यात्मिकता एवं धार्मिकता कहा गया है।

संध्या का समय शास्त्र मर्यादित है। शास्त्रों में इसके नियमों पर भी प्रकाश डाला गया है।

उत्तम तारकोपेता मध्यमा लुप्तारका।
कनिष्ठा सूर्य सहिता प्रातः संध्या त्रिधा स्मृता।।

-देवी भागवत

प्रात-कालीन संध्या तारों के रहते हुए की जाती है। यदि ब्रह्म मुहूर्त में ही इसे सम्पन्न कर लिया जाए तो उत्तम माना गया है। तारे लुप्त होने पर उसे मध्यम और सूर्योदय होने पर कनिष्ठ होता है।

सायंकालीन संध्या के लिए-

उत्तमा सूर्य सहिता मध्यमा लुप्त सूर्यका।
कनिष्ठा तारकोपेता सायं संध्या त्रिधास्मृता।।

-देवी भागवत

सायंकाल की संध्या सूर्यास्त के तीन घड़ी पहले की जाती है, तब उसे श्रेष्ठ माना जाता है, तारों के निकलने से पहले मध्यम और तारों के दिखाई देने पर कनिष्ठ मानी जाती है।

विधि-

साधक का कर्त्तव्य है, कि प्रातःकाल ब्रह्म मुहूर्त में उठकर शौच, स्नान आदि से निवृत्त होकर शुद्ध वस्त्र धारण करें, पवित्र मन से एकान्त स्थान अथवा अपने पूजा कक्ष में संध्या के लिए उपयुक्त आसन पर बैठें, तीन काल की संध्या में पूर्व, ईशान और उत्तर दिशा की ओर मुख करके बैठना चाहिए। गायत्री साधना और सूर्योपस्थान के लिए प्रातःकाल पूर्व और सायंकाल पश्चिम दिशा की ओर मुख करना चाहिए, संध्या के लिए साधकों के पास यज्ञोपवीत होना आवश्यक है।

पवित्रीकरण-

पवित्रीकरण के लिए बाएं हाथ की हथेली में जल लें और दाहिने हाथ से ढक कर निम्न मंत्र बोलें, मन्त्र पूरा हो जाने पर उस जल को दाहिने हाथ की उंगलियों से अपने शरीर पर छिड़क दें-

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थांगतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।

तत्पश्चात् अपने हाथ में तीन बार जल लेकर आचमन क्रिया सम्पन्न करे, मस्तिष्क में स्थिर चिद्रूपिणी महामाया दिव्य तेज

मां गायत्री के सौम्य रूप का वर्णन करते हुए शास्त्रों में बताया गया है कि ब्रह्मलोक में निवास करने वाली, कन्या की तरह रूप, शील तथा गुण से सम्पन्न, हंसारूढ, लाल वर्ण, चार मुख और चार हस्त वाली, रक्तवसना, हाथों में कमण्डल, पुस्तक, दंड और रुद्राक्ष की माला की मां गायत्री असीम शक्तियों की स्वामिनी है।

शक्ति का ध्यान करते हुए अपने सिर पर अपना दाहिना हाथ रखें।

निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए प्राणायाम करते समय बाएं हाथ की हथेली पर दाहिने हाथ की कोहिनी रखें और उंगलियां बन्द करके केवल अंगूठे से नाक का दाहिना स्वर बन्द कर लें और बाएं से श्वास खींचते समय तेजस्वी प्राण का ध्यान करना चाहिए, कुछ देर श्वास अन्दर रोके रखें, तत्पश्चात् कनिष्ठिका एवं मध्यमा उंगलियों से नाक का बायां छिद्र बन्द करके दाहिने से श्वास छोड़ देना चाहिए, श्वास बहुत ही शनैः-शनैः छोड़ते समय भी निम्न मंत्र को मन ही मन जपते रहना चाहिए-

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् तत्सवितुर्वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपोज्योतिरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्।

न्यास-

बाएं हाथ में जल लेकर दाहिने हाथ की समूहबद्ध पांचों उंगलियों से निम्न मंत्रों के साथ शरीर के विभिन्न अंगों को स्पर्श करते समय ऐसी भावना रखनी चाहिए कि वे सभी अंग शक्तिशाली, पवित्र और महा तेजस्वी बन रहे हैं-

ॐ वाङ् मे अस्येऽस्तु *(मुख को पहले दाहिने फिर बाएं)*
ॐ नसोऽर्मे प्राणोऽस्तु *(नासिका के दोनों छिद्रों को)*
ॐ अक्ष्णोर्मे चक्षु रस्तु *(दोनों नेत्रों को)*
ॐ कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु *(दोनों कानों को)*
ॐ बाह्वोर्मे बलमस्तु *(दोनों बाहों को)*
ॐ ऊर्वोर्मे ओजोऽस्तु *(दोनों जंघाओं को)*
ॐ अरिष्ठानि मेऽगानि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु।। *(शरीर के सभी अंगों पर जल छिड़कें)*

अब पृथ्वी माता का ध्यान करें, सामने जल, अक्षत, पुष्प आदि चढ़ाएं तथा धूप-दीप अर्पित करें एवं हाथ जोड़ कर वेद माता गायत्री का आह्वान करें तथा गायत्री यंत्र एवं गायत्री चित्र पर अक्षत चढ़ाएं, अब आसन पूजा, स्नान और फिर 'गायत्री यंत्र' तथा प्रतिमा पर चन्दन, अक्षत, पुष्प, धूप-दीप अर्पित करें और मां गायत्री के आगे एक पात्र में आचमन हेतु जल रखें।

शक्ति, सफलता तथा इच्छा

पूरी करने के लिए इष्ट सिद्धि बहुत आवश्यक है, जिसमें व्यक्ति देवी शक्ति के लिए श्रद्धा और आस्था मन में स्थापित कर लेता है। इष्ट सिद्धि में मां गायत्री का ध्यान बहुत शुभ होता है। मां गायत्री की उपासना में गायत्री मंत्र बहुत ही चमत्कारी माना गया है।

अब गुरुदेव का ध्यान करते हुए निम्न मंत्र बोलना चाहिए-

गुरूर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः।।
अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै, श्रीगुरवे नमः।।
ध्यान मूलं गुरोर्मूर्तिः पूजा मूलं गुरोः पदम्।
मंत्र मूलं गुरोर्वाक्यं मोक्ष मूलं गुरोः कृपा।।

इसके बाद एक माला गुरु मंत्र की जप करनी चाहिए-

गुरु मंत्र

।। ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः।।

चेतना मंत्र

।। ॐ ह्रीं मम प्राण देह रोम प्रतिरोम चैतन्य जाग्रय ह्रीं ॐ नमः।।

इसके बाद गायत्री माला से गायत्री मंत्र की दो माला जप करना अनिवार्य है। एक माला आत्म कल्याण के लिए और दूसरी माला विश्व कल्याण के लिए।

प्रातःकाल ब्रह्म रूप गायत्री का ध्यान करें-

ॐ बालाविद्यान्तु गायत्री लोहितां चतुराननाम्।
रक्ताम्बरद्वयोपेतामक्षसूत्रकरीं तथा।।
कमण्डलुधरां देवीं हंसवाहन संस्थिताम्।।
ब्रह्माणीं ब्रह्मलैवत्याम् ब्रह्मलोकनिवासिनीम्।
म त्रेणावाहयेद्देवीमायन्तीं सूर्यमण्डलात्।।

आर्थिक सामर्थ्यवान बनने, तंत्र बाधा, शापोद्धार बाधा, विवाह बाधा, भाग्य बाधा दूर करने के साथ रोजगार एवं व्यापार को श्रेष्ठ बनाने आदि चमत्कारी परिणाम प्राप्त करने लिए शास्त्र सम्मत नियमपूर्वक विधि-विधान द्वारा साधना में सफलता प्राप्त की जा सकती है।

ब्रह्मलोक में निवास करने वाली, कन्या की तरह रूप, शील तथा गुण से सम्पन्न, हंसारूढ, लाल वर्ण, चार मुख और चार हस्त वाली, रक्तवसना, हाथों में कमण्डल, पुस्तक, दंड और रुद्राक्ष की माला लिए हुए आदित्य मंडल से आने वाली गायत्री देवी का मैं ध्यान करता हूं।

गायत्री मंत्र

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धमीहि धियो यो नः प्रचोदयात्। शिवा रजसे शिवातुम्।।

मध्याह्न काल में विष्णु रूप गायत्री का ध्यान करें-

ॐ मध्याह्ने विष्णुरूपां च तार्क्ष्यस्थां पीतवाससम्।
युवतीं च यजुर्वेदां सूर्य मण्डल संस्थिताम्।।

विष्णुरूप हाथों में शंख, चक्र, गदा और पद्म लिए गरुड़ पर स्थित पीतवसना युवती के रूप में यजुर्वेद से युक्त सूर्य मण्डल में स्थित गायत्री देवी का मैं ध्यान करता हूँ।

सायंकाल में शिव रूप गायत्री का ध्यान-

ॐ सायाहने विश्वरूपांच वृद्धां वृषभवाहिनीम्।
सूर्यमण्डलमध्यस्थां सामवेदसमायुताम्।।

शिव रूप, हाथों में त्रिशूल, डमरू, पाश और पात्र धारण किए हुए वृषभ रूढ़ा सूर्य मण्डल में स्थित, सामवेद से युक्त गायत्री देवी का मैं ध्यान करता हूँ।

ध्यान विधि-

पालथी मार कर पद्मासन, सिद्धासन अथवा सुखासन लगा कर बैठें। मेरुदण्ड सीधा रखें, आँखें अर्द्धनिमिलित, ध्यान नासाग्र पर, भावना यह कि सारी सृष्टि में प्रलय की स्थिति हो गई है, ऊपर विस्तृत नील गगन है और नीचे जलप्लावन। जल के सिवा और कुछ भी नजर नहीं आता है, सिर्फ जल के ऊपर कमल पत्र पर एक नवजात शिशु लेटा अपने पैर के अंगूठे को मुख में डाले सुधारस का पान कर रहा है, यह कमल पत्र जल के ऊपर तैरता रहा है। इस कल्पना चित्र को भावना लोक में भली-भांति स्थिर करने पर बहुत दूर तक एक ज्योति पिण्ड देखना चाहिए, सूय की तरह प्रकाशित होने वाले नक्षत्र के रूप में गायत्री का श्रेष्ठ ध्यान है, ध्यान के साथ यह भावना रखनी चाहिए कि जिस तरह सूर्य की किरणों में गर्मी, गतिशीलता और तेजस्विता होती है। इसी तरह गायत्री के ज्योतिपिण्ड में से सद्बुद्धि, सात्विकता और सशक्तता की किरणें निःसृत हो रही हैं और मैं इन शक्तियों का एक पुंज बनता जा रहा हूँ।

कल्पना नेत्रों से यह अनुभव करना चाहिए कि मैं निरन्तर विराट पुरुष को अपने चारों ओर देख रहा हूं, मुझमें तेजस्विता, श्रेष्ठता और दिव्यता बढ़ती जा रही है, उसके संरक्षण में गंतव्य की ओर मैं बढ़ता चला जा रहा हूं। आसुरी प्रवृत्तियाँ मेरे पास आने का साहस नहीं कर पा रही हैं, मैं प्रसन्नचित्त हूँ, मेरा रोम-रोम प्रसन्नता और सन्तोष से खिल रहा है, दुःख और चिन्ता की रेखाएं मेरे मस्तक पर नहीं हैं, मैं हर प्रकार से सुखी हूँ, क्योंकि मेरी बुद्धि में सात्विकता, तेजस्विता, दिव्यता और सशक्तता है।

उपयुक्त संकल्प का मनन धीरे-धीरे करते रहना चाहिए, ताकि इन विचारों की स्थायी छाप मन पर पड़ती रहे।

विसर्जन

हाथ में अक्षत लेकर निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए देवी की प्रतिमा पर छिड़क दें।

ॐ उत्तमे शिखरे जाता भूम्यां पर्वतमूर्धनि।
ब्राह्मणेभ्योऽभ्यानुज्ञाता गच्छ देवि! यथासुखम्।।

सूर्यार्घ्य

जलपात्र के बचे हुए जल में अक्षत, कुंकुम और पुष्प डाल लें, फिर सूर्य के सामने जाकर इस प्रकार अर्घ्य दें, कि ऊपर से गिरता हुआ जल आपके चेहरे और हृदय के समानान्तर हो, जिसकी सूर्य रश्मियां भेदन करते हुए आपके चेहरे और हृदय का भी स्पर्श करे। साथ में निम्न मंत्र का उच्चारण करे-

ॐ सूर्य देव सहस्रांशो तेजो राशे जगत्पये।
अनुकम्पय मां भक्तया गृहाणार्घ्यं दिवाकर।।

मध्यरात्रि में भी एक संध्या की जाती है, जिसे तुरीय संध्या कहते हैं, लेकिन यह सभी साधकों के लिए अभीष्ट नहीं है, साधना की उच्चतर स्थिति तथा विशिष्ट गुरु कृपा प्राप्त साधक ही इसे गुरु आज्ञा से करते हैं।

इस प्रकार साधारण साधकों को कम से कम नित्य प्रति प्रातः एवं सायं संध्या करना नितान्त आवश्यक एवं जीवन की अनिवार्य आवश्यकता है।

गायत्र्येव तपोयोगः साधनं ध्यानमुच्यते।
ब्रह्मवर्चस रूपा च नातः किंचित् ब्रह्मरतम्।।

गायत्री ही तप है, गायत्री ही योग है, गायत्री ही ध्यान और साधना है, गायत्री ब्रह्मवर्चस्व रूप है, इससे बढ़कर सिद्धिदायक साधना और कोई नहीं।

साधना सामग्री-450/-

रोग नाश के लिए

महाकाली का लघु प्रयोग

कई बार घर में सदस्यों को रोग हो जाता है और इलाज करवाने पर भी पूरी सफलता नहीं पाती

अगर पत्नी की बीमारी ठीक होती है तो पुत्र बीमार पड़ जाता है और पुत्र की बीमारी ठीक होती है तो खुद तकलीफ पाने लग जाते हैं

ऐसी किसी भी स्थिति के लिए यह प्रयोग आश्चर्यजनक रूप से सहायक है

आधी रात के समय शांत चित्त होकर दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर बैठ जायें और सामने महाकाली का चित्र रख दें तथा स्वयं काली मिर्च और सरसों को रोगी के ऊपर घुमाकर महाकाली के सामने उसे रख दें और ठीक आधी रात के समय हकीक माला से निम्न मंत्र की पांच माला मंत्र जप करें–

रोगानशेषानपहंसि तुष्टा रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान् ।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति ।।

इसके बाद जब पांच माला मंत्र जप पूरा हो जाए, तो सरसों और काली मिर्च को पुनः रोगी के ऊपर सात बार घुमाकर घर के बाहर गड्डा खोदकर जमीन में गाड़ दें। ऐसा करने पर आश्चर्यजनक रूप से लाभ प्राप्त होता है और तुरन्त आराम होने लगता है।

इस प्रयोग को मैंने सैकड़ों लोगों पर आजमाया है और प्रत्येक बार मुझे सफलता मिली है। वास्तव में ही यह प्रयोग अपने आप में आश्चर्यजनक रूप से सिद्धिदायक है, पर इसमें शर्त यही है, कि मंत्र जप ठीक आधी रात को हो।

-काली हकीक माला- 200/-

चैतन्य महाकाली दीक्षा

इस विश्व के प्रत्येक देश, प्रत्येक धर्म और प्रत्येक वर्ण की मां चिरस्मरणीय काल से अपने शिशुओं के साथ एक कौतुक करती आई है और वह यह है, कि वह अपनी संतान के साथ लुका-छिपी का खेल खेलती है, चाहे वह मां धनवान हो या निर्धन, ज्ञानवान हो अथवा अल्पज्ञ। शिशु को भी इससे रुचिकर खेल शायद और कोई भी तो नहीं लगता वह एक पल में उसे छिपता देख उदास होता है और अगले ही पल उसे पुनः सामने पा खिल उठता है। एक विचित्र-सा माधुर्य दोनों के मध्य छलक उठता है।

योगी भी जीवन पर्यन्त यही कौतुक देखता और आह्लादित होता रहता है। उसके और जगज्जननी के मध्य यही खेल तो जीवनपर्यन्त चलता रहता है। कभी दुःख के घने बादलों की ओट में वह 'लुप्त' सी हो जाती है, तो अगले ही क्षण 'प्रकट' भी हो जाती है। शनैः-शनैः यह समझ में आने लग जाता है, कि वह न तो लुप्त होती है, न प्रकट होती है। केवल कौतुक भर रचती है।

यही बोध हो जाना 'मां' की सार्वभौमिकता को समझने की प्रथम अवस्था है। यही **'जगज्जननी मां महाकाली'** को पहचानने की भी प्रथमावस्था है और परिचय की यही भावभूमि **'महाकाली महाविद्या साधना'** की भी प्रथम भावभूमि है। महाकाली महाविद्या साधना की उपासना ही तो महाविद्या साधना में प्रवेश का द्वार है। यही जीवन में अभय की भी स्थिति है।

और जो मां महाकाली के समीप तक पहुंच गया, उसे भय ही कैसा? उसी की जननी तो साक्षात् महाकाल पर आरूढ होकर काल का संहार कर रही है। काल से अधिक भयभीत करने वाली दूसरी अन्य वस्तु हो ही क्या सकती है? रोग, शोक, शत्रु, दरिद्रता, पीड़ा, दैत्य, संकोच, मलिनता – ये सभी काल के ही तो अंग हैं और महाकाली अपने शिशु के लिए, अपनी संतान के लिए प्रतिक्षण इन्हीं अशुभ भावों का ही तो संहार कर रही है।

यदि साधकों ने अनुभव किया होगा, तो पाया होगा, कि सद्गुरुदेव यद्यपि षोडशी साधना जैसी अत्युत्तम महाविद्या साधना में दीक्षात्मक रूप से प्रवेश का उपाय सहज ही दे देते हैं, किन्तु महाकाली साधना हेतु दीक्षात्मक उपाय का द्वार सहज ही नहीं खोलते। उनकी इस क्रिया में ही सारा रहस्य छुपा है।

रहस्य यही है, कि जब तक साधक अन्तर्मन से नितान्त शैशवावस्था में नहीं पहुंच जाता, तब तक महाकाली की उपासना, कृपा और स्नेह का सुपात्र भी नहीं बन पाता है। जगज्जननी महाकाली के स्वरूप का वर्णन ही महाकाली तक पहुंचने का मार्ग भी अपने आपमें छिपाए है।

वे निर्वसना है, मुण्डमाला धारण किए हैं, शिव पर आसीन हैं, श्मशान में क्रीडारत हैं, उग्र हैं एवं विनाश की साकार मूर्ति हैं - किन्तु वे फिर भी कितनी मधुर हैं। इस रूप में शिशु को भय ही क्यों ? निर्वसना मां के समीप वही तो जा सकता है, जो शिशु हो और योगी ही ऐसा 'निर्वसन' होता है।

शास्त्रों में निर्वसन व्यक्ति की एक अन्य संज्ञा भी मिलती है - दिक्वसन, अर्थात् सभी दिशाएं ही जिसकी वस्त्र हों। यदि सरल शब्दों में समझें, तो जिसकी गति सर्वत्र, सभी में व्याप्त हो गई, जो समता भाव से युक्त हो गया, वही शिशु है, वही योगी है और वही महाकाली के समीप जाने का न केवल पात्र वरन परमाधिकारी भी है।

और जो मां महाकाली के समीप तक पहुंच गया, उसे भय ही कैसा? उसी की जननी तो साक्षात् महाकाल पर आरूढ़ होकर काल का संहार कर रही है। काल से अधिक भयभीत करने वाली दूसरी अन्य वस्तु हो ही क्या सकती है? ***रोग, शोक, शत्रु, दरिद्रता, पीड़ा, दैन्य, संकोच, मलिनता- ये सभी काल के ही तो अंग हैं*** और महाकाली अपने शिशु के लिए, अपनी संतान के लिए प्रतिक्षण इन्हीं अशुभ भावों का ही तो संहार कर रही है।

यही कारण है उसके उग्र होने का, क्योंकि जब तक उसके समक्ष अपनी संतान की पीड़ा है, तब तक वह शांत बैठ भी कैसे सकती है? वह आह्लादित दिख भी कैसे सकती है? उनके मुख मुण्डल पर स्मित हास्य की रेखा प्रकट हो भी कैसे सकती है? किन्तु उनको फिर भी मधुर कहा जाएगा,

यदि सरल शब्दों में समझें, तो जिसकी गति सर्वत्र, सभी में व्याप्त हो गई, जो समता भाव से युक्त हो गया, वही शिशु है, वही योगी है और वही महाकाली के समीप जाने का न केवल पात्र वरन परमाधिकारी भी है।

क्योंकि वह यह सब सहन करती है, तो मात्र इसीलिए कि उनकी संतानें अभय हो सकें। उनके प्रत्येक प्रहार से, उनकी प्रत्येक क्रोध रेखा से, उनकी प्रत्येक पदचाप से एक ही ध्वनि तो प्रकट हो रही है-

'मा भेः मा भेः''

अर्थात् तुम भयभीत मत हो, तुम अभय हो।

यह सम्पूर्ण विश्व ही भयभीत है। कोई जीवन से भयभीत है तो कोई मृत्यु से, कोई भविष्य से भयभीत है, तो कोई वर्तमान से, कोई-कोई तो अपने विगत से भी भयभीत है-और यह सत्य भी है, कि भयभीत व्यक्ति आघात के अतिरिक्त किसी को कुछ दे भी नहीं सकता - किन्तु *महाकाली सबको समान दृष्टि से ही देख रही है, उनको ज्ञात*

*साधक जीवन में शक्तिमय होने के साथ-साथ सभी प्रकार से पूर्ण हो सके, विविध बाधाओं, **कष्ट, तनाव, रोग एवं शत्रु से मुक्त हो सके तथा जीवन में निर्भयता के सुख को अनुभव कर सके,** इसका प्रामाणिक उपाय महाकाली साधना ही मानी गई है। महाकाली साधना में प्रवेश का उपाय गुरु गम्य ही माना गया है अर्थात् गुरु कृपा के माध्यम से ही साधक इस प्रकार की श्रेष्ठ साधना अपने जीवन में सम्पन्न कर पाता है। उच्चकोटि के साधकों, महाकाली साधना में रुचि रखने वाले साधको को चाहिए, कि प्रयास कर पूज्य गुरुदेव से 'चैतन्य महाकाली दीक्षा' प्राप्त कर अपने जीवन को नवीन मोड़ देने की क्रिया सम्पन्न करें।*

है, कि ये सभी काल चक्र के अधीन होकर उद्विग्न हो रहे हैं और इस व्यापक दृष्टि के कारण ही वह केवल जननी ही नहीं वरन् जगज्जननी की संज्ञा से विभूषित हो गई है। श्मशान में उनका वास इसी तथ्य को स्पष्ट करता है, कि समस्त विरोधाभासों, विसंगतियों, कष्ट और साक्षात् मृत्यु के मध्य वही तो जीवन की प्रतीक है। दस महाविद्या साधना में यदि उसे ही प्रवेश द्वार कहा गया है तो इसमें आश्चर्य ही कैसा? शक्ति की साधना करनी है, तो प्रथम साक्षात्कार विसंगति और काल से होना तो अवश्यंभावी है ही।

-किन्तु इसका अंत सुखद भी है, क्योंकि दस महाविद्याओं का प्रवेश द्वार यदि महाकाली साधना है, तो अंतिम सोपान षोडशी साधना है, जो ऐश्वर्य, विलास, सौन्दर्य और माधुर्य का ही विग्रह है।

जिस प्रकार मां आह्लाद के क्षणों में अपनी संतान को उछाल देती है और पुनः अपनी ही गोद में संभाल भी लेती है, वही क्रिया महाकाली भी करती है। वह भी अपनी संतान को काल चक्र में उछाल भी देती है और संभाल भी लेती है। अंतर केवल इतना होता है, कि वह इस प्रकार से अपनी संतान को उस प्रारब्ध के भोग से एक क्षण से निकाल लेती है अन्यथा जिसके भोग में कई जन्म और युग लग जाते। संभाल तो वह लेती ही है, क्योंकि यही उसका धर्म है, यही उसका आग्रह भी है। उसकी शरण में आने के बाद दुःखों का चक्र उसकी ही एक क्रीड़ा होती है। जिस प्रकार मां अपने शिशु को उछालने के साथ -साथ उसे (शिशु को) आह्लादित करने की भावना ही मन में प्रधान रखती है, वही महाकाली की भी मनःस्थिति होती है।

महाकाली के अनन्य साधक श्री रामकृष्ण परमहंस से उनके किसी भक्त ने एक अवसर पर जिज्ञासा प्रकट की थी - 'उनकी महाकाली साधना का रहस्य क्या है?'

श्री रामकृष्ण ने सहज उत्तर दिया - *''कोई रहस्य नहीं ! जिस दिन 'उसकी' गोद में चढ़ने के लिए उसी से लड़ने की मनःस्थिति आ जायेगी, उसी दिन वह 'सिद्ध' भी हो जायेगी।''*

यह मनःस्थिति दो ही प्रकार से आ सकती है। 'प्रथमतः' यह, कि साधक के पूर्व-जन्म के संस्कार प्रबल हों और वह जन्म से ही उस निर्मलत्व को धारण करके बढ़ रहा हो, जिसे योग की भाषा में शिशुत्व कहते हैं। 'द्वितीय मार्ग' यह है, कि साधक, साधना की उच्चतम भावभूमि को अपने योगबल से स्पर्श कर चुका है।

हम न तो शिशु की भांति निर्मल है, न ही पूर्ण साधक बन सके हैं। अर्ध रूप से अपनी साधना के अहं में है और अर्ध रूप से शिशु की भांति करुण पुकार से नहीं वरन पराजित व्यक्ति की भांति दैन्य से भरे हैं। मां ऐसे व्यक्तित्व को स्वीकार नहीं करती या यह कहना सही होगा, कि ऐसा व्यक्तित्व मां को अपने अंदर नहीं उतार सकता। फिर उपाय क्या है? ऐसी दशा में उपाय केवल एक ही शेष रह जाता है, कि ***हमें सद्‌गुरु की कृपा प्राप्त हो, हम उनके तपोबल से महाकाली के चैतन्य रूप का दर्शन कर सकें, अपने जीवन की विसंगतियों की समाप्ति कर सकें।***

शंखचूड़ ने कठोर तपस्या कर भगवान विष्णु को संतुष्ट किया तथा अपने महापुण्य के फलस्वरूप तुलसी देवी को पत्नी के रूप में प्राप्त किया। दीर्घ समय तक राज्य करने के पश्चात् शंखचूड़ का देवताओं के साथ विरोध शुरू हुआ तथा युद्ध में देवता उससे पराजित हुए। महासंहारक रुद्रदेव स्वयं शंखचूड़ से युद्ध करने आये, किन्तु तुलसीदेवी द्वारा पति की मंगल कामना के लिए निरन्तर विष्णु की आराधना में रहने के कारण शंखचूड़ का विनाश शिव नहीं कर सके। तुलसी को वर प्राप्त था, कि उसके द्विचारिणी नहीं होने तक उसके पति की मृत्यु नहीं होगी।

नारायण शिला

शंखचूड़ का विनाश असम्भव देख देवतागण विष्णु के शरणापन्न हुए। देवताओं ने विष्णु से अनुरोध किया, कि वे शंखचूड़ का वेश धारण कर उसकी पत्नी तुलसी के पास जायें तथा उसे द्विचारणी कर दें, जिससे शंखचूड़ की मृत्यु सहज हो जाये। तुलसी के पवित्र प्रेम की शक्ति प्राप्त कर शंखचूड़ अहंकार के वशीभूत होकर स्वयं को सर्वशक्तिमान समझ सभी ओर अत्याचार कर रहा था अतः देवताओं का अनुरोध मान विष्णु तुलसी के पति का वेश धारण कर तुलसी के पास गये। तुलसी के द्विचारिणी होने पर शिव के हाथों शंखचूड़ की मृत्यु सम्भव हो सकी।

तुलसी देवी ने अपने सती धर्म के नष्ट होने तथा पति शंखचूड़ के अन्याय रूप से निहत होने के कारण विष्णु को शाप दिया, कि वे हमेशा शिला बनकर ही रहेंगे। विष्णु ने तुलसी देवी के शाप को स्वीकार कर लिया तथा तुलसी देवी को प्रतिशाप दिया, कि वे शिला बन कर रहेंगे, किन्तु तुलसी के पत्ते उनके शिला पर नहीं चढ़ाने पर उनकी पूजा सिद्ध नहीं मानी जायेगी। उसी दिन से विष्णु शिलामय बन गये तथा तुलसी देवी पौधे के रूप में परिणत हुईं।

उसी दिन से तुलसी का पौधा हिन्दुओं के आराध्य देवताओं के मध्य अन्यतम माना गया। तुलसी के सामने प्रत्येक हिन्दू के घर प्रातः व संध्या धूप व दीप अर्चन किया जाता है। तभी से नारायण रूपी शालीग्राम शिला का पूजन गृहस्थ के मंगल के लिए तुलसी के पत्ते से किया जाता है।

शालीग्राम शिला विभिन्न प्रकार के होते हैं-

लक्ष्मी हरि-जिस शालीग्राम शिला में पद्म के संग चक्र रहता है, उसका नाम लक्ष्मी हरि है। यह शिला गृहस्थ के अभीष्ट को पूरा करती है।

वासुदेव-जिस शालीग्राम शिला में चक्रयुक्त दो द्वार रहता है, उसका नाम वासुदेव है। इस शिला को घर में स्थापित करने से पाप का नाश होता है।

संकर्षण-पूर्व और पश्चात् भाग में दो चक्र रहने पर संकर्षण कहलाता है। इसके नित्य पूजन से गृहस्थ के इच्छित कार्य पूर्ण होते हैं।

प्रद्युम्न-जिस शालीग्राम शिला में चक्र सूक्ष्म वैचित्र्य लिए होता है तथा जिसके अंत व बहिर्भाग में छिद्र होता है, उसे प्रद्युम्न कहते हैं, यह पीत वर्ण का इष्ट प्रदायक होता है।

अनिद्ध-जो शिला नीलाभ व वर्तुल (गोल) के साथ-साथ द्वार पर दो रेखा युक्त तथा पृष्ठ में पद्म लिए होता है, उसे अनिरुद्ध कहा जाता है।

केशव-इस शिला के पूर्व या पश्चात् हिस्से में एक या दो चक्र होता है। यह चतुष्कोण होता है तथा इसके पूजन से सौभाग्य की वृद्धि होती है।

नारायण-यह शिला श्याम वर्ण की होती है। नाभि (मध्य) में उन्नत (ऊंचा) चक्र तथा दीर्घ (लम्बी) रेखा होती है तथा दक्षिण भाग कुछ चपटा होता है।

तुलसी का पौधा हिन्दुओं के आराध्य देवताओं के मध्य अन्यतम माना गया। तुलसी के सामने प्रत्येक हिन्दू के घर प्रातः व संध्या धूप व दीप अर्चन किया जाता है। तुलसी का पौधा हिन्दुओं के आराध्य देवताओं के मध्य अन्यतम माना गया। तुलसी के सामने प्रत्येक हिन्दू के घर प्रातः व संध्या धूप व दीप अर्चन किया जाता है।

हरि-इस शिला का मुख ऊर्व (ऊपर की ओर) होता है, किन्तु शिला के सामने हरि द्वार दृष्टिगोचर होता है। यह शिला मुक्तिप्रद है।

परमेष्टि-यह शिला बिल्व फल के समान आकृति लिए हुए पद्म व चक्र युक्त होता है। शुक्राभ इस शिला के पीठ पर गर्त (गड्ढा) होता है। इसे परमेष्टि कहते हैं।

विष्णु-यह शिला दो चक्रों वाली कृष्ण वर्ण की होती है। इसके मध्य से द्वार तक रेखा होती है। इस शिला को विष्णु कहते हैं।

महानृसिंह-जो शिला लक्ष्मी वर्ण की हो तथा जिसके मध्य में दो चक्र हों तथा द्वार तक रेखा हो, यह रेखा केशवाकार दीर्घ व भयानक मुख लिए हो तो उसे महानृसिंह कहते हैं।

लक्ष्मी नृसिंह-इस शिला में वनमाला विराजित रहती है। चार चक्र व बिन्दु युक्त रहने के कारण इसे लक्ष्मी नृसिंह कहते हैं।

श्रीधर-वनमाला चिन्हित, कदम्ब कुसुमाकार और पंचरेखा युक्त शिला का नाम श्रीधर है।

हिन्दुओं में विश्वास है, कि सैकड़ों जन्म से पाप करता आ रहा व्यक्ति मात्र एक बार शिला पूजन करे, तो उसी समय उसके पूर्व के सभी पाप समाप्त हो जाते हैं। इस तरह हिन्दुओं में नारायण शिला पूजन का प्रचलन आरम्भ हुआ।

वैकुण्ठ-तिल वर्ण, एक चक्र, ध्वजा चिन्हित तथा द्वार पर रेखा वैशिष्ट्य लिए शिला का नाम वैकुण्ठ है।

मन-अतिह्रस्व (बहुत छोटा), वर्तुल, अलसी फूल के समान वर्ण एवं ऊर्ध्व व अधोदेश (नीचे) चक्र युक्त व महाद्युति (चमकीला) वैशिष्ट्य होने के कारण शिला को मन कहा जाता है, यह शिला विशेष कल्याणकारक होती है।

सुदर्शन-जो शिला श्याम वर्ण, महाद्युर्ति हो तथा जिसकी बायीं ओर चक्र तथा दक्षिण की तरफ एक रेखा हो, उसे सुदर्शन शिला कहते हैं।

सहस्रार्जुन-शिला अनेक रेखा युक्त होने के साथ-साथ चन्द्र पंक्ति चक्राकार होने पर सहस्रार्जुन के नाम से जानी जाती है। इसके पूजन से मंगल होता है।

दामोदर-जिस शिला के मध्य चक्र प्रतिष्ठित हो तथा वर्ण दूर्वा सदृश हो तथा द्वार देश संकीर्ण व पीत रेखा युक्त हो, तो उसे दामोदर शिला कहते हैं।

अनन्त-जो शिला बहुवर्ण के साथ-साथ नाग-भोग चिन्ह लिए हो तथा अनेक चक्रयुक्त हो, तो उसे अनन्त शिला कहेंगे।

पुरुषोत्तम-जिस शिला में सभी तरफ से ऊर्ध्व में मुख दिखाई दे, उसे पुरुषोत्तम शिला कहते हैं।

योगेश्वर-जिस शिला के मस्तक पर लिंग चिन्हित रहता है, उसे योगेश्वर शिला कहते हैं।

राधा-दामोदर-दामोदर शिला के ऊर्ध्व व अधोदेश में चक्रवत् गर्त रहने व

मुख नाति दीर्घ व लम्बी रेखा युक्त होने पर राधा-दामोदर कहते हैं। यह शिला समृद्धि प्रदायक होती है।

पद्मनाभ-पद्म और छत्रयुक्त शिला को पद्मनाभ कहते हैं।

जनार्दन-जिस शिला के उदर (मध्य) में पूर्ण विकसित चक्र हो उसे जनार्दन शिला कहते हैं।

लक्ष्मी-नारायण-जिस शिला के उदर में वनमाला चिन्हित हो तथा जो सूक्ष्म चार चक्रयुक्त हो, उसे लक्ष्मी-नारायण शिला कहते हैं।

ऋषिकेश-अर्द्धचन्द्राकृति युक्त शिला ऋषिकेश शिला कहलाती है।

कृष्ण-कृष्ण वर्ण की शिला यदि चक्र युक्त हो तथा वनमाला चिन्ह लिए हो, तो उसे कृष्ण शिला कहते हैं।

चतुर्मुख-शिला के बीच में यदि दो चक्र हो तथा उसके पास चार रेखाएं हों, तो उसे चतुर्मख शिला कहते हैं।

गंडक पर्वत में वज्र कीट द्वारा शिला के मध्य जो चिन्ह अंकित होता है, उसी चिन्ह के अनुसार नारायण शिला का नामकरण होता है।

भारतवर्ष में इन सभी शालीग्राम शिलाओं की पूजा का प्रचलन है। गृहस्थ के घरों में किन लक्षण युक्त शिला के पूजन से सुख व शांति की प्राप्ति होती है, ऐसे लक्षणानुसार शिलाओं का ऊपर वर्णन किया गया है।

हिन्दुओं में विश्वास है, कि सैकड़ों जन्म से पाप करता आ रहा व्यक्ति मात्र एक बार शिला पूजन करे, तो उसी समय उसके पूर्व के सभी पाप समाप्त हो जाते हैं। इस तरह हिन्दुओं में नारायण शिला पूजन का प्रचलन आरम्भ हुआ।

जिस तरह हमारे देश में नारायण रूपी शालीग्राम शिला का पूजन प्रचलित है, उसी तरह एक समय यूरोप, अमेरिका, अफ्रीका, पेलेनेशिया न्यू हिब्रांइडिश देशों के लोगों में भी शिला खंड को देवता का प्रारूप मान परमेश्वर पूजन का प्रचलन था।

('मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान' पत्रिका से)

शिष्य धर्म

त्वं विचितं भवतां वदैव देवाभवावोतु भवतं सदैव।
ज्ञानार्थ मूल मपरं महितां विहंसि शिष्यत्व एवं भवतां भगवद् नमामि।।

शिष्य क्या है? क्या केवल मुंह से जय गुरुदेव कहने से या फूल माला चढ़ाने से या चरण स्पर्श करने से व्यक्ति शिष्य हो जाता है? सद्गुरुदेव परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंद जी के अनुसार ये तो मात्र गुरु भक्ति की अभिव्यक्ति के साधन मात्र हैं। शिष्य तो व्यक्ति तब होता है, जब उसमें कुछ विशेष गुण उत्पन्न होते हैं। क्या हैं वे गुण? आइए जानें।

- गुरु समाज की आलोचनाओं, व्यंग, प्रहारों को भी झेलता हुआ अपने ज्ञान के प्रसार में कृत संकल्प रहता है। यह शिष्य का परम धर्म है कि वह एक ढाल की तरह गुरु के सामने खड़ा हो जाए जिससे कोई भी प्रहार उनको हानि न पहुंचा सके।
- गुरु एक जीवित जाग्रत मंदिर है, वह सभी मंदिरों से श्रेष्ठ है। शिष्य उस मंदिर के पुजारी के समान है। यह शिष्य का कर्तव्य है कि वह उस सजीव मंदिर को, उस अद्वितीय देवालय को सुरक्षित रखे।
- यह शिष्य का कर्तव्य है कि समाज की ओर से और गुरु के आलोचकों की ओर से कोई भी प्रहार उन तक न पहुंचने दे जिससे कि जिस उद्देश्य से सद्गुरु इस पृथ्वी पर अवतरित हुए हैं उसको वे पूरा कर सकें और निर्बाध रूप से ऐसा कर सकें।
- शिष्य जब ऐसा करने का संकल्प लेता है तब भी गुरु की ही शक्ति होती है जो उसे सभी प्रहारों को झेलने की क्षमता देती है। वह तो केवल एक माध्यम मात्र होता है। इसलिए उसे गुरु के लिए सभी कार्य इसी अहं रहित भावना से करने चाहिए।
- यों जब शिष्य पूर्ण रूप से सद्गुरु से एकाकार हो जाता है तो गुरु और उसमें कोई भेद ही नहीं रहता। ऐसा होने पर शिष्य गुरु के हाथ, पांव, आंखें, मस्तिष्क बन जाता है और जितने अधिक सच्चे शिष्य गुरु के होते हैं, उतने ही गुरु के हाथ, पांव, आंखें होती हैं। तब वह अपने कार्य को और अधिक श्रेष्ठता से सम्पन्न कर पाता है।
- शिष्य का कर्तव्य है कि वह गुरु से इतना एकाकार हो जाए कि गुरु की आवश्यकता ही नहीं रहे उसे आज्ञा देने की। वह स्वयं ही गुरु के भाव को समझ ले तथा कहने से पहले ही आवश्यक कार्य को पूर्ण कर दे।
- और अधिक से अधिक गुरु सेवा करते हुए भी शिष्य के मन में तनिक भी अहंकार न उपजे कि वह कार्य मैं कर रहा हूं। उसे सदैव यही भान रहे कि गुरु की शक्ति ही उसे संचालित एवं निर्देशित कर रही है।

- गुरु बनना कोई मामूली क्रिया नहीं होती। गुरु का अर्थ है जो शिवत्व प्राप्त व्यक्तित्व हो, जो शिव के समान समाज के जहर को पीता हुआ, शिष्यों के जीवन में अमृत का संचार करें, जो शिष्यों के पापों, विकारों और कमियों को अपने ऊपर ओढ़ता हुआ उनको उच्चता और श्रेष्ठता प्रदान कर सके।
- गुरु को सब कुछ समर्पित कर देने का अर्थ यह नहीं कि अपना धन, अपना घर, अपनी संपत्ति गुरु के नाम कर दें। अगर गुरु यह सब चाहता है तो वह गुरु नहीं हो सकता। वह तो एक भिखारी है और जो स्वयं भिखारी है वह भला तुम्हें दे भी क्या सकता है। गुरु को सब कुछ समर्पित करने का अर्थ है अपने, दोष, अपना अविश्वास, अपना तर्क उनके चरणों में समर्पित कर देना।
- सीस उतारे भू धरे तो पयसे घर माहि, जो अपना सिर उतार कर यानी अपने तर्क, विचार, छोड़कर गुरु के चरणों में झुक जाता है, वह साधनाओं में और जीवन में श्रेष्ठता प्राप्त कर सकता है। केवल चरण स्पर्श करने से श्रद्धा और विश्वास नहीं होता। वह तो होता है जब शिष्य अपने तर्क और अपने विश्वास नहीं होता। वह तो होता है जब शिष्य अपने तर्क और अपने विश्वास को छोड़कर गुरु के प्रति नमन होता है।
- केवल हाथ का स्पर्श करने से दीक्षा या शक्तिपात नहीं हो जाता। यह तो केवल एक बाहरी क्रिया है। शक्तिपात का अर्थ है कि गुरु भीतर से एक चेतना का प्रवाह करें जो उगलियों या नेत्रों के माध्यम से शिष्य के शरीर में प्रवेश कर उसकी आत्मा शक्ति को जाग्रत करें। कोई भी अपने को गुरु कहकर या हाथ का स्पर्श कर शक्तिपात नहीं कर सकता। जो स्वयं चेतना हीन है जो स्वयं अपनी आत्मशक्ति की अनुभूति नहीं कर सका है वह कैसे शक्तिपात कर सकता है? जिसको शक्तिपात का अर्थ ही न पता हो वह कैसे शक्ति का प्रवाह कर सकता है।
- जब गुरु शक्तिपात करता है तो अपने प्राणों को निचोड़ कर सारा सत्व शिष्य में प्रवाहित कर देता है। अगर शिष्य में समर्पण एवं विश्वास की भावना है तो गुरु अपने पास कुछ रखता ही नहीं, अपना सारा ज्ञान, सारी चेतना शिष्य में उड़ेलने को तत्पर हो जाता है।
- गुरु के शरीर में सभी देवी देवताओं का वास होता है, और यही नहीं गुरु और शिव में कोई अंतर नहीं। शास्त्र भी यही कहते हैं कि, शिव गुरु है और गुरु ही शिव है। जो इनमें भेद करता है वह घोर नरक का भागी होता है। अतः गुरु की पूजा अर्चना, शिव के रूप में ही की जाती है और गुरु भी शिववत होते हुए शिष्यों के सारे पाप रूपी जहर को ग्रहण करते हुए उनमें अमृत का संचार करते हैं।
- गुरु ईश्वर का वह प्रतिबिम्ब है, जिसे तुम साकार अपनी आंखों के सामने देख सकते हो, ईश्वर को तुमने भले ही न देखा हो पर गुरु के माध्यम से ईश्वर को पहचान सकते हो। परन्तु उसके लिए तुम्हारे हृदय में प्रेम की धारा हो, आंखों में अश्रु की सरिता हो।

श्रीकृष्ण पूजन

भगवान कृष्ण ही सौन्दर्य प्रदायक पुरुषोत्तम हैं

कृष्ण ही आकर्षण प्रदायक मन्मथ,कृष्ण ही सम्मोहन, वशीकरण के देव केशव हैं, इच्छा पूर्ति गोविन्द हैं, कृष्ण ही शत्रुबाधा, ग्रहबाधा, विजय सिद्धि प्रदायक मधुसूदन, देवेश जर्नादन हैं। कृष्ण का ही स्वरूप ऋषिकेश स्वरूप है जो पूर्ण गृहस्थ सुख प्रदायक है। कृष्ण साधना से ही श्रेष्ठ संतान प्राप्ति होती है और उस रूप में वे बाल गोपाल कहे जाते हैं। ऐसे भगवान श्रीकृष्ण की साधना के लिए जन्माष्टमी पर्व और एक प्रकार से पूरा भाद्रपद श्रेष्ठ मुहूर्त कल्प है।

श्रीमद्भागवत के अनुसार भगवान हजारों रूपों में समुद्र की लहरों की भांति प्रकट होते हैं।

वे लीलाधारी युग पुरुष, मन्वंतर पुरुष और शक्ति वेश आदि रूप में प्रकट होते हैं। ये सभी अवतार सांसारिक रूप में उस समय की स्थितियों के अनुकूल क्रिया करते हैं और इनका कार्य केवल एक ही होता है कि संसार में भटकते हुए प्राणियों को पुन: शुद्ध मार्ग पर लाना तथा संसार में चल रही विभ्रम की स्थिति और राक्षसी प्रवृत्तियों का नाश कर पुन: शुद्ध धर्म की स्थापना करना है।

पुराणों के अनुसार स्वयंभू मनु के काल में प्रजापति स्तूप एवं उनकी पत्नी त्रष्णी को ब्रह्मा से विशेष आज्ञा प्राप्त हुई और उन्होंने कई वर्षों की तपस्या की तथा उन्हें तीन वरदान प्राप्त हुए और उन्होंने यही वर प्राप्ति की कि हर युग में भगवान उन के यहां जन्म लें। त्रेतायुग के पूर्व काल में आदिति और कश्यप के गर्भ से वामन देव के रूप में तथा त्रेता युग के ही उत्तर काल में दशरथ और कौशिल्या के गर्भ से राम के रूप में तथा द्वापर युग में वसुदेव और देवकी के पुत्र के रूप में भगवान कृष्ण ने अवतरण किया।

इसके साथ ही एक कथा यह भी आती है कि जब पृथ्वी भूदेवी पाप और अत्याचारों से अत्यन्त व्यथित हो गई और पूरे भूमण्डल पर अत्याचार बढ़ने लगे, यज्ञ और धर्म की हानि होने लगी तब पृथ्वी ने गौ माता का रूप धर प्रजापिता ब्रह्मा से प्रार्थना की। ब्रह्मा ने सभी देवी-देवताओं के साथ श्वेत दीप पर पुरुषसूक्त के श्लाकों से भगवान विष्णु की प्रार्थना की।

तब भगवान विष्णु ने उनकी प्रार्थना से प्रसन्न होकर यह वरदान दिया कि मैं शीघ्र ही यदुवंश में कृष्ण के रूप में अवतरित होकर पृथ्वी को पाप से मुक्त कराऊंगा तथा पुन: धर्म का राज्य स्थापित होगा।

इसी रूप में द्वापर युग में भाद्र कृष्ण पक्ष की अष्टमी की अर्द्ध रात्रि को रोहिणी नक्षत्र में भगवान का अवतार हुआ। यह रात्रि कालरात्रि से भी महान रात्रि है जहां भगवान का वास्तविक रूप से प्रकटीकरण हुआ। कृष्ण भगवान ही षोडश कला सम्पन्न विष्णु के पूर्व अवतार स्वरूप हुए हैं। जिनके जीवन के प्रत्येक दिन एवं घटना का विधिवत वर्णन मिलता है। भगवान कृष्ण का नाम भक्तवत्सल कहा गया है। क्योंकि वे भक्तों के हृदय में निवास करते हैं और भक्त भगवान के हृदय में निवास करते हैं।

कृष्ण जन्माष्टमी का महत्व केवल इसलिए नहीं है कि उस दिन भगवान कृष्ण का अवतरण हुआ था। अपितु कृष्ण जन्माष्टमी एक विशेष मुहूर्त है जब कृष्ण पक्ष आधा बीत चुका होता है और आधा बाकी रहता है। अर्द्ध रात्रि का समय सामान्य रूप से काल समय माना गया है। उस काल समय में नक्षत्रों की स्थिति, ग्रहों की स्थिति एक विशेष प्रकार से होती है। केवल आरती, भजन करने से कृष्ण जन्माष्टमी पर्व नहीं मनाया जा सकता। अपितु उस समय विधिविधान सहित पूजन कर, संकल्प लेकर जो तांत्रिक, मांत्रोक्त क्रिया सम्पन्न की जाती है, वह महत्वपूर्ण है।

जन्माष्टमी के निमित्त कृष्ण के विशिष्ट पूजन की सभी सामग्री एकत्र कर लें। रात्रि या प्रात: जब भी आप पूजन करना चाहें, स्नान करके पूजा कक्ष में पीला या सफेद आसन बिछाकर उत्तर या पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठें। अपने सामने चौकी के ऊपर श्वेत वस्त्र बिछा दें, उस पर भगवान कृष्ण का चित्र अथवा उनकी प्रतिमा स्थापित करें। अपनी बाईं ओर धूप और दीप जला लें। इसके बाद हाथ जोड़कर भगवान गणपति का स्मरण करें –

प्रार्थना

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णक:।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायक:।
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजानन:।
द्वादशैतानि नामानि व: पठेच्छृणुयादपि।।
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते।।

संकल्प-दाहिने हाथ में जल, अक्षत, पुष्प तथा कुमकुम लेकर पूजन का संकल्प करें। संकल्प के पश्चात् जल को भूमि में छोड़ दें।

कलश पूजन-पंचपात्र में जल भरकर अपनी दायीं ओर स्थापित करें, उसमें वरुण देवता का आह्वान करें –

सर्वेसमुद्रा: सीरतस्तीर्धानि जलदा नदा:।
आयान्तु देव पूजार्थं दुरितक्षयकारका:।

इसके बाद वं वरुणाय नम: मंत्र बोलते हुए गन्ध, अक्षत व पुष्प को कलश में डाल कर तीर्थोका आवाहन करें –

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽअस्मिन् सन्निधिं कुरु।।
प्रसन्नो भव। वरदो भव। अनया पूजया
वरुणाद्यावाहिता देवता प्रीयन्तां न मम।

पवित्रीकरण-इसके बाद पंचपात्र के जल को आचमनी से बाएं हाथ में लेकर, दायें हाथ से अपने ऊपर छिड़कते हुए निम्न मंत्र का उच्चारण करें –

ॐ अपवित्र: पवित्रो वा सर्वास्थां गतोऽपि वा।
य: स्मरेत् पुण्डरीकाक्ष: स: बाह्याभ्यन्तर: शुचि:।।

गुरुपूजन-दोनों हाथ जोड़कर गुरुदेव का ध्यान करें –

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुदेवो महेश्वर:।
गुरु: साक्षात् पर ब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नम:।

इसके बाद गंध, अक्षत, पुष्प तथा धूप दीप से पंचोपचार पूजन करें। फिर सामने चौकी पर भगवान कृष्ण का सुन्दर चित्र स्थापित करें तथा षोड़शोपचार पूजन करें –

ध्यान-

वंशी विभूषित करान्नय नील दाभात्,
पीताम्बरादरुण बिम्ब फलाधरोष्ठात्।
पूर्णेन्दु सुन्दर मुखादर बिम्ब नेत्रात्,
कृष्णात् परं किमपि तत्वमहं न जाने।।

त्रेतायुग के पूर्व काल में आदिति और कश्यप के गर्भ से वामन देव के रूप में तथा त्रेता युग के ही उत्तर काल में दशरथ और कौशिल्या के गर्भ से राम के रूप में तथा द्वापर युग में वसुदेव और देवकी के पुत्र के रूप में भगवान कृष्ण ने अवतरण किया।

श्रीकृष्णाय नम: ध्यानं समर्पयामि।

आसन-पुष्प लेकर किसी थाली में आसन के रूप में स्थापित कर लें और उस पर श्रीकृष्ण विग्रह स्थापित कर निम्न मंत्र का उच्चारण करें –

रम्यं सुशोभनं दिव्यं सर्व शान्तिकरं शुभं,
आसनं च मया दत्तं गृहाण परमेश्वर।
श्रीकृष्णाय नम: आसनं समर्पयामि।

पाद्य-दो आचमनी जल श्रीकृष्ण विग्रह पर चढ़ा दें –

गंगोदकं निर्मलं च सर्व सौग्रध्य संयुतम्,
पाद प्रक्षालनार्थाय दत्तं ते प्रतिगृह्यताम्।
श्रीकृष्णाय नम: पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्य-किसी पात्र में जल लेकर, उसमें कुंकुम तथा अक्षत मिला कर अर्घ्य प्रदान करें –

अर्घ्यं गृहाण देवेश गन्ध पुष्पाक्षतै: सह,
करुणा कर मे देव गृहाणाऽर्घ्यं नमोऽस्तुते।
श्रीकृष्णाय नम: अर्घ्य समर्पयामि।

आचमनीय-आचमनी से तीन बार जल विग्रह पर चढ़ाते हुए निम्न मंत्र का उच्चारण करें –

सर्व तीर्थ समानीतं सुगन्धिं निर्मलं जलं,
आचम्यतांमया दत्तं गृहाण परमेश्वर।
श्रीकृष्णाय नम: आचमनीयं समर्पयामि।

मधुपर्क-

किसी पात्र में मधु, घृत, दधि मिलाकर विग्रह पर चढ़ावें –
इदं मधुपर्क श्रीकृष्णाय निवेदयामि नम:।

स्नान-आचमनी से जल चढ़ाते हुए निम्न मंत्र उच्चरित करें –

वृन्दावन विहारेण श्रान्ते विश्रान्ति कारकं।
चन्द्रपुष्कर पानीयं गृहाण पुरुषोत्तम।।
श्रीकृष्णाय नम: स्नानं समर्पयामि।

पंचामृत स्नान

ॐ पंच नध: सरस्वतीमपियन्ति सस्त्रोतस:।
सरस्वती तु पंचधा सो देशेऽभवत्सरित्।
श्रीकृष्णाय नम: पंचामृत स्नानं समर्पयामि।

पंचामृत से स्नान के पश्चात् भगवान कृष्ण विग्रह को शुद्ध जल से स्नान कराकर, पोंछ लें। निम्न वस्तुओं को अब विग्रह पर चढ़ावें।

वस्त्र-निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए उत्तम कोटि का पीला वस्त्र तथा उत्तरीय वस्त्र भगवान को पहना दें तथा उनके स्थापन निमित्त जो आसन है, उस पर स्थापित करें –

इदं परिधेय वस्त्रं उत्तरीय वस्त्रं च श्रीकृष्णाय निवेदयामि नम:

आभूषण-हार, मुकुट-मणि, कड़े आदि गहने भगवान को पहनाते हुए इस मंत्र को बोलें –

इमानि भूषणानि श्रीकृष्णाय निवेदयामि नम:।

गन्ध-केशर, कपूर मिश्रित चन्दन लेकर भगवान कृष्ण के मस्तक पर लगावें –

इमं गन्धं श्रीकृष्णाय निवेदयामि नम:।

अक्षत-हल्दी या कुमकुम से रंगे चावल विग्रह पर चढ़ाएं:-

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुंकुमाक्ता: सुशोभिता:।
मया निवेदिता भक्तत्या गृहाण परमेश्वर।
श्रीकृष्णाय नम: अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पहार-सुगंधित नाना प्रकार के पुष्प तथा पुष्प माला विग्रह पर चढ़ावें और निम्न मंत्र का उच्चारण करें –

इमानि पुष्पाणि श्रीकृष्णाय निवेदयामि नम:।

तुलसी दल-तुलसी दल पर चन्दन लगाकर निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चढ़ाएं –

इदं सचन्दनं तुलसीदलं
श्रीकृष्णाय निवेदयामि नम:।

धूप-निम्न मंत्र बोलते हुए धूप अर्पण करें –

इमं धूपं श्रीकृष्णाय निवेदयामि नम:।

दीप-श्रीकृष्ण को दीप दिखाए –

इमं दीपं श्रीकृष्णाय निवेदयामि नम:।

नैवेद्य-स्वच्छ थाली में भोज्य पदार्थ सजाकर भगवान के सामने रखें, साथ में एक गिलास पानी भी रखें ओर निम्न मंत्र भी बोलें –

ॐ क्लीं कृष्णाय गोविन्दाय गोपीजन वल्लभाय स्वाहा।

इस मंत्र का उच्चारण करके निम्न मंत्र बोलें -

इदं नैवेद्यं श्रीकृष्णाय निवेदयामि नमः।

इसके बाद इन मंत्रों से पांच बार आचमन करायें -

ॐ प्राणाय स्वाहा।
ॐ अपानाय स्वाहा।
ॐ व्यानाय स्वाहा।
ॐ उदानाय स्वाहा।
ॐ समानाय स्वाहा।

फल-अनेक प्रकार के ताजे और मीठे फल थाली में सजाकर भगवान को अर्पित करें -

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव,
तेन में सफला वाप्तिः भवेजन्मनि जन्मनि।

ताम्बुल-मुख शुद्धि के लिए ताम्बूल भगवान को अर्पित करें -

एतत् ताम्बूलं श्रीकृष्णाय निवेदयामि नमः।

पुष्पांजलि-आरती के बाद फिर दोनों हाथ में पुष्प लेकर भगवान कृष्ण को अर्पित करें -

नाना सुगन्ध पुष्पाणि यथा कालोद्भवानि च,
पुष्पांजलि मया दत्ता गृहाण परमेश्वर।
श्रीकृष्णाय पुष्पांजलि समर्पयामि नमः।

नमस्कार-दोनों हाथ जोड़े -

कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने।
प्रणतक्लेशनाशाय गोविन्दाय नमो नमः।।
श्रीकृष्णाय नमः नमस्कारोमि।

इसके बाद निम्न मंत्र का तीन माला वैजयंती माला से मंत्र जप करें -

।। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।।

विशेषार्घ्य

आचमनी में अक्षत, पुष्प एवं कुमकुम लेकर निम्न सन्दर्भ को बोलते हुए भगवान को अर्पित करें -

अनया पूजया श्रीकृष्णः परमात्माः देवता प्रीयन्ताम्।

ॐ तत्सद् ब्रह्मार्पणमस्तु।

इसके बाद अपने समस्त स्वजनों के साथ प्रसाद ग्रहण करें।

आरती

कुंज बिहारी की

आरती कुंज बिहारी की
श्री गिरधर कृष्णमुरारी की
गले में वैजंतीमाला,
बजावै मुरली मधुर बाला।
श्रवन में कुण्डल झलकाला,
नंदके आनँद नँदलाला
गगन सम अंग कान्तिकाली,
राधिका चमक रही आली,
लतन में ठाढ़े बनमाली,
भ्रमर-सी अलक,
कस्तूरी-तिलक, चन्द्र सी झलक,
ललितछबि, श्यामा प्यारी की।
श्री गिरधर कृष्णमुरारी की, आरती कुंज बिहारी की......
कनकमय मोर मुकुट बिलसै,
देवता, दरसन कों तरसैं,
गगन सों सुमन रासि बरसै,
बजे मुरचंग,
मधुर मिरदंग, ग्वालनी संग,
अतुल रति गोपकुमारी की।
श्री गिरधर कृष्णमुरारी की, आरती कुंज बिहारी की......
जहाँ ते प्रगट भई गंगा,
कलुष कलि हारिणी श्री गंगा,
स्मरन ते होत मोह-भंगा,
बसी शिव सीस, जटाके बीच,
हरै अघ-कीच,
चरण छबि श्री बनवारी की।
श्री गिरधर कृष्णमुरारी की, आरती कुंज बिहारी की......
चमकती उज्वल तट रेनू,
बज रही बृंदाबन बेनू,
चहूँ दिसि गोपि ग्वाल धेनू,
हँसत मृदु मंद, चांदनी चन्द,
कटत भव-फन्द,
टेर सुनु दीन-भिखारी की।
श्री गिरधर कृष्णमुरारी की, आरती कुंज बिहारी की......

• हरितालिका दिवस : 09.09.21

जीवन में रस की वर्षा होती है

अन्नपूर्णा साधना सिद्धि से

'विश्वामित्र संहिता' में कहा गया है

कि अन्नपूर्णा देवी रत्न, आभूषण, वस्त्र, अन्न, भूमि, की जनक है और स्थिर लक्ष्मी का साकार स्वरूप है जिसकी साधना प्रत्येक गृहस्थ पुरुष स्त्री को अवश्य सम्पन्न करनी चाहिए, यह वही अद्वितीय साधना है जिसे अपनी पूर्णता के लिए 'देवाधिदेव भगवान शिव' को भी सम्पन्न करनी पड़ी।

जिस प्रकार के वातावरण में हम रहते हैं, जिस भूमि पर निवास करते हैं तथा जो भूमि व्यक्ति की कार्य स्थली है, यह सारी बातें, मनुष्य के चिन्तन, कार्य क्षमता को सबसे अधिक प्रभावित करती हैं और जिस घर में सुख-शान्ति नहीं होती है। उस घर में लक्ष्मी का कभी वास नहीं होता, *लक्ष्मी का अर्थ केवल रुपया ही नहीं है, अपितु धन, धान्य, वस्त्र, जमीन, प्रेम-स्नेह, सुलक्षणा पत्नी, सुयोग्य संतान, सुयोग्य मित्र आदि हैं। शास्त्रों में लक्ष्मी का सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्वरूप अन्नपूर्णा है।* इसका तात्पर्य यह है कि जिस घर में अन्नपूर्णा देवी का निवास रहता है। उसको केवल अपने भरण-पोषण संबंध चिन्ताएं ही नहीं, अन्य किसी भी प्रकार की चिन्ताओं का सामना नहीं करना पड़ता।

मन्त्र महोदधि में कहा गया है, कि-

कुबेरो यामुपास्याशु
लब्धवान्निधिनाथताम्।
शम्भोः संख्यं दिगीशत्वं
कैलासाधिशतामपि।।

अर्थात् अन्नपूर्णा देवी का महत्व इतना है कि स्वयं कुबेर जो कि लक्ष्मी के प्रदाता हैं, इसकी साधना करने से निधियों के नाथ हो गये, भगवान शिव के साथ मित्रता हो गई, दिक्पालत्व प्राप्त हो गया तथा कैलाश का स्वामित्व प्राप्त कर लिया।

रुद्रयामल तंत्र में कहा गया है, कि सौम्य मूर्ति, पूर्ण चन्द्रमा के समान मुख वाली मोती की माला धारण किये हुए आशीर्वाद मुद्रा युक्त हस्त वाली अन्नपूर्णा के ध्यान`स सात जन्मों की दरिद्रता का नाश होता है। **शारदा तिलक** में कथन है, कि *क्षुद्रता, दारिद्रताविनाशिनी, तेजस्व रूपिणी, प्रिय प्रेरणादायनी, सुख शासन की देवी अन्नपूर्णा देवी की साधना समस्त दृष्टियों से सुख प्रदान करने वाली हैं।*

यदि कोई स्त्री इस साधना को सम्पन्न करती है, तो वह पति की अत्यन्त प्रिय होती है और उसका प्रभाव पूरे परिवार पर स्थिर हो जाता है।

यह साधना व्यक्ति के जीवन में स्फूर्ति एवं आनन्द देने वाली साधना है और इसे सम्पन्न करने से कर्ज सम्बन्धी चिन्ताएं पूर्ण रूप से दूर हो जाती हैं।

विश्वामित्र संहिता में कहा गया है कि अन्नपूर्णा देवी रत्न, आभूषण, वस्त्र, अन्न, भूमि की जनक है। स्थिर लक्ष्मी का साकार स्वरूप है, जिसकी साधना प्रत्येक गृहस्थ पुरुष स्त्री को अवश्य सम्पन्न करनी चाहिए।

उपरोक्त सभी ऐसे शास्त्रोक्त कथन एवं जीवन के सत्य हैं, जिनसे मुंह नहीं मोड़ा जा सकता है। दुःख की समाप्ति के बिना सुख संभव नहीं है और सुख की पूर्णता के पश्चात् ही जीवन में पूर्णता है।

तान्त्रिक साधनाओं को सम्पन्न करने के लिए ही विशेष मुहूर्त की आवश्यकता होती है। उचित समय पर ही साधना सम्पन्न करने से साधना का फल कई गुना अधिक प्राप्त होता है।

अन्नपूर्णा देवी की साधना **हरि तालिका दिवस** (भाद्रपद शुक्ल तृतीय तदनुसार 09.09.21) को ही सम्पन्न की जानी चाहिए। उस दिन पूरे परिवार के साथ प्रसन्न मन से इसे सम्पन्न करें। हरितालिका अन्नपूर्णा दिवस है, क्योंकि इस समय वर्षा ऋतु अपना मधुर प्रभाव पृथ्वी पर देते हुए जलाशयों को पूर्ण कर देती है। अन्नपूर्णा तो परिपूर्णता की देवी है, अतः शास्त्रों में कहा गया है, कि इस शुभ दिवस के दिन ही यह साधना सम्पन्न करनी चाहिए।

साधना प्रयोग

अन्नपूर्णा की इस साधना का क्रम एवं नियम कुछ विशेष प्रकार के हैं, जिनका विशेष रूप से पालन आवश्यक है। पूर्ण सामग्री के साथ नियम से साधना क्रमानुसार सम्पन्न करने से ही साधना में अभिष्ट सिद्धि प्राप्त होती है। जहाँ तक सम्भव हो सके नियमों का भलीभांति प्रयोग करना चाहिए।

इस विशेष साधना में **'सात हकीक पत्थर', 'एक अन्नपूर्णा नारियल'** तथा एक **'हरितमाला'** आवश्यक है। इसके अतिरिक्त अष्टगंध, सुपारी, गेहूं, कुंकुम, गुलाल, तांबे का पात्र, जल, पुष्प, फल, प्रसाद साधना प्रारम्भ करने से पहले रख दें।

साधना क्रम

यदि पूरे परिवार के साथ यह साधना सम्पन्न कर सकते हैं, तो अवश्य सम्पन्न करें और सम्भव हो तो पति-पत्नी दोनों साथ-साथ साधना सम्पन्न करें। इस दिन स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर पूजा स्थान

शास्त्रों में लक्ष्मी का सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्वरूप है 'अन्नपूर्णा' इसका तात्पर्य यह है कि जिस घर में अन्नपूर्णा देवी का निवास रहता है उसको केवल अपने भरण-पोषण सम्बन्धी चिन्ताएं ही नहीं अन्य किसी भी प्रकार की चिन्ताओं का सामना नहीं करना पड़ता है।

में बैठें, सामने हरा वस्त्र बिछाकर दिये गये चित्र के अनुसार गेहूं से नौ खानों का यह विशिष्ट 'पन्द्रहिया यंत्र' बनायें जो कि अन्नपूर्णा देवी का मूल यंत्र है। प्रत्येक खाने में दिये गये चित्र के अनुसार संख्या लिख दें, फिर सात हकीक नग स्थापित करें तथा यंत्र के आगे भी गेहूं की ढेरी बनाकर उस पर अन्नपूर्णा नारियल स्थापित करें।

नित्यायै नमः, छठे में ॐ विलासिन्यै नमः, सातवें में ॐ दोग्धयै नमः, आठवें में ॐ मंगलायै नमः, नवम खाने में ॐ लक्ष्म्यै नमः कहकर सुपारी रखें।

इस प्रकार नव शक्तियों की पूजा करने के पश्चात् **ॐ नमः शिवाय** मंत्र का 11 बार जप करें। प्रत्येक मंत्र के साथ सामने एक बिल्व पत्र अर्पित करें।

शिव पूजन के पश्चात् अन्नपूर्णा जो कि लक्ष्मी स्वरूप है, का ध्यान करते हुए प्रार्थना करें कि *'हे अन्नपूर्णा देवी! आप अन्न, धन, धान्य एवं देहादिक सुख देने वाली हैं, अतः मुझे यह सब प्रदान करें।'*

**हरितालिका अन्नपूर्णा दिवस है,
क्योंकि इस समय वर्षा ऋतु अपना मधुर प्रभाव पृथ्वी पर देते हुए जलाशयों को पूर्ण कर देती है।
अन्नपूर्णा तो परिपूर्णता की देवी है,
अतः शास्त्रों में कहा गया है, कि इस शुभ दिवस के दिन ही यह साधना सम्पन्न करनी चाहिए।**

सर्वप्रथम संक्षिप्त रूप से गुरु पूजन के पश्चात् अन्नपूर्णा देवी का ध्यान करें, ध्यान मंत्र निम्न है-

**तप्तस्वर्णनिभा शशांकमुकुटा रत्नप्रभासुरा
नानावस्त्रविराजितात्रिनयना भूमीरमाभ्यां युता।।
दर्वीहाटकभाजनं च दधतीरम्पोच्चपीनस्तनी
नृत्यन्तंशिवभासकल्यमुदिता ध्यायेन्नपूर्णेश्वरी।।**

अर्थात् तपे हुए सोने के समान कान्ति वाली चन्द्र मुकुट धारण किये हुए रत्नों एवं नाना वस्त्रों वाली शिव माहेश्वरी अन्नपूर्णा देवी, आपका मैं ध्यान करता हूं।

पन्द्रहिया यंत्र

८	१	६
३	५	७
४	९	२

ऊपर चित्रानुसार जो 'पन्द्रहिया यंत्र' बनाया है, वे नौ खाने नौ पीठ शक्तियों के प्रतीक हैं। इनमें सर्वप्रथम पहले खाने में हकीक पत्थर पर हाथ रखते हुए सुपारी रखें, और ॐ अजायै नमः, दूसरे खाने में ॐ विजयायै नमः, तीसरे खाने में ॐ अपरायै नमः, चौथे खाने में ॐ अपराजितायै नमः, पांचवे में ॐ

इस पूजन क्रम में घी का दीपक निरन्तर पूजा स्थान में जलते रहना चाहिए। देवी के समक्ष फल, प्रसाद अर्पित करें तथा अपनी समस्त शक्तियों को प्रेरित करते हुए प्रसन्न मन से अन्नपूर्णा मंत्र का मंत्र सिद्ध प्राणप्रतिष्ठा युक्त हरित माला से जप करें।

अन्नपूर्णा मंत्र

**।। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमो भगवति माहेश्वरि
समाशिमतमन्नं देहि देहि अन्नपूर्णायै नमः।।**

इस अत्यन्त शक्तिशाली सौभाग्य प्रदायक मंत्र की उसी स्थान पर बैठे हुए पांच माला मंत्र जप करें। जब जप कार्य समाप्त हो जाय तब अन्नपूर्णा देवी की आरती सम्पन्न करें। जब साधना क्रम पूर्ण हो जाए, तो अन्नपूर्णा नारियल अपने घर में रख दें तथा हकीक पत्थर सरोवर अथवा कुएं में अर्पित कर दें। पूजा कार्य में प्रयोग आये गेहूं किसी पीपल के वृक्ष के नीचे डाल दें जहां कि पक्षी इन्हें चुग सकें।

साधना की पूर्णता के पश्चात् अपनी श्रद्धा के अनुसार ब्राह्मण को भोजन करायें एवं वस्त्र दान इत्यादि करें। अन्नपूर्णा साधना के संबंध में कहा गया है कि त्रैलोक्य रक्षक पवित्र मंत्र का ध्यान एवं पाठ करने में सभी देवगणों को सुफल प्राप्त हुआ है तथा इसकी सिद्धि के फलस्वरूप ही ब्रह्म, विष्णु, महेश तथा रुद्र प्रत्येक कल्प में सृष्टि का सृजन, पालन एवं संहार करते हैं।

अन्नपूर्णा पुरश्चरण सम्पन्न कर भोजपत्र पर इसे लिखकर चांदी के ताबीज में रखकर कंठ में धारण करने से साधक को वाक्‌सिद्धि प्राप्त हो जाती है। दक्षिण भुजा में इसे धारण करने से साधक के सभी दोष दूर हो जाते हैं तथा शत्रुओं का प्रहार उसे स्पर्श नहीं कर पाता है।

साधना सामग्री- 570/-

टमाटर

टमाटर में पोषक तत्व काफी मात्रा में होने से साग-सब्जियों एवं फलों में सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। शरीर संवर्धन के लिए उपयोगी मुख्य द्रव्य लौह एवं अन्य क्षार टमाटर में प्रचुर मात्रा में विद्यमान होते हैं।

टमाटर भारत में सब स्थानों पर होते हैं। उत्पादन की दृष्टि से समस्त विश्व में आलू एवं शकरकन्द के बाद टमाटर का क्रम आता है। टमाटर का उपयोग भी समस्त विश्व में अधिकाधिक होता है।

सामान्यत: वर्ष में दो बार, वर्षा ऋतु एवं शीतकाल में टमाटर बोए जाते हैं। हालांकि यह वर्षभर बाजार में उपलब्ध रहते हैं। टमाटर की कई किस्में होती हैं। आकार, रंग एवं स्वाद में भी भिन्नता होती है। आकार में बड़े टमाटर गुणों की दृष्टि से उत्तम माने जाते हैं। हरे रंग के कच्चे टमाटर खट्टे एवं पाचन की दृष्टि से हल्के होते हैं। पके टमाटर का स्वाद खट्टा-मीठा होता है। शरीर के लिए आवश्यक मूल्यवान पोषक तत्व इसमें निहित हैं। टमाटर के सेवन से रक्त में रक्तकण बढ़ते हैं एवं फीकापन दूर होता है साथ ही जठराग्नि तेज होती है। पाचन क्षमता में वृद्धि होने के साथ-साथ रक्त एवं पित्त से संबंधित अनेक रोग दूर होते हैं।

- **गुणधर्म**–टमाटर रस विपाक में खट्टे, रुचिकर, अग्निप्रदीपक, पाचक, रक्तशोधक, अग्निमांद्य, उदरशूल, मेदवृद्धि एवं रक्त विकार में हितकारी हैं। इसके अलावा अर्श, पाण्डु, जीर्ण, कब्ज दूर करते हैं। हृदय को तृप्त करने वाले लघु, उष्ण, स्निग्ध है। वात कफ प्रकृतिवालों के लिए विशेष हितकारी होते हैं।

टमाटर विभिन्न रोगों में लाभदायक है, जो इस प्रकार है–

- **विटामिन्स और खनिजों की प्राप्ति का मुख्य स्त्रोत**–पके टमाटर से विटामिन ए, बी, सी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होते हैं। सन्तरे एवं अंगूर में भी इतनी मात्रा में विटामिन नहीं होते जितने टमाटर में हैं। इसमें पाए जाने वाले विटामिन गर्म करने से नष्ट नहीं होते।

  विटामिन ए, बी, सी का मुख्य स्त्रोत होने से टमाटर हमारे शरीर के लिए बेहद लाभप्रद है। विटामिन 'ए' आंखों की अच्छी रोशनी एवं स्वस्थ त्वचा के लिए आवश्यक है। विटामिन 'बी' हृदय, मस्तिष्क एवं स्नायुओं को शक्ति प्रदान करता है। शरीर को चुस्त व जवान रखता है। पाचन शक्ति को स्थिर रखता है। विटामिन 'सी' शरीर को रोगों से लड़ने की शक्ति प्रदान करता है। स्वस्थता एवं शक्ति प्राप्त करने हेतु विटामिन 'सी' शरीर के लिए अत्यंत आवश्यक है। इसकी कमी से रक्त की कमी होने लगती है। वजन घटने लगता है। हड्डी के जोड़ों में पीड़ा, दांतों एवं मसूड़ों के रोग, रक्तस्राव आदि रोग होने लगते हैं।
- **लोहा**–टमाटर में लोहा तत्व प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। लोहा तत्व रक्त साफ करने एवं रक्त बढ़ाने हेतु हमारे शरीर के लिए आवश्यक है। मांस तन्तुओं में ऑक्सीजन ले जाने में यह रक्त की सहायता करता है। एक गिलास टमाटर का रस पीने से रक्तहीनता दूर होकर रक्त में वृद्धि होती है।
- **चूना**–अन्य फल-सब्जियों की अपेक्षा टमाटर में चूना बहुतायत से पाया जाता है, यह दांतों एवं हड्डियों की मजबूती हेतु अत्यंत आवश्यक है। चूंकि टमाटर से भी इसकी प्राप्ति होती है अत: यह हमारे लिए महत्वपूर्ण है।
- **शक्तिवर्द्धक**–जैसा कि स्पष्ट कर चुके हैं, टमाटर पोषक तत्वों की प्राप्ति का प्रमुख स्त्रोत है एवं इन्हीं तत्वों के कारण यह शक्तिवर्द्धक भी है। इसके सेवन से रक्तवृद्धि के साथ-साथ यकृत एवं फेफड़ों को शक्ति मिलती है। इसके सेवन से रक्तचाप नियंत्रित रहता है।
- **पाचन क्षमता में वृद्धि**–टमाटर का नियमित प्रयोग करने से पाचन शक्ति ठीक रहती है। दस्त साफ आता है एवं कब्ज नहीं होती। बड़ी आंत को

ताकत देता है। टमाटर अमाशय के विष को बाहर निकालकर स्वस्थ बनाए रखने में सहायक है।

- **वमन**–टमाटर के रस में शक्कर मिलाकर, एक-दो रत्ती इलायची के दानों का चूर्ण मिलाकर पीने से उल्टी बंद होती है। पेट की गड़बड़ी शान्त होकर घबराहट दूर होती है।
- **अग्निमांद्य**–टमाटर के टुकड़े कर उन पर सौंठ एवं सेंधा नमक का चूर्ण छिड़क कर खाने से अग्निमांद्य एवं भोजन के प्रति अरुचि दूर होती है।
- **कृमि रोग**–टमाटर के रस में हींग का बघार लगाकर पीने से कृमि रोग में लाभ होता है। भूखे पेट लाल टमाटर, काली मिर्च एवं नमक मिलाकर खाने से भी कृमि मर जाते हैं।
- **कब्ज**–ताजे पके हुए टमाटर पानी से साफ करके दिन में भोजन से पहले छिलके सहित खाने एवं रात को सोने से पहले खाने से कब्जियत धीरे-धीरे दूर होती है।
- **मोटापा कम करने में लाभप्रद**–टमाटर के नियमित सेवन से शरीर के विजातीय द्रव्य, पदार्थ, आंत में रुका हुआ भोजन शरीर से बाहर निकलता है। जो व्यक्ति वजन कम करने हेतु भोजन पर नियंत्रण रखते हैं, व्यायाम करते हैं उनके लिए तो टमाटर का सेवन विशेष हितकारी है।

  प्रतिदिन कच्चा टमाटर, नींबू, नमक एवं प्याज के साथ सेवन करने से शरीर का मोटापा धीरे-धीरे घटने लगता है।
- **खुजली**–टमाटर का रस एवं उससे दुगुना खोपरे का तेल मिलाकर शरीर पर मालिश करने एवं कुछ देर के बाद कुनकुने पानी से स्नान करने से शरीर की खुजली में लाभ होता है।

  सिर में रुसी होने पर भी यह प्रयोग हितकारी है।
- **चर्म रोगों में लाभप्रद**–चर्म रोगों में टमाटर विशेष लाभप्रद है। टमाटर की खटाई रक्त को शुद्ध करती है, किन्तु रक्तशोधन के लिए टमाटर का सेवन किसी अन्य वस्तु के साथ नहीं करना चाहिए। कुछ सप्ताह तक निरन्तर टमाटर का रस पीने से चर्म रोगों में लाभ होता है। रक्त दोष के कारण त्वचा पर उठने वाले लाल चकत्ते, स्कर्वी रोग, दाद आदि को दूर करता है।
- **मधुमेह**–टमाटर की खटाई से शरीर में शर्करा की मात्रा कम होकर मूत्र शोधन होता है।

  कच्चा टमाटर खाने से त्वचा की शुष्कता (खुश्की) भी दूर होती है।
- **पीलिया**–एक गिलास टमाटर का रस पीने से पीलिया में लाभ होता है। इसके सेवन से रक्त के लाल कण बढ़ते हैं एवं यकृत को शक्ति मिलती है।
- **कमजोरी में लाभ**–टमाटर का रस पीने से भूख बढ़ती है, रक्त की कमी दूर होती है। कमजोरी एवं थकावट दूर होकर शरीर स्वस्थ बनता है, शरीर में ताजगी एवं चेहरे पर कांति आती है।
- **दांतों एवं मसूड़ों की मजबूती**–टमाटर से दांत एवं मसूड़े मजबूत बनते हैं। इसके सेवन से दांतों एवं मसूड़ों से रक्त स्राव नहीं होता, क्योंकि इसमें विटामिन 'सी' एवं कैल्शियम होता है।
- **दृष्टिवर्द्धक**–नेत्रों का तेज बढ़ता है। दृष्टि स्वच्छ होती है। टमाटर के रस के सेवन से रतौंधी में लाभ होता है, क्योंकि इसमें विटामिन 'ए' प्रचुर मात्रा में होता है।
- **सूखा रोग**–बच्चों को कच्चे टमाटर का रस नियमित पिलाने से बच्चे हृष्ट-पुष्ट एवं स्वस्थ बनते हैं एवं बच्चों को 'सूखा रोग' नहीं होता।

बच्चों के उचित शारीरिक विकास की दृष्टि से टमाटर का रस अत्यंत लाभदायक हैं। बच्चों की पाचन क्षमता बढ़ती है। शिशुओं के दांत सरतापूर्वक निकलते हैं।

टमाटर यद्यपि गुणकारी हैं, किन्तु पथरी, सूजन, संधिवात, अम्लपित्त के रोगियों के लिए हानिप्रद है।

टमाटर के साथ शक्कर का प्रयोग हितकारी है तथा टमाटर खाने के बाद पानी पीना अहितकर है।
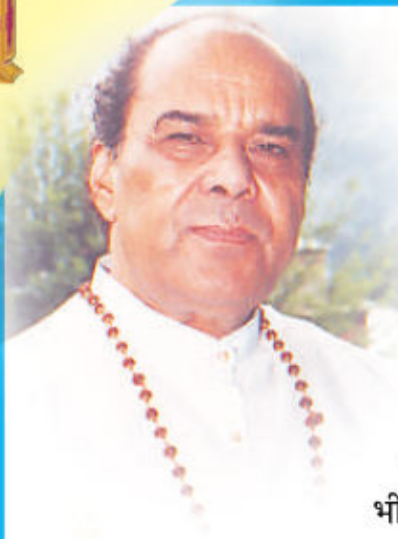
आपकी दृष्टि

एक दिन शिष्य ने गुरु से पूछा, आपकी दृष्टि में यह संसार क्या है? गुरु ने एक कथा सुनाई। एक नगर में एक शीशमहल था। उसकी हर दीवार पर सैकड़ों शीशे जड़े थे। एक दिन एक गुस्सैल कुत्ता महल में घुस गया। महल के भीतर उसे सैकड़ों कुत्ते दिखे जो नाराज और दुखी लग रहे थे। उन्हें देख वह भौंकने लगा। उसे सैकड़ों कुत्ते अपने ऊपर भौंकते दिखने लगे। वह डरकर वहाँ से भाग गया। कुछ दूर जाकर उसने मन ही मन सोचा कि इससे बुरी कोई जगह नहीं हो सकती। कुछ दिनों बाद एक अन्य कुत्ता शीशमहल पहुंचा। वह खुशमिजाज और जिंदादिल था। महल में घुसते ही उसे वहां सैकड़ों कुत्ते दुम हिलाकर स्वागत करते दिखे। उसका आत्मविश्वास बढा और उसने उत्साह में सामने देखा तो उसे सैकड़ों कुत्ते खुशी जताते नजर आए। वह महल से बाहर आया तो उसने महल को दुनिया का सर्वश्रेष्ठ स्थान और वहां के अनुभव को अपने जीवन का सबसे बढिया अनुभव माना। फिर से आने के संकल्प के साथ वह वहां से रवाना हुआ।

गुरु ने शिष्य से कहा, संसार भी ऐसा ही शीशमहल है जिसमें व्यक्ति अपने विचारों के अनुरूप ही प्रतिक्रिया पाता है। मनुष्य इस धरती का सबसे समर्थ प्राणी है। फिर वह कहे कि मैं दुखी हूँ तो स्पष्ट है कि उसे अपनी शक्ति का ज्ञान नहीं है। यही अज्ञान दुखी बना रहा है। इसलिए सबसे ज्यादा जरूरत है स्व के बोध की, अपनी शक्ति और क्षमता के पहचान की।

प्राय: यह मान लिया जाता है कि शहर का आदमी है, बहुत पैसा कमाता है, इसलिए सुखी है। गांव के गरीब आदमी के बारे में मान लिया जाता है कि थोड़ी-सी खेती है, पास में पैसा नहीं है, मजदूरी करके गुजारा करता है, इसलिए दुखी है। दुखी और सुखी होने का कारण वस्तु की सुलभता या दुर्लभता नहीं, बल्कि व्यक्ति का अज्ञान है। वास्तविकता यह है कि जिसके पास संतोष का धन है, वह अभावग्रस्त होकर भी कभी दुखी नहीं बनेगा।

गहराई से सोचें तो पाएंगे कि साधन सम्पन्नता के साथ क्रोध, आवेश, अहंकार, लोभ आदि में वृद्धि हो जाती है। लड़ाई और कलह की स्थिति बनती है तो सारा सुख गायब हो जाता है, जीवन की सरसता समाप्त हो जाती है। सुख हो या दुख, यह मनुष्य की स्वयं की उत्पत्ति है, उसके नजरिए की निष्पत्ति है।

जो लोग संसार को आनंद का बाजार मानते हैं, वे यहां से हर प्रकार के सुख और आनंद का अनुभव लेकर जाते हैं। जो लोग उसे दुखों का कारागार समझते हैं, उनकी झोली में दुख और कटुता के सिवाय कुछ नहीं बचता। इसलिए संसार गढ़ना मनुष्य के हाथ में है। जैसा हमारा नजरिया होगा, संसार वैसा ही होगा। हमें सुखी जीवन के कारणों की खोज करनी है तो वे बाहर नहीं हमारे भीतर ही विद्यमान हैं।

और भीतर खोजने का मार्ग है 'तप और साधना'। स्व का बोध एवं शक्ति और क्षमता की पहचान सिर्फ गुरु ही करा सकते हैं। इसीलिए हमारी संस्कृति में गुरु को जीवन में अत्यन्त महत्व दिया गया है जो हमारे अन्दर सुप्त पड़ी शक्ति को चैतन्य करने का मार्ग बताते हैं और जीवन को गढ़ने का कार्य करते हैं।

▪ राजेश गुप्ता 'निखिल'

मेष – माह का प्रथम सप्ताह अनुकूल है। भौतिक सुख-सुविधा में वृद्धि होगी। इस समय के कार्य भविष्य में लाभ देंगे। मित्रों की सहायता से समस्याएं हल होंगी। विदेश यात्रा का योग है। पैसे कमाने के चक्कर में गलत कार्य न करें। किसी साजिश के शिकार हो सकते हैं। वाहन खरीदी अभी न करें। शत्रु पक्ष बाधा खड़ी करेगा। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। आर्थिक तंगी हो सकती है। अचानक कोई टेंशन हो सकती है। समाज में अच्छा कार्य करेंगे। किसी उच्च स्तर के व्यक्ति से मुलाकात होगी। सकारात्मक विचार आपकी दिनचर्या को बदलेंगे। तीसरे सप्ताह के बाद के समय में आप किसी भी कार्य में दुविधा में रहेंगे। इस समय लिये निर्णय गलत हो सकते हैं। माह के अन्त में मनोकामनापूर्ण होगी। परिवार में सभी आप की प्रशंसा करंगे। आय में वृद्धि होगी, पुराने मामले निपटकर मान-सम्मान बढ़ेगा। आप इस माह **भैरव दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ – 2, 3, 4, 11, 13, 20, 21, 29, 30, 31

वृष –प्रारम्भ के दो-तीन दिन अनुकूल नहीं हैं। चित्त में प्रसन्नता नहीं रहेगी। कोई मुसीबत आ सकती है, वांछित सफल्ता नहीं मिलेगी, स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा। फिर समय में सुधार होगा। रुके कार्य पूरे होंगे। योजना सफल होगी, सरकारी कर्मचारियों के उन्नति का समय है। नया व्यापार शुरू कर सकते हैं। जमीन-जायदाद में टेंशन हो सकती है। आर्थिक नुकसान भी हो सकता है। प्रेम में सफलता मिलेगी। विद्यार्थी वर्ग पढाई में मन लगायेगा। कोई पुरानी बीमारी परेशान कर सकती है। परिवार से सहयोग नहीं मिलेगा। योजनाबद्ध तरीके से किये कार्य में सफलता मिलेगी। सूझबूझ से कार्य करें। जीवनसाथी से गलतफहमी दूर हो कर प्यार का वातावरण बनेगा, यात्रा हो सकती है। आप **भैरव साधना** करें।

शुभ तिथियाँ – 4, 5, 6, 14, 15, 22, 23, 24

मिथुन – माह का प्रारम्भ सामान्य है। खरीददारी में व्यस्त रहेंगे। जमीन-जायदाद की दिक्कतें दूर होंगी। भाइयों में प्रेम बना रहेगा। परिवार में किसी की तबियत खराब हो सकती है। शत्रुओं से सावधान हरें। प्यार में सफलता मिल सकती है। परिश्रम का फल मिलेगा। तीर्थ यात्रा का प्रोग्राम बन सकता है। जीवनसाथी से अनबन हो सकती है। तीसरे सप्ताह में कोई भी महत्वपूर्ण निर्णय सोच-समझ कर लें। विद्यार्थी वर्ग के लिए पढ़ाई हेतु अच्छा समय है। पीठ पीछे आपकी कोई निंदा करेगा। आय के साधनों में वृद्धि होगी। अटके हुये रुपये प्राप्त होंगे। आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। ऑफिस में किसी छोटी सी बात पर विवाद हो सकता है। क्रोध पर नियंत्रण रखने की आवश्यकता है। कर्मचारी वर्ग खिलाफ हो सकता है, वाहन चलाने में सावधानी रखें। कार्यों में रुकावट आयेगी। आप **सर्वबाधा निवारण दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ – 7, 8, 9, 16, 17, 24, 25, 26

कर्क – प्रारम्भ उत्साह जनक रहेगा। कोर्ट-कचहरी के मामले पक्ष में होंगे। अपने परिश्रम से मंजिल पा लेंगे। आमदनी के स्रोत बढ़ेंगे। फालतू खर्च से बचें। धार्मिक कार्यों में रुचि रहेगी। अविवाहितों के विवाह का समय है। विदेश यात्रा हो सकती है। पुत्र के कार्यों पर गर्व होगा। माह के मध्य के समय कोई नया कार्य न शुरू करें। किसी के बहकावे में कोई निर्णय न लें। गृहस्थ जीवन में तनाव रहेगा। वाणी पर संयम रखें। बुद्धि विवेक से जटिलताओं का सामना कर पायेंगे। आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। कोई जमीन का सौदा हो सकता है। शत्रु वर्ग को परास्त कर सकेंगे। आखिरी सप्ताह में कोई अशुभ समाचार मिल सकता है। निर्णय सोच-समझ कर लें। स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान रखें। **गुरु कृपा** से मुश्किलें आसान होंगी। आप गुरु कृपा दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ – 1, 9, 10, 11, 18, 19, 27, 28

सिंह – माह प्रथम सप्ताह अच्छे परिणाम ायलेगा। शत्रु को शांत कर सकेंगे। जमीन के सौदे में लाभ होगा। चलते-फिरते किसी आदमी से झगड़ा हो सकता है अत: संयम बरतें। किसी के बहकावे में कोई गलत कार्य न करें। संतान पक्ष का सहयोग मिलेगा। परिश्रम का पूरा लाभ मिलेगा। प्रयास करने पर नौकरी मिलने के अवसर हैं। विद्यार्थियों को पढ़ाई में दिलचस्पी रहेगी। माह के मध्य का समय पक्ष में नहीं होने से कोई भी कार्य सोच समझकर करें। शत्रु किसी जाल में फंसा सकते हैं। स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा। परन्तु समय के साथ स्थितियाँ बदल जायेंगी। प्यार में सफलता मिलेगी। कोई महत्वपूर्ण समाचार मिल सकता है। आखिरी सप्ताह में कोई अशुभ समाचार मिल सकता है। गलत संगति से दूर रहें। प्रतिष्ठा में आंच आ सकती है। फिजूल खर्ची से दूर रहें। व्यापार में उन्नति होने के आसार हैं। यात्रा से लाभ होगा। सकारात्मक परिणाम निकलेंगे। आप इस माह **भाग्योदय साधना** करें।

शुभ तिथियाँ – 2, 3, 4, 12, 13, 20, 21, 22, 29, 30

कन्या – प्रारम्भ में खराब परिणाम मिलेंगे। स्वास्थ्य खराब रहेगा। आशा के विपरीत परिणाम आयेंगे। विरोधियों से सावधान रहें। आप शत्रु पक्ष को उत्तर देने में सक्षम हैं। रुके हुये रुपये प्राप्त होंगे, उच्च अधिकारियों से सार्थक बातचीत रहेगी। विद्यार्थी वर्ग के लिए अच्छा समय है। लेन-देन के कार्यों में सम्भल कर लेन-देन करें। किसी ओर

के कारनामे सहन करने पड़ सकते हैं। शत्रुओं से सावधान रहें। किसी के बहकावे में न आयें। माह के मध्य में स्थितियाँ बदलेंगी। प्यार में सफलता मिलेगी। परिश्रम का पूरा लाभ मिलेगा, कोई पुरानी बीमारी उग्र हो सकती है। विद्यार्थी वर्ग का मन पढ़ाई में लगेगा। संतान के क्रियाकलापों पर ध्यान रखें। बदनामी का भय रहेगा। शत्रु वर्ग को परास्त कर सकेंगे। जीवनसाथी का सहयोग मिलेगा, राजनीतिक क्षेत्र में सफलता मिलेगी। यात्रा में लाभ के अवसर है। आप **बगलामुखी दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 4, 5, 6, 14, 15, 22, 23, 30, 31

तुला - माह के प्रारम्भ के दिनों में कार्य क्षेत्र में उन्नति होगी। परिवार में सभी का सहयोग प्राप्त होगा। इसके बाद कोई भी कार्य सोच-विचार कर करें। कोई भी विश्वासघात कर सकता है। कोर्ट केस में कामयाबी मिलेगी। माह के मध्य में कोई अशुभ समाचार मिल सकता है। विवादों से दूर रहें, अपने ही हानि पहुँचा सकते हैं। नौकरीपेशा लोगों की पदोन्नति के अवसर हैं। विद्यार्थी वर्ग को सफलता मिलेगी। आकस्मिक धन लाभ सम्भव है, फालतू खर्चों पर नियंत्रण रखें। रोजगार के अवसर उपलब्ध होंगे। अचानक यात्रा भी हो सकती है, किसी ऐसे व्यक्ति से मुलाकात होगी जिससे जीवन में बदलाव सम्भव है। घर में मांगलिक कार्यक्रम होगा, जीवनसाथी से सुख एवं सहयोग मिलेगा। वाहन धीमे चलायें। किसी से उलझें नहीं। व्यापार में अचानक नुकसान हो सकता है। आप **प्रत्यंगिरा साधना** करें।

शुभ तिथियाँ - 7, 8, 9, 16, 17, 24, 25, 26

वृश्चिक - सप्ताह की शुरूआत सफलतादायक रहेगी। जमीन के सौदे में लाभ होगा। कोई व्यक्ति आपको हानि पहुंचाने की कोशिश करेगा। नशीले पदार्थों से दूर रहें। आर्थिक स्थिति अच्छी होगी। अकस्मात् भाग्य जागरण हो सकता है। सहायकों एवं सहकर्मियों का सहयोग मिलेगा। पति-पत्नी के मध्य प्यार का वातावरण रहेगा। मित्रों से सावधान हरें। संतान की उच्च शिक्षा का मार्ग प्रशस्त होगा। यात्रा हो सकती है। किसी अच्छे व्यक्ति की मुलाकात प्रेरणा देगी। स्वास्थ्य पर ध्यान दें, परेशानी आ सकती है। दूसरों के प्रपंचों में टांग न अड़ायें। खर्च की अधिकता रहेगी। आखिरी सप्ताह थोड़ा अनुकूल नहीं है। कोई अशुभ समाचार मिल सकता है। आलस्य न करें। अन्यथा आर्थिक नुकसान हो सकता है। अविवाहितों का विवाह सम्भव है। आप **भाग्योदय साधना** करें या दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 1, 9, 10, 11, 18, 19, 27, 28, 29

धनु - माह का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। प्रॉपर्टी के कार्यों में लाभ होगा, रुके हुये रुपये प्राप्त होंगे। विद्यार्थियों के ज्ञान का विकास होगा। अड़चनें आयेगी, अपनी गलत आदतों को छोड़ें। मान-प्रतिष्ठा को ठेस लगेगी। कोई महत्वपूर्ण वस्तु खो सकती हैं शत्रुओं से सावधान रहें। कोई अधूरा कार्य पूर्ण होगा। कोई शुभ समाचार भी अचानक मिल सकता है। किसी और के वाद-विवाद में न पड़ें वर्ना बेवजह परेशान होंगे। परिश्रम का पूरा-पूरा लाभ मिलेगा। आमदनी में वृद्धि होगी। जीवनसाथी से अनबन हो सकती है। बेरोजगारों को रोजगार के उचित अवसर मिलेंगे। आखिरी सप्ताह में लाभ के साथ हानि भी उठानी पड़ सकती है। घरेलू समस्याओं में उलझ सकते हैं।परिवार में तनाव रहेगा। कार्य सोचे अनुसार नहीं होंगे। शत्रुओं को जवाब देने में सक्षम रहेंगे। आप इस माह **नवार्ण दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 2, 3, 4, 11, 12, 13, 20, 21, 22, 30, 31

मकर - सप्ताह का प्रारम्भ कोई प्रतिकूल घटना से होगा। धैर्यपूर्वक निर्णय लें। बिना समझे किसी भी पेपर पर हस्ताक्षर न करें। कार्य क्षेत्र में उन्नति होगी। जीवनसाथी का सहयोग मिलेगा। भूमि आदि खरीदने में

सर्वार्थ सिद्धि योग	- अगस्त-4, 6, 14, 16, 21, 26, 27, 30
रवि योग	- अगस्त-11, 13, 16, 17, 18, 21
रवि पुष्य योग	- अगस्त-8 (प्रातः 6.11 से प्रातः 9.18 तक

लाभ मिलेगा। मेहनत व्यर्थ नहीं जायेगी। नौकरीपेशा लोगों को उच्चाधिकारियों से बहस नहीं करनी चाहिए। स्टाफ भी साथ नहीं देगा। झूठा आरोप लग सकता है। स्वास्थ्य ठीक रहेगा। शत्रु व्यापार में नुकसान पहुंचाने की कोशिश करेंगे। मन उच्चाट रहेगा। वाद-विवाद में न पड़ें। मानसिक स्थिति कमजोर रहेगी। किसी मुसीबत में फंस सकते हैं। भाइयों का सहयोग मिलेगा, व्यापारिक यात्रा हो सकती है। माह के अंत में कोई अशुभ समाचार मिल सकता है। जल्दबाजी में निर्णय न लें। लापरवाही जीवन को कष्ट में डाल सकती है। आप **भैरव दीक्षा प्राप्त** करें।

शुभ तिथियाँ - 4, 5, 6, 14, 15, 22, 23, 24

कुम्भ - प्रारम्भ शुभप्रद रहेगा आपकी मेहनत से उन्नति होगी। सभी से मधुर सम्बन्ध बनेंगे। नौकरीपेशा के पदोन्नति के अवसर हैं। अत्यन्त मेहनत की आवश्यकता है। छोटी-छोटी बातों में उलझें नहीं, विवाद बढ़ेंगे। आत्मविश्वास बढ़ा रहेगा। परेशानियों से डटकर मुकाबला करेंगे। यात्रा सफलता देगी। पुराने मित्रों से मुलाकात होगी। माह के मध्य में सचेत रहें, इस समय निर्णय गलत हो सकते हैं, मित्र भी धोखा दे सकते हैं। जल्दी रुपया कमाने के चक्कर में न पड़ें। विद्यार्थियों का मन पढ़ाई में लगा रहेगा। फैसले आपके पक्ष में होंगे। आर्थिक मामलों में सुधार होगा, परेशानियाँ कम होगी। परिवार में किसी सदस्य का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा। जोखिमपूर्ण कार्यों से बचें। अन्तिम सप्ताह में परिवार में सभी सहयोग करेंगे, प्रसन्नता मिलेगी। किसी बीमारी से ग्रसित हो सकते हैं। वाद-विवाद हो सकते हैं। आप **रोग निवारण दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 7, 8, 9, 16, 17, 24, 25, 26

मीन - प्रारम्भ किसी शुभ घटना से होगा। आप सूझ-बूझ से कई परेशानियों का हल निकालने में सफल होंगे, मित्रों का सहयोग रहेगा। विरोधी पक्ष से सम्भल कर रहें। विद्यार्थियों का मन पढ़ाई में नहीं लगेगा। कुछ समय धैर्यपूर्वक कार्य करें। जीवनसाथी से मतभेद दूर होकर प्रेमपूर्ण व्यवहार रहेगा। सहयोग करेंगे। किसी नये व्यक्ति से मुलाकात व्यापार में प्रेरणा देगी। माह के मध्य में धैर्य के साथ कार्य करें अन्यथा नुकसान हो सकता है। स्वास्थ्य इस समय ठीक नहीं रहेगा। महत्वपूर्ण कागजों पर बिना पढ़े हस्ताक्षर न करें। व्यर्थ खर्चों से बचें। गलत संगति से बचें। संतान का सहयोग नहीं मिलेगा। अकस्मात् भाग्य जागरण हो सकता है। उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। पहाड़ी क्षेत्र की यात्रा हो सकती है। आप **कायाकल्प दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 1, 9, 10, 11, 18, 19, 27, 28, 29

इस मास व्रत, पर्व एवं त्यौहार

04.08.21	बुधवार	कामिका एकादशी
06.08.21	शुक्रवार	भाग्योदय जयंती
08.08.21	रविवार	श्रावण हरियाली अमावस्या
13.08.21	शुक्रवार	नाग पंचमी
18.08.21	बुधवार	पवित्रा एकादशी
22.08.21	रविवार	रक्षा बंधन/गायत्री जयंती
24.08.21	मंगलवार	कज्जली तृतीया
30.08.21	सोमवार	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी/काली जयंती

साधक, पाठक तथा सर्वजन सामान्य के लिए समय का वह रूप यहां प्रस्तुत है; जो किसी भी व्यक्ति के जीवन में उन्नति का कारण होता है तथा जिसे जान कर आप स्वयं अपने लिए उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

नीचे दी गई सारिणी में समय को श्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत किया गया है - जीवन के लिए आवश्यक किसी भी कार्य के लिये, चाहे वह व्यापार से सम्बन्धित हो, नौकरी से सम्बन्धित हो, घर में शुभ उत्सव से सम्बन्धित हो अथवा अन्य किसी भी कार्य से सम्बन्धित हो, आप इस श्रेष्ठतम समय का उपयोग कर सकते हैं और सफलता का प्रतिशत **99.9%** आपके भाग्य में अंकित हो जायेगा।

ब्रह्म मुहूर्त का समय प्रात: 4.24 से 6.00 बजे तक ही रहता है

वार/दिनांक		श्रेष्ठ समय
रविवार (अगस्त-1, 8, 15, 22, 29)	दिन	06:00 से 10:00 तक
	रात	06:48 से 07:36 तक
		08:24 से 10:00 तक
		03:36 से 06:00 तक
सोमवार (अगस्त-2, 9, 16, 23, 30)	दिन	06:00 से 07:30 तक
		10:48 से 01:12 तक
		03:36 से 05:12 तक
	रात	07:36 से 10:00 तक
		01:12 से 02:48 तक
मंगलवार (अगस्त-3, 10, 17, 24, 31)	दिन	06:00 से 08:24 तक
		10:00 से 12:24 तक
		04:30 से 05:12 तक
	रात	07:36 से 10:00 तक
		12:24 से 02:00 तक
		03:36 से 06:00 तक
बुधवार (अगस्त-4, 11, 18, 25)	दिन	07:36 से 09:12 तक
		11:36 से 12:00 तक
		03:36 से 06:00 तक
	रात	06:48 से 10:48 तक
		02:00 से 06:00 तक
गुरूवार (अगस्त-5, 12, 19, 26)	दिन	06:00 से 08:24 तक
		10:48 से 01:12 तक
		04:24 से 06:00 तक
	रात	07:36 से 10:00 तक
		01:12 से 02:48 तक
		04:24 से 06:00 तक
शुक्रवार (अगस्त-6, 13, 20, 27)	दिन	06:48 से 10:30 तक
		12:00 से 01:12 तक
		04:24 से 05:12 तक
	रात	08:24 से 10:48 तक
		01:12 से 03:36 तक
		04:24 से 06:00 तक
शनिवार (अगस्त-7, 14, 21, 28)	दिन	10:30 से 12:24 तक
		03:36 से 05:12 तक
	रात	08:24 से 10:48 तक
		02:00 से 03:36 तक
		04:24 से 06:00 तक

यह हमने नहीं वराहमिहिर ने कहा है

किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति के मन में संशय-असंशय की भावना रहती है कि यह कार्य सफल होगा या नहीं, सफलता प्राप्त होगी या नहीं, बाधाएं तो उपस्थित नहीं हो जायेंगी, पता नहीं दिन का प्रारम्भ किस प्रकार से होगा, दिन की समाप्ति पर वह स्वयं को तनावरहित कर पायेगा या नहीं? प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाना चाहता है, जिनसे उसका प्रत्येक दिन उसके अनुकूल एवं आनन्दयुक्त बन जाय। कुछ ऐसे ही उपाय आपके समक्ष प्रस्तुत हैं, जो वराहमिहिर के विविध प्रकाशित-अप्रकाशित ग्रंथों से संकलित हैं, जिन्हें यहां प्रत्येक दिवस के अनुसार प्रस्तुत किया गया है तथा जिन्हें सम्पन्न करने पर आपका पूरा दिन पूर्ण सफलतादायक बन सकेगा।

अगस्त -21

11. आज कार्य में जाते समय किसी वृक्ष के पत्ते पर स्वास्तिक बना कर मन्दिर में चढ़ायें।
12. आज गणेशजी को दुर्वा अर्पित करें। कार्यों में सफलता मिलेगी।
13. आज किसी शिव मन्दिर में आरती करें।
14. बाहर जाते वक्त दरवाजे पर चुटकी भर नमक छिड़क दें।
15. प्रातः स्नान करके भगवान सूर्य को अर्घ्य दें।
16. किसी मीठी वस्तु का भोग लगाकर गाय को खिलायें।
17. आज हनुमानजी को गुड़, चना का भोग लगायें।
18. मां लक्ष्मी की आरती करके जाएं।
19. प्रातः पूजन के बाद गिलास में जल लेकर गुरु मंत्र जप करते हुए घर में छिड़कें।
20. अपनी रसोई में मां अन्नपूर्णा का ध्यान करके एक दीपक जलाएं।
21. सद्गुरुदेव जन्मदिवस पर 16 माला गुरु मंत्र जप करें।
22. आज श्रावण पूर्णिमा है, गायत्री मंत्र का 1 माला जप करके जाएं।
23. चेतना मंत्र एक माला अवश्य करें।
24. हनुमान चालीसा का एक पाठ करके जाएं।
25. आज पत्रिका में दी गई लक्ष्मी विनायक साधना करें।
26. प्रातः निखिल स्तवन के ग्यारह श्लोक का पाठ करें।
27. मां दुर्गा को तीन लाल पुष्प चढ़ायें, बाधाएं दूर होंगी।
28. आज शनि मुद्रिका (न्यौ. 150/-) धारण कर सकते हैं।
29. निम्न मंत्र का 11 बार उच्चारण करके जाएं-

    ।। ऐं ह्रीं क्लीं ।।
30. ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय - मंत्र का 21 बार जप करें।
31. किसी व्यक्ति को सद्गुरुदेव के ज्ञान से जोड़ें।

सितम्बर-21

1. प्रातःकाल अपने इष्ट के दर्शन करके अपना दिन आरम्भ करें।
2. पीपल के वृक्ष में 1 लोटा जल चढ़ायें।
3. आज गाय को रोटी अवश्य खिलायें।
4. किसी असहाय को काली उड़द दाल एवं चावल का दान करें।
5. प्रातःकालीन गुंजरित वेद ध्वनि सी.डी. का श्रवण करें।
6. आज किसी ब्राह्मण को या किसी गरीब को भोजन करायें।
7. हनुमान बाहु (न्यौ. 90/-) धारण करें, बाधाएं समाप्त होंगी।
8. प्रातः लक्ष्मी जी के आगे घी का दीपक लगायें और 21 बार मंत्र जप करें-

    ऊँ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः
9. आज मां पार्वती के मन्दिर में प्रसाद चढ़ायें।
10. गणेश मन्दिर में लड्डुओं का भोग लगायें।

वास्तव में श्मशान की माया भी विचित्र है, जब समस्त संसार जागता है, तो यह सुप्त सा पड़ा रहता है, परंतु रात्रि होते ही, जब सारा संसार मीठी नींद में निमग्न हो जाता है, तो यह जीवित हो उठता है . . .ऐसा लगता है, मानों अभी बोल उठेगा .....और श्मशान के साथ एक व्यक्ति और जागता है ....अघोरी, तांत्रिक।

जब अघोरी ने महाकाली को विवश कर दिया

श्मशान उद्दाम यौवन की तरह अंगड़ाई लेता हुआ जाग्रत हो गया था। अमावस्या की भयावह रात, चतुर्दिक तिमिर फैला हुआ, मानो सभी को लीलने की चेष्टा कर रहा था। यह था बाणगंगा का बहुचर्चित महाश्मशान, जो अघोरियों एवं कापालिकों की प्रिय क्रीड़ास्थली है। यही वह मोहक उपवन है, जहां पर दसों महाविद्याएं रात्रि को मदमस्त हो विचरती रहती हैं। तारा यहीं पर मुण्डमालाएं धारण करती है, षोडशी यहीं अपनी बाल क्रीड़ाओं में निमग्न रहती है, जगज्ननी भुवनेश्वरी का यही सिद्ध पीठ है, छिन्नमस्ता मस्त होकर यहीं अपना नृत्य प्रस्तुत करती है; धूमावती, बगला एवं मातंगी का यही विहार स्थल है एवं परम सिद्धा महाकली यहीं पर ही अपने पूर्ण स्वरूप के साथ महाकाल का सायुज्य किये हुए अनुभव होती है।

बाणगंगा का बहुचर्चित महाश्मशान, जो अघोरियों एवं कापालिकों की प्रिय क्रीड़ास्थली है। यही वह मोहक उपवन है, जहां पर दसों महाविद्याएं रात्रि को मदमस्त हो विचरती रहती हैं। तारा यहीं पर मुण्डमालाएं धारण करती है, षोडशी यहीं अपनी बाल क्रीड़ाओं में निमग्न रहती है, जगज्ननी भुवनेश्वरी का यही सिद्ध पीठ है, छिन्नमस्ता मस्त होकर यहीं अपना नृत्य प्रस्तुत करती है; धूमावती, बगला एवं मातंगी का यही विहार स्थल है एवं परम सिद्धा महाकाली यहीं पर ही अपने पूर्ण स्वरूप के साथ महाकाल का सायुज्य किये हुए अनुभव होती है।

विरंच्यादिदेवास्त्रयस्ते गुणास्त्रीम्।
समाराध्य कालीं प्रधाना बभूव।।
अनादिं सुरादिं मखादिं भवादिं।
स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवा:।।

वास्तव में श्मशान की माया भी विचित्र है, जब समस्त संसार जागता है, तो यह सुप्त सा पड़ा रहता है, परंतु रात्रि होते ही, जब सारा संसार मीठी नींद में निमग्न हो जाता है, तो वह जीवित हो उठता है . . .ऐसा लगता है, मानों अभी बोल उठेगा . . .और श्मशान के साथ एक व्यक्ति और जागता है . . .अघोरी, तांत्रिक।

कहीं दूर, हवा के शीतल झोकों के साथ एक ध्वनि तैरती हुई, सारे वातावरण को चैतन्य करती हुई प्रतीत हो रही थी . . .

जगन्मोहिनीयं तु वाग्वादिनीयम्।
सुहृद्पोषिणीं शत्रुसंहारणीयम्।।
वचस्तम्भनीयं किमुच्चाटनीयम्।
स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवा:।।

यह ध्वनि, यह आवाज कहीं श्मशान के मध्य से उठ रही है। एक तांत्रिक श्मशान के बीचों-बीच वाली चिता के आगे पद्मासन में बैठा काली की स्तुति कर रहा है.. .देखने में अघोरी मालूम होता है . . .पर उसके व्यक्तित्व में एक स्पष्ट कठोरता एवं दृढ़ता के साथ-साथ एक अनिवर्चनीय कोमलता भी दृष्टिगोचर हो रही है . . .यह कैसा अघोरी है . . कैसा तांत्रिक है . . .

थोड़ा और पास जाने पर स्पष्ट होता है - अरे! यह तो विख्यात 'कपाल शंकर' है, अघोरियों में सर्वश्रेष्ठ, कापालिकों का पूजनीय, महान कपाल शंकर . . .तो वह यहां किसी महान साधना हेतु ही आया होगा, इसमें संशय नहीं। निश्चय ही वह यहां 'अष्ट काली' की सिद्धि हेतु आया है।

काली की कई साधनाएं प्रचलित हैं, सभी की सभी तीक्ष्ण . . .क्योंकि काल स्वरूपा काली को अपने सामने प्रकट करना साक्षात् मृत्यु से पंजा लड़ाना है; काली को उसकी इच्छा के विपरीत जाग्रत करना मानो भूखे सिंह के मुख में गर्दन डालना है, पर फिर भी कोई न कोई पौरुषवान साधक ऐसा करने में सफल हो ही जाता है . . .परंतु यह कपाल शंकर . . .यह तो अष्ट काली, अर्थात् काली के आठों स्वरूपों को एक साथ सिद्ध करने को संकल्पबद्ध हो उठा है . . .कहीं इसकी मति तो नहीं मारी गई? यह अपने होश में है भी? क्या यह इस बात से अनभिज्ञ है, कि अष्ट काली को एक साथ अपने समक्ष बुलाना मृत्यु को न्यौता देना है? क्या उसे अपने चारों तरफ यम पाश दिखाई नहीं दे रहा?

निश्चय ही बड़ा जीवटवान एवं दृढ़ संकल्पी है यह अघोरी . . .पर इसका यह अर्थ तो कदापि नहीं, कि आग से खेला जाये. . .अभी कुछ ही दिन पहले तो इसी साधना के दौरान कापालिक ब्रजेश्वर ने अपने प्राण गंवाए थे . . .वह हठ पूर्वक काली को अपने समक्ष प्रस्तुत करना चाहता था...

'तू क्या तेरा बाप भी आयेगा, बहुत घूम ली तू इधर-उधर, अब आ! महाकाल तुझे बुला रहा है' . . .क्यों था तू इतना अहंकारी रे ब्रजेश्वर, जो तुझे इतनी कम उम्र में ही अपनी जान से हाथ धोना पड़ा। क्षण भर में उस कापालिक के हजारों-हजारों टुकड़े होकर चिता के चारों ओर बिखर गए थे और उसका शव स्वत: ही कटे पेड़ की तरह चिता पर धम्म से गिर पड़ा था . . .उसके मुण्ड को काली ने अपनी माला में जोड़ लिया था और वह मदमस्त हो, ठहाका मारकर हंस पड़ी थी . . . हहहहहह

इयं स्वर्गदात्री पुन: कल्पवल्ली।
मनोजास्तु कामान्यथार्यं प्रकुर्यात्।।
तथा ते कृतार्था भवन्तीति नित्यं।
स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवा:।।

कपाल शंकर तन्मयता के साथ 'कालिकाष्टक' गा रहा है। आज साधना का अंतिम दिवस है, क्योंकि अमावस्या से आरंभ होकर यह साधना अमावस्या को ही खत्म होती है . . .पूरी एक मास की कठोर साधना. . .और क्या-क्या बाधाएं और परीक्षाएं नहीं आई थीं उसकी राह पर...पर कपाल शंकर तो कपाल शंकर ही ठहरा. . .जैसा नाम वैसा ही उज्ज्वल कर्म, वह तो जैसे समस्त अघोरियों का शिरोमणि है...

'हुं' कापालिक बज्र का तीसरा, हृदय को भेदने वाला

अष्ट काली, अर्थात् काली के आठों स्वरूपों को एक साथ सिद्ध करने को संकल्पबद्ध हो उठा है... कहीं इसकी मति तो नहीं मारी गई? यह अपने होश में है भी? क्या यह इस बात से अनभिज्ञ है, कि अष्ट काली को एक साथ अपने समक्ष बुलाना मृत्यु को न्यौता देना है? क्या उसे अपने चारों तरफ यम पाश दिखाई नहीं दे रहा?
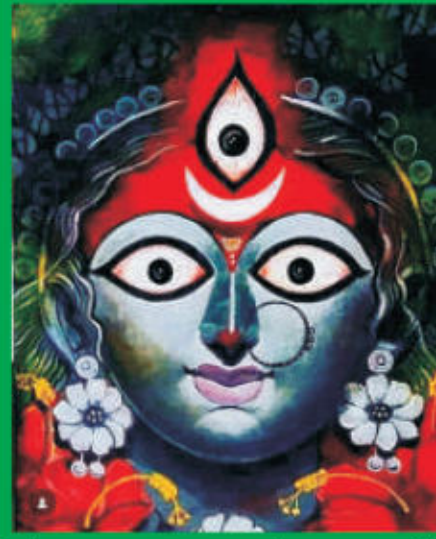
व्यंग्य स्मरण कर कपाल शंकर श्मशान में चिता के समक्ष बैठा-बैठा तिलमिला उठा और उसके मुख से दसों दिशाओं को गुंजाने वाली हुंकार प्रस्फुटित हो गई। परंतु अब वह संयत है और पुन: साधना में लीन दिखाई पड़ रहा है...

साधना के पंद्रहवे दिन भूत, पिशाच, राक्षसों ने उसकी साधना में विघ्न डालने का भरसक प्रयत्न किया था . . .पर उस अवधूत को भूत, प्रेतों एवं ब्रह्म राक्षसों से क्या भय... उन्होंने नाना प्रकार से उसको भयभीत करने की चेष्टा की थी, उसे डराने की कोशिश की थी . . .परंतु कपाल शंकर तो बड़ी ही मुश्किल से अपनी हंसी दबाए बैठा था ...यदि अपनी ही धुन में मस्त गजराज को कुत्तों का समूह भयभीत करने की चेष्टा करे, तो यह बात हास्यास्पद ही है...इसमें दो राय नहीं...कुछ क्षण तो वह मग्न हो इन इतर योनियों की वीभत्स क्रीड़ा देखता रहा...पर फिर कुछ जल हाथ में लिया और **'ॐ अंजनी समुदाय प्रकट विक्रम वीर...'** कहते-कहते उसने वह जल चारों ओर छिड़क दिया...भय की चीखों के साथ कुछ ही क्षण में वह सारा त्रिवर्गात्मक समूह कहीं विलुप्त हो गया था . . .

चिदानन्द कन्दं हसन्मन्द मन्दं।
शरच्चन्द्र कोटिप्रभापुञ्जबिम्बम्।।
मुनीनां कवीनां ह्यदि द्योतयन्तं।
स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवा:।।

एक अद्वितीय लय के साथ ये शब्द कपाल शंकर के मुख से निकल रहे हैं और वह भी पूर्ण रूप से इसमें डूबा हुआ है . . फिर तो हर दिन साधना के दौरान कोई न कोई बाधा अथवा कठिनाई प्रस्तुत होती. . .कपाल शंकर भी एक पहुंचे हुए सिद्ध की भांति इन सब परीक्षाओं में उत्तीर्ण होता गया और समस्त बाधाओं को सरलता से लांघता गया...पर जो अभी पिछली रात थी वह तो अति विचित्र थी, उससे निकल पाना तो नंगी तलवार पर चलने से भी अधिक कठिन था...पर चूँकि आज तीसवां दिन है और कपाल शंकर हमारे समक्ष है, इसका अर्थ तो यही निकलता है, कि उसने सफलतापूर्वक उस मुख्य बाधा को पार कर लिया है।

वह बाधा थी चौसठ योगिनियों के रूप में, जो कि जगज्जननी महाकाली की दासियां हैं ...रात के समय अचानक ही वे अति मनोहर, कामोत्तेजक रूप में कपाल शंकर के समक्ष प्रस्तुत हुई थीं और नाना प्रकार की नृत्य मुद्राओं से उसे

उत्तेजित करने का प्रयत्न कर रही थीं...

'शंकर! क्यों अपने यौवन को इस तपती भट्ठी में जला रहा है, छोड़ दे यह सब कुछ और आ कर देह का सुख भोग...' - एक ने कहा।

'कपाल! तू कहे, तो तुझे अद्वितीय सुन्दर बना दूँ, अजर-अमर कर दूँ, फिर हम हमेशा के लिए प्रेम अमृत का पान कर सकेंगे' - दूसरी बोली।

तीसरी ने कहा - 'तू अटूट सम्पत्ति मांग ले, यश, वैभव, सब कुछ . . .हमको अंगीकार कर और निश्चिंतता के साथ जीवन व्यतीत कर। क्यों अकारण मृत्यु को दावत दे रहा है? जो कुछ भी तुझे चाहिए, हमें कहो, हम भी तुझे वह सब प्रदान करने में समर्थ हैं।'

परंतु यह कपाल शंकर की ही तेजस्विता थी, कि वह इतने प्रलोभनों एवं मोहक निमंत्रणों के बीच भी संयत रह सका। काम तो देवताओं को भी डिगा देता है, पर यह साधक तो अद्भुत है, इसमें कोई और ही बात है...यह एक चिंगारी लिये हुए है। इसके बाद योनियों ने विभिन्न प्रकार से माया रची और कपाल शंकर को डिगाने के लिए 'साम, दाम, दण्ड, भेद' का उपयोग किया। अंततः अब उन्हें इस बात का एहसास हो गया, कि उसको विचलित करना संभव नहीं, तो वे 'साधु कपाल शंकर, साधु!' कहती हुई शून्य में विलीन हो गईं...

महामेघ काली सुरक्तपि शुभ्रा।
कदाचिद्विचित्रा कृतिर्योगमाया।।
न बाला न वृद्धा न कामातुरापि।
स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवा:।।

यह आखिरी दिवस है और वह दृढ़ साधक तीव्र गति के साथ सफलता की ओर अग्रसर हो रहा है - तभी एक तीव्र विस्फोट हुआ और चतुर्दिक धुंआ ही धुंआ फैल गया...हाथ को हाथ नहीं सूझ रहा...गंध भी बड़ी विचित्र सी उठ रही है . . .

'मूढ़मते!' -तभी एक स्त्री का स्वर गूँजा- 'क्यों तू हठ कर रहा है, क्या तुझे अपनी जान की जरा भी परवाह नहीं. . .हठ छोड़ और भाग जा, मुझे क्रोध मत दिला. . .'

कपाल शंकर तुरंत समझ गया, कि न तो यह किसी योगिनी की आवाज है, न भैरवी की, यह तो कुछ और ही है, यह तो मात्र उसी की मधुर आवाज हो सकती है ...उसने तुरंत हाथ जोड़ लिए और बोला -

'माँ! हठ तो शिशु का मूल धर्म होता है, वह हठ छोड़ दे, तो माँ उसकी ओर ध्यान ही न दे . . .मेरे हठ से आपको क्रोध आ रहा है, इसके लिए क्षमा प्रार्थी हूँ . . .पर अब और नहीं रहा जाता . . .हे माँ! हे जगज्जननी अपने सुन्दर अष्ट स्वरूप को मुझे दिखलाइए. . .'

दक्षिण काली, स्पर्शमणि काली, संततिप्रदा काली, सिद्धि काली, चिन्तामणि काली, कामकला काली, हंस काली, गुह्य काली.....और पुनः उसमें विलीन हो गए। जो देवी अब कपाल शंकर के समक्ष है, वही है श्मशान की अधिष्ठात्री देवी महाकाली।

क्षमस्वापराधं महागुप्तभावं।
मयलोकमध्ये प्रकाशीकृतं यत्।।
तव ध्यानपूतेन चापल्यभावात्।
स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवा:।।

उसकी आँखों से प्रेम की अश्रुधार बहती हुई आसपास की जमीन सिक्त कर रही है . . .

'इसी क्षण रुक जा दुष्ट, नहीं तो मैं तेरी भी बलि ले लूँगी और तेरे मुण्ड को अपनी माला में पिरो लूँगी . . .एक मौका और देती हूँ, भाग जा, नहीं तो मैं तुझे भी भक्ष्य लूँगी . . .ह. . .ह. . .ह. . .ह. . .ह. . .ह. . .'

कपाल शंकर बालक की तरह रुदन कर रहा है, उसकी हिचकियां बंधी हुई हैं - 'यदि आप मुझे भक्ष्य ही लें, तो इससे बड़े सौभाग्य की बात मेरे लिए और क्या हो सकती है। पर माँ आप क्यों कष्ट करती हैं? मैं स्वयं ही अपने हाथों से अपना मस्तक काट कर आपके चरणों में समर्पित कर देता हूँ . . .'

'तो बोल क्या रहा है, काटता क्यों नहीं. . .' - उस स्त्री ने कहा और तभी अचानक एक प्रचण्ड खड़ग कपाल शंकर के सम्मुख पृथ्वी पर आ गिरा . . .

कपाल खंकर ने खड़ग की तरफ हाथ बढ़ा दिया, उसे उठा लिया. . .उफ! सही कहते थे सभी अघोरी और कापालिक बज्र, कि अब उसे फिर उसे देख

सकने की आशा नहीं है . . .अलविदा कपाल शंकर! निश्चय ही तू अद्वितीय है. . .महान है. . .पर यह क्या! घोर आश्चर्य! इससे पहले खड़ग गर्दन को छुए, एक विकराल, श्याम वर्ण की स्त्री ने प्रकट हो उसका हाथ झटक दिया. . .और खड़ग छिटक कर दूर जा गिरा . . .उस स्त्री के स्वरूप से आठ स्वरूप प्रकट हुए – दक्षिण काली, स्पर्शमणि काली, संततिप्रदा काली, सिद्धि काली, चिन्तामणि काली, कामकला काली, हंस काली, गुह्य काली . . .और पुन: उसमें विलीन हो गए। जो देवी अब कपाल शंकर के समक्ष है, वही है श्मशान की अधिष्ठात्री देवी महाकाली।

कपाल शंकर इस दिव्य छटा को देखकर आत्मविभोर हो गया और 'माँ! माँ! पुकारता हुआ उसके चरणों में गिर गया, काली का ममतामय हाथ उसके केशों में घूम रहा है...'ओह!... कितनी सुन्दर है मेरी माँ! मेरी काली माँ... कितनी ममतामय, कितनी कोमल...'

'अरे पगले! जिस दिन माँ अपने पुत्र की बलि ले लेगी, उस दिन तो समस्त ब्रह्माण्ड प्रलय से नष्ट हो जाएगा...बज्रेश्वर तो खुद अपने निन्दित कर्मों द्वारा मारा गया, उसके संकल्प तुच्छ थे...खैर वह भी अगले जन्म में मुझे प्राप्त कर पाएगा....'

'कपाल शंकर! पुत्र! मैं तुझसे अति प्रसन्न हूँ, तूने तो मुझे विवश कर दिया. . .माँ को पुत्र की तरह ही जीता जा सकता है. . .और कोई तरीका नहीं। मैं हमेशा तेरे पास रहूँगी, जब भी तू पुकारेगा, मैं चली आऊंगी. . .निश्चय ही तू धन्य है कपाल शंकर!. . .और यह तेरे गुरु का ही प्रताप है, कि तुझे मेरे वह दर्शन प्राप्त हुए, जो कि अति दुर्लभ एवं गोपनीय हैं।'

'जा, अब तू जा रे और निर्भय हो विचरण कर...' और जाते-जाते भी महादेवी का हास्य सुनाई पड़ रहा है...ह...ह...ह...ह...ह...

कपाल शंकर ने हाथ जोड़ लिए हैं, वह अपने आप में खोया हुआ कुछ बुदबुदा रहा है...

यदि ध्यान युक्तं पठेद् यो मनुष्य:।
तदा सर्वलोके विशालो भवेच्च।।
गृहे चाष्ट सिद्धिर्मृते चापि मुक्ति:।
स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवा:।।

अगर समस्त ब्रह्माण्ड को मुट्ठी में बांधना है और शत्रुओं पर इन्द्र वज्र की तरह गिर कर उन्हें नेस्तानाबूद करना है . . . तो इस साधना को तो कर डालिये

साधना विधान

अघोरी कपाल शंकर ने जिस विधि से महाकाली के अष्ट स्वरूप को सिद्ध किया था, उसने उसकी एक लघु विधि को मेरे समक्ष रख कर मुझे सिद्ध कराया। महाकाली साधना सम्पन्न करने के पश्चात् साधक की समस्त भौतिक तथा आध्यात्मिक इच्छाएं पूर्ण हो जाती हैं, जिनकी उसे इच्छा होती हैं। वह अपने जीवन में अपूर्ण नहीं रह जाता। उसकी सभी प्रकार की कामनाएं पूर्ण होती है। महाकाली की यह साधना 30.8.21 को आरंभ करें या फिर इसे किसी भी शनिवार से आरंभ करें। यह साधना रात्रि में ही सम्पन्न करें।

- **साधक रात्रि में स्नान कर काले रंग के वस्त्र धारण करें। जिस स्थान पर साधना करें उस स्थान पर अन्य किसी की उपस्थित वर्जित है।**
- **साधक अपने सामने बाजोट पर काले रंग का वस्त्र बिछाएं, उस पर 'अष्टकाली यंत्र' को स्थापित कर 'महाकाली साधना' पुस्तक में वर्णित विधि के अनुसार महाकाली पूजन करें।**
- **पुस्तक के अनुसार पवित्रीकरण, आचमन, दिग्बंधन, गणपति स्मरण, गुरु पूजन, ध्यान, कुंकुम, सिन्दूर, अक्षत, पुष्पमाला, धूप, दीप, फल तथा नैवेद्य अर्पित करें।**
- **इसके पश्चात् 'काली हकीक माला' से निम्न मंत्र का 51 माला मंत्र जप करें –**
- **यह आठ दिन की साधना है।**

मंत्र

।। ॐ क्रीं क्रीं महाकालिके क्रीं क्रीं फट्।।

OM KREEM KREEM MAHA KALIKE KREEM KREEM PHAT

- **मंत्र जप के पश्चात् उपरोक्त का 11 बार उच्चारण करते हुए यंत्र पर काली मिर्च के दाने चढ़ाएं। इससे आपके जीवन में आने वाली बाधाएं, चाहे वह शत्रु रूप में हों या तनाव या मानसिक क्लेश के रूप में हों, समाप्त होंगी और निर्भयता की प्राप्ति होगी।**
- **साधना समाप्ति पश्चात् आप समस्त सामग्री को एकत्र कर नदी में विसर्जित कर दें।**

यह साधना आपके जीवन में एक अमूल्य धरोहर के रूप में हमेशा आपके पास रहेगी।

– न्यौछावर – 450/–

सर्वथा नवीन और
अनूठी पद्धति
'वैश्वाचार्य'
द्वारा लिखित श्रेष्ठ
प्रयोग विधि
जो भोजपत्र पर
नेपाल में सुरक्षित है,
अज्ञात रहस्यों की
पर्तों को उजागर
करता हुआ
एक अनूठा लेख

सम्मोहन वशीकरण साधना

तंत्र के आख्यानों को पढ़कर सहसा मुझे विश्वास ही नहीं होता था,
कि तंत्र कितना महत्वपूर्ण है, मैं तो इसके विकृत स्वरूप को ही तंत्र मानकर इससे घृणा कर बैठा था।
यद्यपि हम भारतीयों का मूल, अध्यात्म ही होता है, चाहे हम कितने ही भौतिकवादी क्यों न हों ?
ऐसी ही प्रवृत्ति मेरी थी, मैं बाह्य आवरण से तो पूर्णतः भौतिकवादी, बुद्धिवादी था,
लेकिन आन्तरिक रूप से मेरी मूल प्रकृति अध्यात्म की ओर ही मुझे खीचती थी।

यह मेरा अहं नहीं है, लेकिन मैं कायर भी नहीं हूं, कि मैं पूर्णतः बुद्धिवादी होते हुए भी स्वयं को आध्यात्मिक व्यक्ति के रूप में न स्वीकारूं। मेरी यह मिश्रित प्रकृति जहां मुझे उपयोगी साबित हुई है वहीं कभी-कभी मैंने हानि भी उठाई है, किन्तु इसी स्वभाव के कारण मुझे यह अद्वितीय साधना प्राप्त हुई।

मुझे एक आवश्यक कार्यवश नेपाल जाना पड़ा, नेपाल पहुंच कर वहां अपना कार्य सम्पन्न किया, वहीं मेरे एक मित्र ने सलाह दी, कि यहां पर शक्तिपीठ दक्षिणकाली है और यहां से कुछ दूर पर गुफा में एक योगी रहते हैं, वे एक अत्यन्त सिद्ध योगी हैं, उनके आशीर्वाद से अनेक लोग लाभान्वित हुए हैं, तुम्हें भी चलकर उनका दर्शन करना चाहिए।

मैंने अपनी सहमति प्रकट की और अगले दिन का समय नियत किया, अगले दिन जब हम दक्षिण काली पहुँचे तो वहां एक-दो लोग ही घूमते हुए दिखाई दिये, पूछने पर पता चला, कि वे योगी अभी-अभी गुफा में साधना करने गये हैं और अब बाहर निकलना मुश्किल है।

हमने सोचा, कि इतनी दूर आ ही गये हैं तो कुछ देर यहां की प्राकृतिक सुन्दरता का आनन्द उठा लें व मां काली के दर्शन कर ले। यह सोचकर हम काली मन्दिर की ओर गये, **मां काली के विग्रह की तेजस्विता की दिव्य अनुभूति हुई, हृदय में आनन्द का संचार हो रहा था, मां काली के दर्शन करने के पश्चात् हम वहां की प्रकृति में मुग्ध भाव से घूमने लगे थे, कि तभी ऐसा लगा, कि जैसे मुझे कोई शक्ति उस ओर खींच रही है, जिधर योगी की गुफा थी, मैं आकर्षणबद्ध हो उस ओर चल पड़ा।** मैं वहां पहुंचा ही था, कि वे अपनी गुफा से बाहर आते हुए दिखाई दिये, मेरे मित्र ने दौड़ कर उनके चरण स्पर्श किये, तो उन्होंने एक हल्की सी मुस्कुराहट के साथ उसे देखा।

उनकी वेशभूषा लामाओं जैसी थी शायद लोगों को उनके विषय में मालूम नहीं था, इसलिये वे उन्हें योगी कहते थे या फिर वे पूर्व में लामा रहे हों लेकिन अब एक योगी के रूप में जीवन व्यतीत कर रहे हैं - मेरा यह विचार खंडित हुआ जब उन्होंने मुझे अपनी ओर आने का इशारा किया, मैंने उन्हें प्रणाम किया और जब मैं उनके पास गया तो उन्होंने अत्यन्त सौम्यता से पूछा - किसी विशेष कार्य से आये हो ?

प्रत्युत्तर में मेरे मुंह से निकला - 'सिर्फ दर्शन करने आया हूं। यदि आप आज्ञा दें, तो हम नित्य आ जाया करें !

मैं यह उत्तर उन्हें देखते हुए विमुग्ध भाव से बोल पड़ा था, क्योंकि बाद में मेरे मित्र ने मुझे पूछा -'तुमने ऐसा क्यों कहा.... तुम तो तीन दिन बाद चले जाओगे ?'

मैं स्वयं उलझन में फंसा हुआ था, कि कैसे मेरे मुंह से ये शब्द निकले, **'ईश्वरेच्छा बलीयसी'** सोचकर पुनः अपने शेष कार्य सम्पन्न किया और अगले दिन पुनः नियत समय पर मैं यहां पहुंच गया।

भारतीय तंत्र में अनेक शोध कार्य सम्पन्न हुए हैं, जिसके कारण यह अति विकसित विद्या है, लेकिन सामान्य जन में प्रचलित न होने के कारण धीरे-धीरे यह अपना मूल स्वरूप खोती जा रही है। इस विद्या में विभिन्न विषयों पर किये गये विवेचन अत्यन्त महत्वपूर्ण है, जो अनेक रहस्यों को अपने में समाये हुए है।

वहां पहुंचा तो देखा कि वे कुछ स्थानीय लोगों से घिरे बैठे हैं और उनकी समस्या का हल बता रहे हैं। मैं थोड़ी देर तक उन्हें दूर से निहारता रहा उनका आभामण्डल स्पष्ट रूप से आभासित हो रहा था, में एकटक उन्हें देखता ही जा रहा था, कि तभी वह मेरे समीप आकर बोले - 'क्या बात है, क्या देख रहे हो ?'

मैं जैसे स्वप्न से जागा, लेकिन अत्यन्त सहम गया, कि मैं क्या कर रहा था, फिर भी मैंने हिम्मत करके उन्हें स्पष्टता से बता दिया - 'मैं आपके मुखमंडल को निहार रहा था, मेरी पलक झपक ही नहीं रही थी।'

'अपने मुख पर स्मित लिये हुए वे मुझे अपने साथ ले गुफा के बाहर स्थित एक चट्टान पर बैठ गये और फिर मुझसे ऐसे बात करने लगे, जैसे मैं उनका अत्यन्त आत्मीय हूं तथा बहुत समय पहले से ही उनका परिचित हूं। उन्होंने मुझसे मेरी रुचियां पूछीं तथा धीरे-धीरे हम लोगों का वार्तालाप सामान्य विषय से बढ़ते-बढ़ते तंत्र की ओर मुड़ गया और धीरे-धीरे तंत्र के अनेक सूत्रों की व्याख्या उन्होंने मुझे समझायी, जो मेरे लिये सर्वथा नवीन थी। समय काफी हो चला था, उनकी साधना का समय हो गया था, अतः मैंने पुनः अगले दिन आने की अनुज्ञया ली, उन्होंने अगले दिन प्रातः ही आने को कहा।

भारतीय तंत्र में अनेक शोध कार्य सम्पन्न हुए हैं, जिसके कारण यह अति विकसित विद्या है, लेकिन सामान्य जन में प्रचलित न होने के कारण धीरे-धीरे यह अपना मूल स्वरूप खोती जा रही है। इस विद्या में विभिन्न विषयों पर किये गये विवेचन अत्यन्त महत्वपूर्ण है, जो अनेक रहस्यों को अपने में समाये हुए है।

निर्धारित समय पर प्रात: ही मैं उनके पास पहुंचा तो देखा, वे अत्यन्त ही प्रसन्न मुद्रा में उसी शिला पर बैठे थे, मैंने उनको प्रणाम किया और उनके निकट ही बैठ गया। उन्होंने उस दिन स्वत: ही **'सम्मोहन'** (जिसे सीखना मेरे जीवन का अभीष्ट था), के विषय में चर्चा छेड़ी, पांच घंटे कैसे बीते जान ही न पाया।

अचानक वे उठे और बोले-'मेरे पास 'वैश्वाचार्य' द्वारा भोजपत्र पर लिखित सम्मोहन की सर्वथा गोपनीय विधि है।-

यह जानकर मेरे अन्दर की उत्सुकता इतनी तीव्र हो गई, कि मैं उनसे पूछ बैठा -''क्या आप मुझे वह विधि बतायेंगे, वह भोजपत्र दिखायेंगे?'

शायद वे उस दिन अत्यन्त प्रसन्न थे, उन्होंने मुझे वह भोजपत्र दिखाया, भोजपत्र अत्यन्त जर्जर अवस्था में था और उस पर लिखी भाषा भी मुझे समझ में नहीं आ रही थी। उन्होंने उसका सरलीकरण कर मुझे उसकी व्याख्या समझाई। उसे जानकर मुझे एहसास हुआ कितनी सहजता से मुझे एक अद्वितीय ज्ञान की प्राप्ति हुई है।

उन्होंने स्पष्ट किया-'इस प्रयोग विधि को सम्पन्न करने वाला व्यक्ति पूर्ण सम्मोहन कर्ता बन जाता है तथा वह जिसे चाहे उसे अपने वश में कर सकता है। उसके अन्दर इतना अधिक आकर्षण उत्पन्न हो जाता है, कि उसके आकर्षण से पशु-पक्षी तक मोहित हो जाते हैं, जो इस साधना को पूर्णता के साथ सम्पन्न कर लेता है वह इस क्षेत्र का अद्वितीय साधक होता है।'

उन्होंने अपना मूल परिचय भी स्पष्ट किया कि वे एक लामा हैं, लेकिन भारतीय तंत्र ने उनको ज्यादा आकर्षित किया और धीरे-धीरे वे इस ओर प्रवृत्त हो गये। उन्होंने स्पष्ट किया, कि भारतीय तंत्र में अनेक शोध कार्य सम्पन्न हुए हैं, जिसके कारण यह अति विकसित विद्या है, लेकिन सामान्य जन में प्रचलित न होने के कारण धीरे-धीरे यह अपना मूल स्वरूप खोती जा रही है। इस विद्या में विभिन्न विषयों पर किये गये विवेचन अत्यन्त महत्वपूर्ण है, जो अनेक रहस्यों को अपने में समाये हुए है।

मैंने भी यह अनुभव किया, कि उनके हृदय में इस बात का दुख है, कि समाज मूल में न जाकर ऊपरी तलछट को ही देखने का प्रयास करता है।

उनसे आज्ञा लेकर मैं उनके द्वारा बताई गयी विधि को सार्वजनिक कर रहा हूं, जिसको सम्पन्न कर आप भी इस क्षेत्र के अद्वितीय साधक बन सकते हैं।

साधना विधान

* इस साधना में आवश्यक सामग्री - **'सम्मोहन-वशीकरण यंत्र'** तथा **'सम्मोहन वशीकरण माला'** है।
* यह सात दिवसीय साधना है तथा रात्रि को 9 बजे के बाद 30.08.21 या किसी भी माह में पूर्णिमा से प्रारम्भ कर सम्पन्न की जाती है।
* साधक हल्के गुलाबी रंग के वस्त्र धारण करें।
* लकड़ी के बाजोट पर पीले रंग का वस्त्र बिछायें। उस पर लाल रंग से रंगे अक्षत से त्रिकोण बनायें, त्रिकोण के मध्य में **'सम्मोहन-वशीकरण यंत्र'** को स्थापित करें।
  यंत्र का कुंकुम, अक्षत तथा पुष्प से पूजन करें।
* यंत्र की बाईं ओर पीले चावल की ढेरी पर माला स्थापित कर उसका पूजन करें।
* घी का दीपक तथा धूप लगायें तथा नैवेद्य चढ़ायें।
* मानसिक रूप से वैश्वाचार्य को प्रणाम करते हुए थोड़ा सा अक्षत यंत्र के बगल में रख दें।
* **सम्मोहन वशीकरण माला** से निम्न मंत्र की नित्य 21 माला जप करें-

मंत्र

।। ॐ क्लीं सम्मोहनाय-वश्याय क्लीं ॐ फट्।।

* मंत्र जप समाप्त होने पर जो भी नैवेद्य चढ़ाया हो, उसे स्वयं ग्रहण करें।
* सात दिन तक नित्य पूजन कर मंत्र जप करें।
* आठवें दिन प्रात: ही यंत्र व माला को नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री-450/-

हरितालिका तीज - 09.09.21

गृहस्थ सुखी जीवन प्राप्ति हेतु

पूर्ण गृहस्थ सुख

साधना

गृहस्थ धर्म महत्वपूर्ण होता है मनुष्य के लिए, जिसको निर्वाह करने के लिए अत्यंत संघर्षमय होना पड़ता है। यह संघर्ष उसके जीवन में अनेक रूपों में सामने आता है।

वर्तमान युग में विवाह की समस्या प्रमुख रूप से सामने आई है। प्रत्येक माता-पिता चाहते हैं, कि उनके पुत्र-पुत्री पढ़े-लिखे और उन्हें योग्य साथी मिले, जिससे उनका दाम्पत्य जीवन सुखमय हो सके, किन्तु कितने लोगों के सपने साकार हो पाते हैं अथवा उनके पुत्र या पुत्री को योग्य जीवन साथी मिल पाता है? यह तो काफी हद तक प्रारब्ध पर भी निर्भर करता है। इस युग में सामाजिक ढांचे में आए व्यापक परिवर्तन के फलस्वरूप कन्याओं के लिए योग्य वर ढूंढना कठिन हो गया है। इसकी पृष्ठभूमि में अनेक ऐसे कारण हैं, जिनके रहते ये समस्याएं और भी जटिल हो जाती हैं। योग्य जीवन साथी न मिलने से जीवन नीरस हो जाता हे। भविष्य की सम्पूर्ण आशाएं धूमिल हो जाती हैं और जीवन बोझ लगने लगता है।

समय पर विवाह सम्पन्न न होना, योग्य साथी न मिलना, विवाह होने के उपरान्त दाम्पत्य जीवन कलहपूर्ण होना, पति-पत्नी में मतभेद, सन्तानहीनता आदि किसी भी रूप में यह बाधा आ सकती है। इस तरह की बाधाएँ सम्बन्धित दम्पत्ति को झकझोर कर रख देती हैं और उनका जीवन असामान्य बनकर रह जाता है।

आज वैवाहिक जीवन में पति-पत्नी के मध्य उत्पन्न मतभेदों एवं कलह के कारण न्यायालयों में तलाक के मुकदमों की संख्या में काफी वृद्धि हुई है, यह स्थिति देखकर हृदय में अपार वेदना होती है। कभी एक समय था, जब हमारी संस्कृति में नारी को घर की लक्ष्मी माना जाता था, किन्तु आज की स्थिति बिल्कुल भिन्न होती जा रही है। इसकी पृष्ठभूमि में अनेक कारण हो सकते हैं, अत: परिवार में उत्पन्न तनाव व कलह के मूल बिन्दुओं पर पति-पत्नी को एक धैर्यपूर्वक चिन्तन कर समाधान के लिए प्रयास करना चाहिए।

पूर्ण गृहस्थ सुख दीक्षा-गृहस्थ सुख अपने आपमें एक पूर्णता एवं आनन्द का सूचक है, जिनके जीवन में गृहस्थ सुख का अभाव है, उनका जीवन नीरस एवं बोझ तुल्य बनकर रह जाता है, जीवन की सम्पूर्ण आशाएं धूमिल हो जाती हैं। कलह एवं तनाव के वातावरण में पति-पत्नी का दाम्पत्य जीवन कटुता पूर्ण बनकर रह जाता है। यहाँ तक कि तलाक की स्थिति भी बन जाती है। ऐसे दम्पति को चाहिए, कि वे पूज्य गुरुदेव से मिलकर '**पूर्ण गृहस्थ सुख दीक्षा**' प्राप्त कर अपने जीवन को सुखी व आनन्दमय बनाएं। जो लोग अपनी पुत्री के भविष्य के प्रति अत्यन्त चिन्तित रहते हैं, उन्हें अपनी पुत्री को विवाह से पूर्व या विवाह के पश्चात् पूर्ण गृहस्थ सुख दीक्षा दिलवा देनी चाहिए, जिससे उनका जीवन सुखी हो सके।

शीघ्र विवाह दीक्षा-जिनकी पुत्री अथवा पुत्र की उम्र विवाह योग्य हो गई हो और विवाह में अनावश्यक विलम्ब हो रहा हो या विवाह तय करने के बाद भी बात टूट जाती है और विवाह नहीं हो पाता हो, तो ऐसी स्थिति में 'शीघ्र विवाह दीक्षा' प्राप्त करनी चाहिए।

गृहस्थ जीवन को आनन्द युक्त बनाने का अद्भुत प्रयोग

यह साधना गृहस्थ जीवन को पूर्ण सुखमय बनाने के लिए सम्पन्न करनी चाहिए। इस साधना से आने वाली समस्त बाधाओं का समाधान हो जाता है, गृहस्थ दम्पत्ति को अपने गृहस्थ जीवन में सरलता एवं आनन्द लेने के लिए दीक्षा ग्रहण कर इस साधना को सम्पन्न करना चाहिये, वर्ष में एक बार यह साधना तो अवश्य ही करनी चाहिए।

धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चारों पुरुषार्थ की व्याख्या यदि किसी एक रुप में संभव है, तो वह गृहस्थ जीवन में ही संभव है, क्योंकि जीवन के प्रत्येक रंग गृहस्थ में ही मिलते हैं, तभी तो हमारे समस्त ऋषि-मनीषियों ने भी गृहस्थ को अपनाया ही है।

1. यह प्रयोग 09.09.21 से या किसी भी मंगलवार से प्रारम्भ किया जा सकता है। लड़की स्वयं या लड़की के माता-पिता या किसी योग्य पण्डित से यह प्रयोग सम्पन्न करवाया जा सकता है।
2. इस प्रयोग में निम्न साधना उपकरणों की जो कि प्राणप्रतिष्ठित हो, कि आवश्यकता पड़ती है **सौभाग्य माला, गृहस्थ सुख यंत्र।**
3. प्रात:काल यंत्र को स्थापित कर पहले दूध तथा पवित्र जल से स्नान करायें और स्वच्छ वस्त्र से पोंछकर केशर से तिलक कर पात्र में स्थापित कर दें।
4. इसके पश्चात् 'दैनिक साधना विधि' पुस्तक से गुरु पूजन सम्पन्न करें।
5. दाहिने हाथ में जल, अक्षत तथ पुष्प लेकर संकल्प बोलें *'यह साधना मैं सम्पन्न कर रहा हूँ, जिससे विवाह संबंधी बाधा, गृहस्थ जीवन की बाधाएं समाप्त हों।'*
6. निम्न मंत्र की '**सौभाग्य माला**' से 11 मालाएं, 21 दिन तक करें-

मंत्र

।। ॐ ह्लौं कामदेवाय रत्यै सर्व दोष निवारणाय फट्।।

21वें दिन प्रयोग समाप्त हो जाए, तब अगले दिन वह यंत्र तथा माला नदी में प्रवाहित कर दें या शिव पार्वती मन्दिर में चढ़ा दें। ऐसा करने से जीवन में विवाह-सम्बन्धी दोष समाप्त हो जाते हैं।

साधना सामग्री-450/-

योगों में विभिन्न

प्राणायाम

प्राणायाम एक प्रकार से प्राण के आयाम में जाकर किया गया व्यायाम है। इससे समस्त अंग-अवयवों को शक्ति मिलती है। वे स्वस्थ-सबल बनते हैं। इसलिए योगशास्त्रों में स्वास्थ्य-संवर्द्धन के लिए प्राणायाम को एक अतिउत्तम उपाय बताया गया है। इसमें स्थूल से लेकर सूक्ष्म शरीर तक को प्रभावित करने की सामर्थ्य है, अतएव इसे आध्यात्मिक उपचारों में सर्वोपरि माना गया है।

प्राणायाम के अनेकों प्रकार हैं। सभी की अपनी-अपनी क्षमता और विशिष्टता है। सभी में रोग निवारण के अद्वितीय गुण हैं। यदि व्यक्ति अपनी दिनचर्या में इन्हें सम्मिलित कर ले तो वह आजीवन स्वस्थ बना रह सकता है। आदमी यदि नीरोग नहीं रहेगा तो वह अपनी दैनिक क्रियाकलाप संपन्न कैसे कर सकेगा? ऐसी स्थिति में तो आत्मिक उन्नति उसके लिए दिवास्वप्न बन जाएगी, जबकि प्राणायाम का एक उद्देश्य आत्मोन्नति भी है। वह शरीर-स्वस्थता प्रदान करने के साथ-साथ व्यक्ति को आत्मोत्कर्ष की ओर भी ले चलता है। इसलिए प्राणायाम जीवन का अभिन्न हिस्सा होना चाहिए।

प्राणायाम के तीन अंग हैं-श्वास लेना, रोकना और छोड़ना। इन तीनों क्रियाओं का योग ही पूर्ण प्राणायाम है। सभी प्राणायाम न्यूनाधिक अंतर के साथ इन्हीं का संयोग है।

प्राणायाम के अभ्यास से सर्वप्रथम फेफड़ों को लाभ पहुँचता है। वे लचीले और मजबूत बनते हैं। इसमें शरीर में गरमी उत्पन्न होती है, जो स्वास्थ्य पर अच्छा प्रभाव डालती है। बड़ी मात्रा में ऑक्सीजन की प्राप्ति होती है। जितना अधिक ऑक्सीजन शरीर में पहुँचेगा, उतना ही अधिक कार्बन डाई ऑक्साइड शरीर से बाहर निकलेगा।

शारीरिक व्यायाम से शरीर में रासायनिक परिवर्तन होते हैं और तत्त्वों का विभाजन होता है, फलस्वरूप शक्ति का ह्रास होता है। इस ह्रास की पूर्ति प्राणायाम द्वारा काया में अधिक ऑक्सीजन पहुँचाकर की जाती है। मस्तिष्क एवं नाड़ी संस्थान को भी यह प्रभावित करता है। मस्तिष्क के कार्यों को सुव्यवस्थित करने में इसका महत्त्वपूर्ण हाथ है। यह सम्पूर्ण मस्तिष्क के प्रसुप्त केंद्रों को जाग्रत करता और उन्हें शक्ति प्रदान करता है। इसके नियमित अभ्यास से पिट्यूटरी एवं पीनियल ग्रंथियों का भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों स्तरों पर विकास होता है।

इससे कान, आँख, नाक, जिह्वा एवं गले की व्याधियाँ भी दूर होती हैं। टांसिल, बहरापन, अस्पष्ट आवाज, मुँहासे आदि शिकायतें भी प्राणायाम से समाप्त हो जाती हैं। आसन की तरह प्राणायाम में भी रोगों को रोकने एवं उनका उपचार करने के दोनों तरह के गुण मौजूद हैं। यह शरीर में जीवनीशक्ति उत्पन्न करता है, जिससे बीमारियाँ नहीं होतीं। यदि कोई बीमारी हो जाती है तो विभिन्न प्राणायामों द्वारा उसका उपचार किया जा सकना संभव है।

यह यकृत एवं गुरदे के क्रियाकलापों को भी सुव्यवस्थित करता है, परिणामस्वरूप रक्त परिवहन सुचारू रूप से होने लगता है और ऑक्सीडेशन की क्रिया तेज हो जाती है। इसके अतिरिक्त यह भूख बढ़ाता और आँतों को व्यवस्थित करने का कार्य भी करता है। नाड़ी संस्थान भी इससे अप्रभावित नहीं रहता। यह स्नायु संस्थान को सुव्यवस्थित और मजबूत बनाता है।

यह प्राणायाम के कुछ सामान्य प्रभाव हुए। इसके विशेष प्रभावों के लिए विशेष प्रकार के प्राणायाम करने पड़ते हैं। यहाँ कुछ महत्त्वपूर्ण प्राणायाम दिए जा रहे हैं, जिन्हें अपनाकर कोई भी व्यक्ति लाभान्वित हो सकता है और स्वस्थता अर्जित कर सकता है।

सर्वप्रथम प्राणायाम कैसे किया जाए, यह

प्राणायाम के अभ्यास से सर्वप्रथम फेफड़ों को लाभ पहुँचता है। वे लचीले और मजबूत बनते हैं। इसमें शरीर में गरमी उत्पन्न होती है, जो स्वास्थ्य पर अच्छा प्रभाव डालती है। बड़ी मात्रा में ऑक्सीजन की प्राप्ति होती है। जितना अधिक ऑक्सीजन शरीर में पहुँचेगा, उतना ही अधिक कार्बन डाई ऑक्साइड शरीर से बाहर निकलेगा।

बताना आवश्यक है। यहाँ उसी का उल्लेख किया जा रहा है। पद्मासन, सिद्धासन या सुखासन में बैठ जाइए। कुछ क्षण तक शांति में बैठकर अपने को प्राणायाम के लिए तैयार कीजिए। अब दायें हाथ के अंगूठे से दायीं नासिका छिद्र को बंद कीजिए और बायीं से धीरे-धीरे श्वास खींचिए। श्वास प्रवाहपूर्ण हो, उसमें किसी प्रकार के झटके न हों। साँस तब तक लीजिए, जब तक फेफड़े वायु से पूर्णरूपेण भर न जाएँ। अब बायीं नासिका के छिद्र को मध्यमा और अनामिका से बंद कीजिए और दाहिनी नासिका छिद्र को खोलकर धीरे-धीरे श्वास छोड़िए। जैसे ही संपूर्ण वायु बाहर निकल जाय, तब उसी से अर्थात् दाहिनी नासिका छिद्र से पूरक कीजिए। बाद में उसे बंद कर बायें से श्वास छोड़िए। यह एक आवृत्ति हुई। इसी को 15-20 बार दुहराएँ। यह साधारण प्राणायाम हुआ। इससे फेफड़े मजबूत होते हैं और नासिका संबंधी रोग दूर हो जाते हैं।

इस साधारण प्राणायाम का भलीभाँति अभ्यास हो जाने के पश्चात विशेष प्राणायामों की बारी आती है। इसमें प्रथम–**(1) समवेत प्राणायाम।** साधारण प्राणायाम के पश्चात इसका अभ्यास करना चाहिए। इसकी संपूर्ण विधि साधारण प्राणायाम की तरह है, केवल पूरक इसमें दोनों नासाछिद्रों से धीरे-धीरे बिना किसी झटके या व्यवधान के प्रवाहपूर्ण तरीके से किया जाता है। अधिक-से-अधिक वायु फेफड़ों में भर जाने के उपरांत 1-3 सेकंड तक सांस रोकनी होती है, तदुपरांत दोनों नासा छिद्रों से धीरे-धीरे बिना झटके से सांस छोड़ते हैं। पुनः पहले की तरह प्रवाहपूर्ण पूरक और उसके बाद लयपूर्ण रेचक दोनों नासा छिद्रों से बारी-बारी से किया जाता है। इसे 10 से 15 बार दुहराया जाता है।

इस प्राणायाम में थोड़ा परिवर्तन कर दिया जाए और इसमें से अंत:कुंभक को हटा दिया जाए तो जो स्थिति बनेगी उसमें साँस लंबी, गहरी, धीरे-धीरे और प्रवाहपूर्ण होनी चाहिए। यह एक अद्भुत प्राणायाम है और उतना ही विलक्षण इसका परिणाम है। अनिद्रा के रोगियों के लिए यह एक रामबाण औषधि के समान है। इससे पुराने-से-पुराना अनिद्रा रोग दूर हो जाता है और व्यक्ति को गहरी नींद आने लगती है। 2 मिनट से आरंभ करके धीरे-धीरे इसे 20 मिनट तक बढ़ाया जा सकता है।

लगभग 15 दिन में इसका परिणाम आना शुरू हो जाता है। जिन्हें नींद आने की साधारण शिकायत है, वे भी इससे लाभ उठा सकते हैं।

(2) भ्रामरी प्राणायाम–इसका अभ्यास रात्रि के एकांत में तनिक विलंब से या प्रातः के प्रथम प्रहर में किया जाना चाहिए। मन को शांत कर आसन पर बैठिए। अँगुलियों से कानों को बंद कर लीजिए। तत्पश्चात धीरे-धीरे पूरक कीजिए। फेफड़े साँस से भर जाने के उपरांत एक क्षण के लिए श्वास को रोकिए। इसके बाद भ्रमर गुंजन के समान आवाज निकालते हुए श्वास धीरे-धीरे छोड़िए। यह गुंजन तब तक होता रहे, तब तक श्वास पूरी तरह निकल न जाए। इस स्थिति में मुँह बंद रहना चाहिए और इस बात का ध्यान रखा जाना चाहिए कि मुँह से साँस न निकले।

जिह्वा भी अविचल हो। ध्यान गुंजन की आवाज पर केंद्रित होना चाहिए। यह आवाज अविरल गति से हो एवं उसमें एकरूपता और अखंडता हो।

यह बहुत सरल प्राणायाम है। प्रथम दिन से ही अच्छी तरह इसका अभ्यास किया जा सकता है। इस प्राणायाम से गले की सब बीमारी धीरे-धीरे दूर हो जाती है। कंठनली मजबूत बनती है तथा आवाज सुरीली हो जाती है।

(3) उज्जयी प्राणायाम–आसन में बैठिए और आँखें बंद कर लीजिए। अब दोनों नथूनों से श्वांस लेते समय खर्राटे लेने की-सी आवाज गले में उत्पन्न कीजिए, इस बीच मुँह बंद रहे और श्वसन क्रिया केवल नाक से हो। श्वास पूरी तरह ले चुकने के बाद कुछ क्षण तक उसे भीतर रोकिए, पुनः पहले की तरह ध्वनि करते हुए रेचक कीजिए। ध्वनि प्रवाहपूर्ण और एक जैसी हो, इसका ध्यान रहे। इसकी 10 से 12 आवृत्तियाँ प्रतिदिन की जा सकती हैं।

यह प्राणायाम वैसे लोगों के लिए विशेष

लाभप्रद है, जिनके टॉन्सिल बढ़ जाते हैं, जुकाम जल्दी हो जाता है, जिन्हें इन्फ्लुएंजा एवं ब्रांकाइटिस की शिकायत हो जाती है। संगीतप्रेमियों के लिए भी यह लाभप्रद है। यदि वे इसका नियमित अभ्यास करें तो उनका गला स्वस्थ एवं सुमधुर हो जाता है। यह उच्च रक्तचाप के रोगियों के लिए भी लाभदायक है। इससे रक्तचाप सामान्य बना रहता है। इसका प्रभाव कान, नाक एवं गले की बीमारी पर भी पड़ता है। पेट के रोगों के लिए भी यह उपयोगी है।

(4) शीतली प्राणायाम–इसके अभ्यास के लिए आसन पर बैठिए। इसके बाद होंठों को कौवे की चोंच की तरह बनाकर जिह्वा को उसमें से थोड़ा बाहर निकाल उसकी नाली बना लीजिए। अब धीरे-धीरे मुँह से श्वास खींचिए। यथाशक्ति कुंभक करके दोनों नथुनों से वायु धीरे-धीरे बाहर निकालिए। रेचक करते समय जीभ को अंदर कर लीजिए। प्रतिदिन इसकी 8-10 आवृत्ति करनी चाहिए।

शीतली प्राणायाम में पूर्णता प्राप्ति के पश्चात व्यक्ति भूख-प्यास पर विजय प्राप्त कर सकता है। इससे जुकाम, अपच जैसी शिकायतें दूर हो जाती हैं। इससे शीतलता बढ़ती है। अतः इसे गर्मी के मौसम से प्रारम्भ करना चाहिए।

(5) भस्त्रिका प्राणायाम–आसन पर बैठिए एवं बायीं नासिका से वेगपूर्वक जल्दी-जल्दी दस बार लगातार पूरक-रेचक कीजिए। कुंभक की आवश्यकता नहीं। फिर ग्यारहवीं बार उसी नासिका से लंबा पूरक कीजिए, यथाशक्ति कुंभक करने के उपरांत दाहिने नथुने से धीरे-धीरे श्वांस बाहर निकालिए। इसी क्रिया को अब दाहिने नथुने से दुहराइए। यह भस्त्रिका प्राणायाम हुआ। आरंभ में इसे पाँच बार से अधिक नहीं करना चाहिए।

बाद में दोनों हाथों को घुटनों पर रखकर नासिका से एक साथ भस्त्रिका करनी चाहिए। इसे धीरे-धीरे बढायें।

साधारण स्वास्थ्य के व्यक्ति को इसका नियमित अभ्यास करना चाहिए। जिनके फेफड़े कमजोर हों या जो बीमार हैं, वैसे लोगों को इसे नहीं करना चाहिए। इस प्राणायाम से दमा तथा श्वसन संबंधी दोष दूर होता है, रक्त शुद्ध होता है एवं संपूर्ण शरीर में अधिक मात्रा में रक्त संचालन होता है।

इससे आत्मोत्थान में भी सहायता मिलती है। ब्रह्मग्रंथि, विष्णुग्रंथि, रुद्रग्रंथि तीनों का यह भेदन करता है। इसके द्वारा सुषुम्ना में से विहंगम गति ऊर्ध्व प्रदेश की ओर बढ़ती है। इसी से अग्नितत्त्व प्रदीप्त होता है। यह ध्यान एवं कुण्डलिनी जागरण में सहायक है।

(6) प्लाविनी प्राणायाम–आसन पर बैठिए एवं दोनों भुजाओं को ऊपर की ओर लंबी तथा सीधी रखिए। अब दोनों नथुनों से पूरक कीजिए ओर सीधा लेट जाइए। लेटते समय दोनों हाथों को समेटकर तकिये की तरह सिर के नीचे लगा लीजिए, कुंभक कीजिए और जब तक कुंभक रहे, तब तक भावना कीजिए–मेरी देह रुई के समान हलकी है। फिर बैठकर पूर्व स्थिति में आ जाइए और धीरे-धीरे दोनों नथुनों से वायु बाहर निकाल दीजिए। यह प्लाविनी प्राणायाम है, इससे पाचन क्रिया बढ़ती है। इसके अतिरिक्त 'हिस्टीरिया' रोग दूर करने में यह सहायता देता है। इससे आध्यात्मिक लाभ भी मिलता है और ऋद्धि-सिद्धियों का मार्ग प्रशस्त होता है।

(7) केवली प्राणायाम–आसन पर बैठिए। दोनों नथुनों से साँस धीरे-धीरे खींचिए। श्वास खींचते समय मानसिक रूप से 'सो' का उच्चारण कीजिए और छोड़ते समय 'हम' का। कुंभक की आवश्यकता नहीं है। इस प्रकार मानसिक रूप से 'सोऽहं' शब्द उच्चरित करिए। यह केवली प्राणायाम हुआ। इस प्राणायाम से मन को एकाग्रता की प्राप्ति होती है।

उपर्युक्त प्राणायामों में से कोई यदि अपनी आवश्यकतानुसार प्राणायाम का अभ्यास नियमित रूप से करता रहे तो वह अपना स्वास्थ्य-संरक्षण करने में सफल रहता है। हर एक को इनसे लाभ उठाना चाहिए।

सुखी जीवन का रहस्य

एक आदमी को जंगल में रात पड़ गयी और वह चादर ओढ़कर सो गया। जंगल में मच्छर बहुत थे और चादर इतनी थी कि पाँव फैलाने से सिर नंगा और सिर ढाँपने से पैर नंगे हो जाते थे। जब वह अपने एक अंग को ढाँपता था तो उसका दूसरा अंग नंगा हो जाता था। वह हाय-हाय कर रहा था। पास ही इत्तफाक से दूसरा मुसाफिर भी था। उसने पूछा-भाई, न सोते हो न सोने देते हो, आखिर क्या तकलीफ है? उसने कहा, मच्छर काट रहे हैं और चादर छोटी है। उसने हँसकर कहा, तो चादर को बढ़ा लो। तो उसने जवाब दिया कि क्या Elastic (फैलनेवाली) चादर है कि जिसे खींचकर बड़ी कर लूँ। उसने जब चादर को देखा को कहा कि यह तो बहुत बड़ी हो सकती है, अगर तुम चाहो। तो उसने जवाब दिया कि मैंने इस किस्म का जादू और चमत्कार नहीं सीखा है, अगर तुमको पता है तो तुम बढ़ा दो। उसने कहा कि 'अरे भाई, अगर चादर नहीं बढ़ सकती तो तुम तो सिकुड़ सकते हो। जरा-सा सिकुड़ जाओ, चादर बड़ी हो जायेगी। इसमें सिकुड़ने का जरा-सा कष्ट तो होगा, लेकिन मच्छरों के काटने के भयंकर कष्ट से तो बच जाओगे।' उसने ऐसा ही किया और उन्हीं मच्छरों में, उसी चादर में रात आराम से कट गयी।

इसी तरह संसार रूपी चादर किसी की इच्छाओं की फैलावट पर पूरी नहीं उतरती, कोई-न-कोई कमी रह ही जाती है और आखिर कहना ही पड़ता है कि 'हाल अच्छा है, अच्छा है, लेकिन बहुत अच्छा नहीं।' इसलिये इसमें आराम से रहने का तरीका यह है कि इच्छा के मुताबिक सामान न ढूँढ़ें, बल्कि सामान के मुताबिक इच्छा पैदा कर लें और संसार में इच्छाओं को सिकोड़ कर जीवन जीना सीख लें, फिर तो यह चादर पूरी हो जायेगी, वर्ना असम्भव है।

अब हम फिर अपने उस प्रश्न की तरफ आते हैं कि 'आपका क्या हाल है?' अच्छा है, अच्छा है, लेकिन बहुत अच्छा नहीं।' यह सारा संसार एक भ्रम ही तो है, इसमें सन्देह नहीं। हर शख्स (व्यक्ति) दूसरे की हालत को अच्छी समझता है और अपनी को खराब। इसलिये संसार में जिसने ब्रह्मतत्व और उसकी असलियत को नहीं समझा और जिसकी नजर संसार के चक्कर और उसके सौन्दर्य में फंसी हुई है, वह इस प्रश्न का उत्तर यही दे सकता है कि मेरा हाल अच्छा है, अच्छा है, लेकिन बहुत अच्छा नहीं।

Bhuvaneshwari Jayanti · 17.09.21

Any Full Moon Night

WEALTH UNLIMITED

Bhuvaneshwari SADHANA

The Sadhak who accomplishes this ritual becomes rich and powerful like Lord Indra! It is said in "Rig Veda" thatonly through the good Karmas of past lives and grace of the Guru can one obtain Bhuvaneshwari Sadhana.

When Lord Ram was being crowned his Guru Vashishtth said to him - *O Ram! In this world a poor man is treated with contempt even by relatives while a rich man is honoured even by strangers.*

He further stated- In the world of Sadhanas there is no more powerful Sadhana for becoming prosperous than that of Goddess Bhuvaneshwari.

Lord Ram did just that and his region was called Ram-rajya in which there was prosperity andjoy everywhere. Even Lord Krishna accomplished this Sadhana and was able to found the wonderful city of Dwarka which was full of riches and wealth.

Lord Shiva has said that even a person who has been fated to be poor can become rich through this wonderful Sadhana.

Bhuvaneshwarl is the Goddess who rules over the riches of the whole world and She is worshipped even by the gods and Yogis.

According to the great Yogi Gorakhnath following are the benefits of this Sadhana.

After this Sadhana has been done wealth starts to flow into one's life on its own. The person gains a magnetic personality and is easily can influence others, even his enemies.

He is ever protected from peril by the kind Goddess and he remains healthy and fit all through life. He also leads a happy family life and there never is any paucity in his life.

He gains respect and fame in the society and is honoured for his work. ***Bhuvaneshwari Sadhana*** is a Key to success in life no matter which field one has chosen.

The Sadhana must be tried on a Full Moon night Between 9 p.m. and midnight. Have a bath and wear yellow clothes. Sit facing North on a yellow seat.

Cover a wooden seat with a yellow cloth.

On a mound of rice grains place **Bhuvaneshwari Yantra**. On the Yantra place a **Bhuvantray rosary**. Offer vermilion, rice grains and rose petals on the Yantra.

Light ghee lamp and incense. On the right hand side of the Yantra place an **Aishwarya Gutika**.

Chant four round of Guru Mantra

Then chant 21 rounds of the following Mantra with a **Bhuvantray rosary**.

Om Hreem Shreem Kleem

Bhuvaneshwaryei Namah

After this chant one round of Gurnu Mantra. Do this Regularly for three days. Wear the Gutika in a thread around your neck. Drop the Yantra and rosary bundled, in a river or pond.

Offer food and gifts to a girl below ten years in age.

After eleven days drop the Gutika in the river too. This is really a very effective Sadhana that cannot fail even in the present age of Kaliyug.

Sadhana Article - 540/-

Krishana's Hypnotic Eyes !

Those beautiful lotus eyes of Krishna a look into their mesmerising depths for a mere second and the Gopi's were left entranced transported to an ethereal plane where nothing but pure divine joy vibrated in the air. And then the wonderful bouquet of Ashtgandh which kept pouring out of his body--more enchanting than the smell of any flower, it most joyously tingled the olfactory nerves of even the Gods and Apsaras, leaving them drifting blissfully in an ocean of sheer ectasy !

What was there in Sri Krishna's personality that so swayed the emotions of others? What made his renditions on the flute so divinely melodious?

For answers to these natural queries one would have to go back to thousands of years in the past when the Sages and Yogis in India for the first time struck upon the most wondrous of all human power--the Soul. Their experiments led them to perfect efficacious Sadhanas by virtue of which the infinite paranormal powers of the Supreme Conscience could be tapped.

And the basis of this science of Spiritualism became mind-control or **Sammohan** or **'hypnotism of the self'**, for the savants knew that till the thoughts are not concentrated, not controlled the fragrance of the divine cannot permeate into one's life. Once this stage is attained a unique aureate glow starts to shimmer around the physical body, leaving all other humans enthralled by the Enlightened One's presence.

That's how a Sadguru's magic works ! Some might feel that a Sadguru hypnotises his disciples, but nothing could be farther from the truth. A Supreme Master merely hypnotises his own mind and purging all thoughts leaves it pure and unsullied. Thus when all his energy gets concentrated, the brilliance of the soul starts to pour through.

Beauty, fragrance, music, laughter then fill his life. And his beauty does not remain confined rather it is infectious. It flows out by itself and mesmerises whoever comes within its range. A devotee delightfully gives in to this overpowering sensation while someone with deceit, hatred, jealousy as the basis of his or her life starts to protest and criticise the Enlightened One saying that he is forcefully trying to hypnotise others.

The moon or the rose never force their beauty and gragrance on others, rather its we who sense these and are attracted. It simply cannot be avoided.

Quite similar is the magic of the Guru. His eyes shine with love, his face glows with an ethereal radiance, his physique pours out an overwheliming scent and divine words flow out of his lips. He desires nothing wishes to influence none but such is his divinity that not just humans rather the whole nature is left trembling with delight.

One who has realised the self gains a mesmerishing personality like Krishna's. But for this the mind has to be overpowered. Sanyaas, Sammohan and Sanyam are not different but at the root lies the same contemplation i.e. to hypnotise one's own self and let flow the divinity of the soul. The following Krishana Tantra ritual is one unfailing way of developing such an alluring personality.

On the day of **Krishana Janmaashtami** (30.08.21) or on any eighth day of dark half of the lunar month this SAdhana can be accomplished. All you need is **Sammohan Yantra, Krishana Chakra and Sammohan Mala.**

Take a bath early in the morning and get into yellow robes. On a wooden plank spread a yellow cloth and on it shower some rose petals. In a steel plate place the Sammohan Yantra. Offer sandalwood paste, flowers, incense, ghee-lamp and unbroken rice grains to this Yantra.

Pray to Lord Gannpati

Kadamb Moole Gaayantam, Gopaalam Van-Kadamb-Kusumeirjusbtam Chintyitvaa Maalinam Janaardanam.

Place the Krishna Chakra near the Yantra and on it make nine marks with sandalwood paste each time chanting--

Om Kireetaay Namah **Om Kundalaay Namah**
Om Shankhaay Namah **Om Chakraay Namah**
Om Angadaay Namah **Om Padmaay Namah**
Om Ankushaay Namah **Om Dhanushaay Namah**
Om Sharaay Namah

Next chant 51 rounds of this Mantra with a Sammohan Mala.

Mantra

Om Hreem Krishnnasya Sammohan Siddhim
Ayeim Om Phat

After the Sadhana on the next **Ashtami** (eighth day of the lunar month) disperse all Sadhana articles in a river. Till then chant one round of the Mantra daily.

You shall yourself feel a surge of divinity in yourself. Whatever you shall do then success shall be yours to cherish for the people shall on their own come forward to help you and make things easy for you.

Sadhana Packet - Rs. 510/-

भुवनेश्वरी दीक्षा

भुवन अर्थात् इस संसार की स्वामिनी माँ भुवनेश्वरी जो 'ह्रीं' बीज मंत्र धारिणी हैं वे भुवनेश्वरी ब्रह्मा की भी अधिष्ठात्री देवी हैं। महाविद्याओं में प्रमुख देवी भुवनेश्वरी, ज्ञान और शक्ति दोनों की समन्वित देवी मानी जाती हैं, जो भुवनेश्वरी सिद्धि प्राप्त करता है, उस साधक का आज्ञा चक्र जाग्रत होकर ज्ञान शक्ति, चेतना शक्ति, स्मरण शक्ति अत्यन्त विकसित हो जाती है। भुवनेश्वरी को जगतधात्री अर्थात् जगत सुख प्रदान करने वाली कहा गया है। दरिद्रता नाश एवं कुबेर सिद्धि प्राप्ति के लिये भुवनेश्वरी साधना उत्तम मानी गई है। **इस महाविद्या की आराधना एवं दीक्षा प्राप्त करने वाले व्यक्ति की वाणी में सरस्वती का वास होता है एवं धन प्राप्ति के स्रोत स्वतः खुलने लगते हैं।**

योजना केवल 13, 14 एवं 15 अगस्त इन दिनों के लिए है

किन्हीं पांच व्यक्तियों को पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनाकर उनका सदस्यता शुल्क 2250/- ' नारायण मंत्र साधना विज्ञान', जोधपुर के बैंक के खाते में जमा करवा कर आप यह दीक्षा उपहार स्वरूप निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं। दीक्षा के लिए फोटो आप हमें संस्था के वाट्स अप नम्बर 8890543002 पर भेज दें। इसी वाट्स अप नम्बर पर पांचों सदस्यों के नाम एवं पते भी भेज दे। संस्था के बैंक खाते का विवरण पेज संख्या 2 पर देखें।

दिल्ली कार्यालय - सिद्धाश्रम 8, सन्देश विहार, एम.एम. पब्लिक स्कूल के पास, पीतमपुरा, नई दिल्ली-34
फोन नं. : 011-79675768, 011-79675769, 011-27354368

Printing Date : 15-16 July, 2021
Posting Date : 21-22 July, 2021
Posting office At Jodhpur RMS

RNI No. **RAJ/BIL/2010/34546**
Postal Regd. No. Jodhpur/327/2019-2021
Licensed to post without prepayment
License No. RJ/WR/WPP/14/2018-
Valid up to 31.12.2021

माह : अगस्त एवं सितम्बर में दीक्षा के लिए निर्धारित विशेष दिवस

पूज्य गुरुदेव श्री अरविन्द श्रीमाली जी निम्न दिवसों पर साधकों से मिलेंगे व दीक्षा प्रदान करेंगे। इच्छुक साधक निर्धारित दिवसों पर पहुंच कर दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

स्थान
गुरुधाम (जोधपुर)

13 अगस्त
10 सितम्बर

स्थान
सिद्धाश्रम (दिल्ली)

14-15 अगस्त
11-12 सितम्बर

प्रेषक —
नारायण-मंत्र-साधना विज्ञान
गुरुधाम
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)
पोस्ट बॉक्स नं. : 69
फोन नं. : 0291-2432209, 7960039,
0291-2432010, 2433623
वाट्सअप नम्बर : 8890543002